



ज्ञानवल्लभ पुष्पाक १७

सम्पादक पुष्पाक ५९

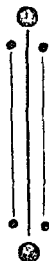


# ज्ञानवल्लभ स्तवनमाला



जिममे-

आप्त पुरुषों की प्राचीन कृतियों का संग्रह है  
समग्रकर्तृ - जिनश्रीजी साहिबा



सम्पादक-

चन्दनमल नागोरी  
छोटी मादडी (मेनाड)



ज्ञान वल्लभ पुष्पाङ्क

संपादक पुष्पाङ्क

॥ श्री गद्गुरु सुखमागर गुरुभ्योनमः ॥

ज्ञानवल्लभ स्तवन माला

जिममे—

प्राचीन स्तवन श्रादि का अमूल्य संग्रह है

प्रेरिका—

श्री प्रधानश्रीजी साहिना

सप्राहिना—

श्री जिनश्रीजी साहिना

द्रव्यदाता—

श्राविका संघ



सम्पादन—

चन्दनमल नागोरी

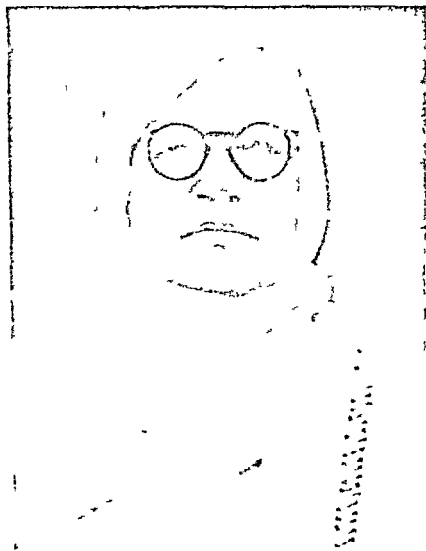
छोटी सादडी (मिनाड)

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य ढाई रुपया



परमपूज्या विदुषावया प्रवर्तिनी पद विभूषिना



२२ श्री गणेशाय नमः श्री लीला सा



समर्पण पत्र

(सा. क्र.)

श्रीमती परमपूज्या विद्वेषिण्यु पतिनी

महोदया श्री नल्लेम श्रीजी स्वामिष्ठ

आपकी छत्र श्रया में ज्ञान सम्पादन कर चाग्रि पालने का अभिप्राय प्राप्त हुआ। नामादि उभावियों को दोष नष्ट करने में लोगों में चरण मूल आप ही में, आप का साधन का प्रेम, ईदहित जिना का मोत भूला नहीं जाता। जिना समुदाय के श्रद्धासिद्ध ज्ञाननगण के अनेक व्यक्तियों पर आपकी चाग्रि वत्त का विशेष प्रभाव पडा। जिन्हे उपनत में स्वयं का पुस्तक प्रदायन सेवा में समर्पित है जो मार्ग में ही प्रीति का एक प्रमुक्तोत्तर साधनक।

शुभम्





## सम्पादक-निवेदन

ज्ञानवल्लभ स्तवनमाला में पूर्वाचार्यों द्वारा रचित स्तवनादिका सग्रह है, एक एक सग्रह से माला तैयार होती है। यह प्रकाशन परम पूज्या प्रवर्तिनी महोदया के पुण्य स्मरण निमित्त शिष्या समुदाय और भक्त श्राविना की ओर से हो रहा है। इस प्रकाशन की प्रेरिका श्री प्रधान श्रीजी साहिजा और द्रव्य उपदेशका भी आप ही है। स्तवन संग्राहिका व लेखिका परम पूज्या श्री जिन श्रीजी साहिवा है। वैसे आप अनुभवशील है और स्तवन सग्रह में आपने भक्तिरस का ध्यान रख विविध विषयो के नित्य पठन योग्य स्तवनो का सग्रह किया है।

प्रवर्तिनीजी महोदया के स्मारक निमित्त भक्तजनो ने चालीस हजार का फंड एकत्रित किया और अमलनेर में ज्ञानवल्लभ विहार (भवन) कराया। अग्नि सस्कार की जगह छत्री बनवाई गई, पादुका स्थापित की। परस्परगच्छ में साध्वी जी महाराज द्वारा विगेष उन्नति हुई। श्री प्रवर्तिनी जी साहिजा भी प्रभाविना में एक थीं जिसका वर्णन वल्लभ जी इन सोरभ में विगेष रूप से प्रकाशित हुआ है। आप व वर्तमान में साध्वी मडल प्रसिद्धि में आईं, वे सत्र परम पूज्या श्री शिव श्रीजी महाराज की समुदाय की हैं, आप भाग्यशाली, तप जप पठन पाठन में बहुत सावधान थीं और विहार में गावों में शहरों में धर्म प्रचार करने में श्रेष्ठ प्रयत्न कर शासन की शोभा बढाना कर्तव्य समझती थीं।

वैसे खरतरगच्छ में पृथक्काल में प्रभावक आचार्य हुए हैं । उनमें से एक समर्थ विद्वान प्रभावक आचार्य चालीसवें पाट पर श्री जिनेश्वर सूरिजी वादीवाद विजय में प्रभावक थे । आप विहार करने अणहिलपुर पट्टन में पधारे, यह संवत् १०५० का वर्सन है । उग समन महाराजा भीम राज्य करते थे । सूरिजी के उपदेश से नगर में धर्मकार्य विपुल संख्या में हुए और वादी से विजय पाए । अतः महाराजा भीम से आकर्षित हो खरतर विरुद्ध पद समर्पित किया, तद से ही खरतरगच्छ नाम से प्रसिद्धि पाए ।

गगनेभ्यो ज्योमचन्द्र (१०८०) क्षितविक्रम संवादि ॥

अलभन्त नृपादेतद् विरुद्धं श्री जिनेश्वराः ॥ १ ॥

इस प्रकार विरुद्ध प्राप्त करने से खरतरगच्छ प्रसिद्धि में आया  
लुप्तप्राय यथाचारे, साधूनां संप्रथार्य ते ।

संविभैः साधुभिः, सार्धं क्रियोद्धारं व्याधुः स्वयं ॥१॥

मुनि आचार लुप्तप्राय हो जाने से श्री जिनचंद्र सूरिजी ने कितने ही संवेनी साधुओं के साथ स्वयं ने भी क्रियोद्धार करके संवेनी-पन स्वीकार किया ।

और कई आचार्यों में एक श्री चंद्रसूरिजी महाराज बहुत प्रभावक हुए । जिस समय क्रिया उद्धार का कार्य तपराच्छ में जारी हुआ तब आपने साथ दिया और प्रेम पूर्ण मदद से आपने गच्छ के लिए नियमावली बनाई, जिसमें क्रिया नियम नियुक्त किये । तत पश्चात् जिनचंद्र समाचारी बना कर श्रमण वर्ग को सावधान क्रिया और क्रियाशील रहने की घोषणा की ।

आप बाणशाह के दरबार में भी बहुत मान पाए तथा परवाने भी प्राप्त किए और सामन की शोभा में वृद्ध की। आपका नाम आज भी चमत्ते मिनारों में है।

नम्र चरित्रिता रहता है। उस समय अरतखान्द में मुनि सरया आप हैं, और बाबू सग्य विशेष है। जिन में व्याख्याता प्रभाविका भी विशेष हैं, और विहार उपदेश में भी दत्तचित हैं। श्री प्रवर्तिनी जी महाराज ने भी विहार कर उपदेश देने में रुकी नहीं की। उमी उपकारों = विद्वान् रग्य भक्तजनोने स्मारक की योजना बनाई।

स्तरन भक्ति का मुख्य अंग है। इस विषय में आदर्शक सृष्टि नियुक्ति गाथा १०६७ में श्रीमद् हरिभद्र सूरिजी महाराज ने कहा है कि -  
भर्ताड जग्वराण गिजती पुत्र सचियाकम्मा।

श्री जिनेश्वरदेव की भक्ति करने से पूर्व सचित अनर भवों में किए हुए जमा का क्षय होता है।

भक्ति भावार्थ की जानकारी और यथा योग्य राग गान तान मान चहित हो तो विशेष लाभदायी होती है।

स्तरन सग्रह में ११५ स्तरन का सग्रह परमपूज्या जिन श्रीजी महाराज ने बहुत परिश्रम के साथ किया है। आप प्रवर्तिनी जी महोदय की प्रथम शिष्या हैं। निवेदन यह है कि मगुदाय में मघ सायगानी और क्रियाशीलता में स्वर्गीया की तरह शापन की शोभा पत्तये।

अन्यत्रम् २०२० दूसरा जाती मुन्नी १५

छोटी मादटी (मैराट)

## द्रव्य दाताओं की नामावली

रे	१. कुन्दमलजी चांपड़ा			वेनिया
ति	२. तेजमालजी लुंकड़	की धर्मपत्नी	जीवणी बाई	फत्तोदी
छ	३. राजमलजी लुंकड़	" "	कमुन्वी बाई	"
म	४. जुगराजजी पारक	" "	अनोपी बाई	"
वि	५. अमरचंदजी बोथरे	" "	सोभाग बाई	स्वीतंद
अ	६. शिवराजजी टाटिया	" "	पानी बाई	"
ना	७. बेवरचंदजी गुलेछा	" "	" "	फत्तोदी
	८. खेतमलजी कोठारी	" "	जेठी बाई	अमलने-
	९. पृथीराजजी वंगानी	" "	राधा बाई	धमतरी
	१०. अमरचंदजी	" "	" "	"
	११. जेटमलजी पारक	" "	" "	राजिम
	१२. बकतावर मलजी लुणावत	" "	सुगुनु बाई	कुसुमकमा
	१३. मनोरमलजी सींधी	" "	मगना बाई	"
	१४. भवरलालजी गुलेछा	" "	जतन बाई	रायपुर
कित	१५. पारसमलजी संकलेचा	" "	ववली बाई	वीशस्थानक तप निमित्त
पन	१६. भीकमचंदजी पारख	" "	अण्णी बाई	दुरुग
				मलकापुर
				वीशस्थानक तप निमित्त
हुए	१७. मान बाई जतन बाई दुगड			छिन्दवाड़ा
साथ	१८. गेनमलजी पारख	" "		मद्रास
बना	१९. गुलाब चंदजी लोढा	" "	कोयल बाई	सारंखेड़ा
बना	२०. वंशीलालजी वनवट	" "	पदम बाई	मलकापुर
बोप	२१. मोहनलालजी बुरड़	की. साना	जतन बाई	"
				वीशस्थानक तप निमित्त

## शुद्धाशुद्धि पत्र

पृ०	प०	अशुद्धि	शुद्धि
०	११	रचेरिघनेजी	रचे मेघनेजी
४	११	उपदिसेजा	उपदिसेजी
५	१३	पूठभामडल	पूठभामडल
६	८	वयु	वपु
८	१२	उहन्नासे	उल्लासे
८	१६	उहन्नास	उल्लास.
६	१७	घुण्या	थुण्या
१८	३	०	मननी वात
१८	१४	म्हेता	में अनता.
१८	६	आथो	आयो
२१	१०	भरत	भरत
२२	६	रोहितासा	रोहितासा
२३	३	हरितसे लीला	हरिसलीला
३२	१०	पापहुं	वापहुं
३३	१	माही हरी	माहरी
३४	८	अम	उस
३५	६	तिचद	जितचद
३६	३	दास	सदा
४०	१०	भाज	भोजन
४०	३	भार	आरा
४२	१०	सर्द महयोग	सर्द हचो ण
४४	३	जीव जीव	जाव जीव

पृ०	पं०	अशुद्धि	शुद्धि
५४	६	उह्लासोरे	उल्लासोरे
६४	६	मत्त	भक्त
६७	११	सारे भार्यो	भारे भार्यो
११३	३	मंझारी	मझारी
१२०	११	भक्तभणीए.	भक्तभणीए.
१२१	१	आपुत्र	आठ पुत्र.
१२४	१२	कहे राणी परे	कहे इण परी.
१२४	१५	भवसायरतयो	भवसायरतरो
१२६	३	रंग	रंगे
१२६	३	पकवान	पकवान
१५२	१	द्रे	देव
१५३	२	नेवला	नेउला
१५३	१०	जारे	जोर
१५५	१०	अढासे	अढीसे
१६५	१०	अभिरामी रे लोक	अभिरामीरे लोल
१७८	११	पठिमा	पड़िमा
१६३	६	पौषण	पौषध
१६४	१०	मातदियो	मातरो
१६५	११	पालडी	पालठी
१६५	१२	एकडी	एकटी
१६५	१३	लेउगणा	लेउठीगणा
१६५	१४	अंधकरे	उंधकरे
१६६	६	जग	जस.
१६७	६	०	अक्षर
१६७	७	चउपखी	चउपर्वी
१६६	५	परिसीरे	पोरसीरे.

पृ०	प०	अशुद्धि	शुद्ध
२०३	१५	सराये	सरापे
२०४	४	चवदम	चवदमी
२०२	०		देव विभक्त्या वीर थुवो १६ गद्या चार निधान
२३१	=	तिथि	थिति
२४२	१४	गाग्रोजी	गाखोजी
२४८	२	ठोप्या	ठोक्या
२५८	१	गधरिया	गदहिया
२५८	७	ढारुण	ढींकुण
२५८	=	कौतो	कौता
२७२	१६	दुष्टण	दूपण
२७३	=	वगरा वगरा भाई नाप	वगस २ मा नाप
२७३	६	सरदहिणा	सदहणा
२८२	११	०	रितु.
२८२	१६	कह	कहे
२८३	=	ऊचे	ऊंघे
२८३	६	प्रीत	नीत
२८५	६	पिड मे	पिड मं
२८५	१	दमे	दीसे
२८५	७	सत्तानर	सत्तोतर
२८५	=	दास	डोप
२८५	१५	राग	रोग
२८५	१५	गगरे	दगके
२८५	१६	मग	रग
२८५	५	पाटी रतन हीदा माटे	फोटी रतन फो.ी माटे
२८५	१३	लग	लगे



पृ०	पं०	अशुद्धि	दृश्य
२८७	१३	०	तिहां लगे
२८८	२	धन धन सु	धन धन तमु
२८८	२	०	तस
२८९	१	चीमासा	चोमासा
२८९	८	मेहुला	मेहुला
२८९	१०	०	जी.
२९०	३	०	जी.
२९१	२	०	जी.
२९२	१	पुस	पौप
२९५	१२	विगतीजी	विगुतीजी
३१३	१३	न फेरिये	फेरिये

## अनुक्रमणिका

क्रमांक	नाम स्तवन	विषय	कर्ता नामावली	पृष्ठ
१	जिन शासन मेहरो	समयसरण	ऊ धर्म वर्द्धन गणि	१
२	जम्बूद्वीप सोहामणो	एकम का	समयसुन्दर जी	७
३	एकमजीव भकेलो भायो	एकम का	डू गर सिंह	१०
४	महावीर जिणदा	द्वितीया का	वीर पू. आ सा सूरो	१२
५	सोमदरजीने वन्दना	" "	सूर सागर	१३
६	चादलिया सदेशो	" "	जिनहर्ष सूरि	१४
७	श्री सोमदिर साहिवा	" <sup>र</sup> "	ज्ञान विमलसूरी	१७
८	मारी विनतडी भवधारो	" "	भगरचद	२१
९	मनडु तेमारो मोकले	" "	उपा० उदय	२६
१०	श्री सोमदर साहिवा	" "	म क्षमाकल्याणक	२८
११	सफल ससार भवतार	" "	भक्तिनाभ जी	२९
१२	भादिदेव भरिहतजी	तृतीया का	जित्तचदजी उ	३३
१३	नटपभ जिनेश्वर दिनकर	" "	लालचद	३५
१४	सुणसुण शत्रु जय गिरि	" "	जिनभक्ति सूरी	३८
१५	सुण जिनवर शत्रु जय	" "	जिनहर्ष सूरी	३९
१६	भादि जिनवरजी	" "	जिनहरिसागर सूरी	४२
१७	भादिश्वर स्वामी	" "	" "	४३
१८	प्रभु हाजिर लडे	" "	" "	४५
१९	माता वामादे बोलावे	चतुर्थी का	सौभाग्य विजय	४६
२०	पारस तोरी निरखण दा	" "	वेशर मुनि	४८
२१	भविका श्रीजिनवित्र	" "	जितचन्द्र सूरी	४९
२२	जयकारो जिनराज	" "	जिनचन्द्र सूरी	५१
२३	प्रणमु श्रीगुरुपाप	पंचमी का	समय सुन्दर जी	५२
२४	प्रभुमवो प्रभुमेवो	" "	वविद्र सा सू	५६

क.	नाम रत्न	विषय	कर्ता नामावली	पृष्ठ
२५	वीरजिनेश्वर साहिव	पण्डि का	ऋषभदास	५८
२६	वीर कुमारनी वातडी	" "	वीरविजयजी	५९
२७	वीरजी सुणो एक विनती	" "	ज्ञानसागर	६१
२८	सेवाशांति जिनंद की	सप्तमी का	भवसागर	६३
२९	शांति जिनेश्वर साहिव	" "	जिनविजय	६५
३०	सुणोशांति जिणंदसोभागी	" "	उदयरत्न	६७
३१	सदगुरु चरण कमल	" "	वसनामुनि	६९
३२	नमनकरु महावीर	अष्टमी का	वीरपुत्र. झा. सू.	७३
३३	अमल कमलजिम	" "	जिनचंद्र	७५
३४	पंचतीर्थ प्रणामुसदा	" "	सौभाग्य बुद्धि	७६
३५	श्रीराजग्रही नयरी	" "	न्यायसागर जी	८१
३६	नेमीश्वर वंदिये	नौमी का	क्षमाकल्याणक	८३
३७	तोरण आया हे सखी	" "	जैतसागर जी	८६
३८	तोरणथी रथ फेरिया	" "	देवचंद्रजी	८७
३९	द्वारापुरी बनो नेम	" "	कीर्तिविजय	८९
४०	पास जिनेसर जग	दशमी का	रंगसमय जी	९१
४१	श्रीजिन वदन निवास	" "	क्षमाप्रमोद	९६
४२	प्रभुजी हो वणारसी	" "	रत्नमुनि	११०
४३	नवपद समरी मन शुद्धे	एकादशी का	कुशललाभ	११२
४४	समवसरण वैठा	" "	समयसुंदर	११९
४५	शासन देवत्त सामिनी	द्वादशीका	सारजिन	१२०
४६	लाज राखो प्रभु मारी	" "	उदय	१२७
४७	धरसो न दिल में	" "	चतुरविजय	१२८
४८	वीर सुणो मारी विनती	अमावस्या का	समयसुन्दर	१३०
४९	सिद्धाचल मंडन	पूर्णिमाका	जिनहर्ष	१३३
५०	श्री महावीर जिनेन्द्र को	सन्नाइस भवका	जिनहरि सूरि	१३५
५१	नमो रे नमो	छे मासी	जिनहरि सूरि	१५१

क्र	नाम स्तवन	विषय	कर्ता नामावली	पृष्ठ
५२	माता त्रिशला भुनात्रे	पालना	दीप विजय	१५५
५३	नदीसर बावन	नन्दीसर द्वीप	जैन चंद्र	१५६
५४	करनो करलो रे	" "	जिन हरि सूरि	१६१
५५	मनजा घरले नवपद	नवपद का	जिन कवि सूरि	१६३
५६	नुर मणि सम सहमत्र	" "	जिन लाभ सूरि	१६५
५७	शिव सुखके दातार	" "	वीर पु भा सूरि	१६७
५८	श्री सिद्धचक्र आराधो	" "	जिन चंद्र सूरि	१६८
५९	जिहां प्रणमु दिन प्रत्ये	" "	मान विजय	१६९
६०	घरलो निर्मल ध्यान	" "	जिन हरि सा सूरि	१७३
६१	नत्रपदनी ध्यान घरीजे	" "	कनक कीर्ति	१७५
६२	दीवाली दिन वीरजी रे	दिवाली का	पूर्वाचार्य	१७६
६३	मारग देशक मोक्षनो	" "	देवचंद्रजी	१७७
६४	श्री जिनवरजी ना गुण	" "	उदय रत्न	१७८
६५	सुखकर समवसरण म	अक्षय तिथि	जिन हरि. सा सू	१८०
६६	परमात्म गुणगावो	" "	" "	१८१
६७	ॐ अर्हपद प्यारा	" "	" "	१८३
६८	तुमे जोजो जोजो रे	अभिनन्दन	पद्म विजय	१८५
६९	मारोस्त सेलडी	अक्षय तृतीया	पूर्वाचार्य	१८६
७०	हितकारी प्रभुजी लेने	केवल ज्ञान	जि ह सा सू	१८७
७१	तीर्थंकर बंदो तारे	वीक्ष स्थानक	" "	१८८
७२	भा शुँ मुज्योछे प्रभु	गोतम विलाप	हेमेश सागर	१९०
७३	जेसनमेर नगर भलो	पौष का	समय सुंदर	१९३
७४	प्रणमु प्रयम जिनेसन	२८ तथि	धर्म उद्दर्शन गौण	२०१
७५	सिद्धारय नदन नमु	१० पक्षवाग	रामचंद्र गणि	२०६
७६	श्री महावीर जी धर्म प्र	उपधान	समय सुंदर	२१०
७७	जिनवर श्री वर्धमान	चन्द्रा पूर्व	सोभाय्य सूरि	२१४
७८	चोबीने श्रीतार्थपति	४५ भागम	रामरिद्धि गणि	२१६

क्र.	नाम स्तवन	विषय	कर्ता नामावली	पृष्ठ
७६	पद पंकज रे प्रणमी	इरियावही	लक्ष्मीवल्लभ	२२५
८०	सुमति जिगुंद सुमति	गुणस्थान	धर्मसिंह उ.	२२६
८१	पूर मनोरथ पास जी	दंडक	” ”	२३५
८२	वर्धमान जिनवर तरणा	मुहपत्ति	लक्ष्मीवल्लभ	२४१
८३	सिद्धारथ सुत वंदिये	समवाय	विनयविजय	२४३
८४	मेरा एक ध्यान है	२४ जिन	जिन क. सा सू.	२५१
८५	सकल सिद्धि दायक	पुन्य प्रकाश	विनयविजय	२५३
८६	हवे राणी पदमावती	पदमावती	समयसुन्दर जी	२६६
८७	वेकर जोड़ी विनवुंजी	आलोयणा	” ”	२७०
८८	ए धन शासन वीर	” ”	धर्मसिंह	२७४
८९	उत्तपत्ति जोय जीव	ग भोत्पत्ति	पू. चा.	२८०
९०	हे जी महदेवा जी	वारह भास का	जिनरिद्धिसार	२८८
९१	वाणी ब्रह्मावादिनी	” ”	प्रीतिविमल	२९५
९२	भरतादिक उद्धारज	बिब रथापन	उ० यशो विजयजी	३०३
९३	शत्रुंजय गढना वासी	सिद्धि गिरिका	उदयरत्न	३०४
९४	जीव जीवन प्रभु	सामान्य	दोपविजय	३०६
९५	त्रिशलाना जायारे	महावीर जी	बुद्धिसागरजी	३०७
९६	मारी नाड तमारै हाथ	” ”	कपूरविजय जी	३०८
९७	सांभलजो मुनि संयम	वेदनी कर्म का	वीरविजय जी	३०९
९८	आठम जिन वंदन	अष्टमी का	जि. क. सा. सूरि	३१०
९९	तीर्थ अष्टापद नित्य	अष्टापद	जिनेन्द्रसागर	३१२
१००	पर्व पञ्चसण आविया	पयुषण	हंसमुनि	३१३
१०१	समेत शिखर मुजने	शिखर जी	अजीतसागर सू.	३१४
१०२	श्री चितामणिपास जी	पार्श्व नाथ	उ. यशो विजयजी	३१६
१०३	सुविधि जिनेसर	सुविधिनाथ	बुद्धिसागरसूरि	३१७
१०४	सखी तोरण आयो कंथ	नेमीनाथजी	वीर विजयजी	३८१

श्री परमपूज्या सद्गुत श्री ज्ञान श्रीजी साहिवा



समुदाय की आप परम उपकारिणी हैं



## समवशरण का स्तवन

॥ दोहा ॥

श्रीजिन शामन सेहरो ।

जगगुरु पाम जिणंद ॥

प्रणमी जेहना पाय कमल ।

आवी चौमट इन्द्र ॥१॥

वीथंकर आवे तिहा ।

त्रिगडो करे तैयार ॥

- समकितकरणी साचवे ।

एह कहं अधिकार ॥२॥

करे प्रशसा समकित्ती ।

मिथ्याची होवे मूक ॥

सूर्य देखी हरखे सहु ।

घणे अधारं घूरु ॥३॥



॥ टाल १ ॥

(रागः-वीर वखाणी राणी चेलण)

आप अरिहंत भले आवीयाजी ।

गावे अपछर गंधर्व ।

समवसरण रचे सुरव राजी ।

संक्षेपेते कहुं सर्व ॥आप ॥१॥

भुवनपति वीस इन्द्र मिन्याजी,

सोल व्यंतरसार ।

जोइस दुदश वेमाणिय जुड्याजी,

चौसठ इन्द्र सुविचार ॥२॥

पवनसुर पुँज परमारजेजी,

भूमि योजन समगाउ ।

मेघकुमर रचेरिघनेजी ।

करीय सुगंध छिडकाव ॥३॥

अगर कपूर सुभधूपणाजी,

करेय श्री अग्निकुमार ।

वाणव्यंतर हिवे वैगसुंजी ।

रचे मणिपीठीका सार ॥४॥

पुष्पपंचदश उरधमुखेजी,

वरषे जानु परिमाण ।

भरणवई देव त्रिगडो भलोजी,  
रुयते सुणउ सुजाण ॥५॥

रचयगढ प्रथमरुपातणोजी,  
मोवन कागरे मार ।

रविशशीरयण कोसीसकोजी,  
कनकनो वीयप्राकार ॥६॥

रतनगढ रतनने कागरेजी,  
रचय वेमाणिय सुरराज ।

भलो वीजोगट मीतरेजी,  
जीहां पिराजे जिनराज ॥७॥

मीत ऊची धणु पाचसेजी,  
मनानेमीम विस्तार ।

धनुप संतेरगट आतगेजी,  
पाल पचाम धणु चार ॥८॥

दशपंचपच त्रिहुं गटतणीजी,  
पावडी वीज हजार ।

याक श्रमनहीय चटतां थकाजी,  
रुकर उच विस्तार ॥९॥

पच धनुमदन पृथगी थकीजी,  
उग रहे वीगट आमाग ।

तेह तल सहु यथा स्थित वसेजी,  
नगर आराम आवास ॥१०॥

तोरण चिहुं चिहुं दिस तिहांजी,  
नीलमणि मौर निरमाण ।

दुसय घणु मध्यमणि पीठीकाजी,  
उच्च जिणदेह परिमाण ॥११॥

च्यार आसण तिहां चिहुं दिसेजी,  
मोतीयें भाक भूमाल ।

सम त्रिच कूण ईसांण में जी,  
देवछंदो सुत्रिसाल ॥१२॥

देवदुंदुभी नाद उपदिसेजा,  
जिनगुण गावसी तेह ।

अह्म जिम आई शिर उपरेजी,  
गाजसी तेह गुणगेह ॥१३॥

—❀—  
॥ ढाल २ ॥

सफल संसार की (राग)

पुत्रदिशि आसने आई वेसेपह ।

सुरकृत चौमुखरूप देखे सहु ।

दीपें अशोकतरु वारगुण देहथी ।

देखी हरखे सहु मौर जिम मेहथी ॥१॥

मोतीया जालो त्रिण छत्र सुविमाल ए ।

रूप चिहं २ दिशें चामर दाल ए ।

योजनगामिनी चाणी श्री जिनतणी ।

भगवंत उपदिशेश्वर परपदभणी ॥२॥

प्रदक्षिणा रूपथी अग्नि कुणै करी ।

गणधर साधरी तिम वेमाणीय सुरी ।

ज्योतिषी भुवननी व्यंतरी स्त्रीपखें ।

नचतकृण जिनवाणी ऊभीसुणै ।

त्रिद्वैतगा पति वायव कृणमे जाण ए ।

सुरवेमाणीय नग्नारी ईशाण ए ।

वारह परपदा मदमछर छोट ए ।

भृगुत्रिप चीमरे गुणेंकर जोट ए ॥३॥

पूढभामडल तेज प्रकाशाए ।

लौयगमहम धज ऊंच आकाशाए ।

भलहले तेज धर्मचक्र गगने मही ।

महक महु नागणें धूपवाणा मही ॥४॥

धादग रतीन महु धरीय पहिले गढे ।

गौडें पगचारी नग्नारी ऊचा चढे ।

जिनतणी चाणी गुणी जीवतियंचण ।

परतही पीपगद गढे गुण मच ए ॥५॥

पुण्यवंत पुरुष ते परषद वार में ।

सुणे जिन वाणी धनगणय अवतार ए ।

चौविह देव जिन देव सेवा रचे ।

मणिमयी मांहीली प्रोल मांही वसे ॥६॥

चिहुं दिशि वाटली वावी चौ जाणीयें ।

विदिशि चौकूण दोई दोई वखाणीयें ।

आठ जिहां वावी जल अमृत जेमए ।

स्नानपाने वयु निरमल हेमए ॥७॥

जय विजय जयंत अपराजिया ।

मध्य कंचनगढे प्रोल वसंतिया ।

तुंबुरु पुरुष खडंग अर्चि मालए ।

रजतगढ प्रोलना एह रखवालए ॥८॥

पहिल त्रिगडो न हुवे जिणपुरग्रामए ।

देव महर्दिक रचे तिणठाम ए ।

करण वार वार नहीं कारण कोईये ।

आठ प्रति हारज ते सही होइए ॥९॥

जिण समवसरणी ऋद्धि दीठी जीये ।

नेह धनधन्य अवतार पायो तिये ॥

पास अरदास सुणी वंछित पूरजो ।

दिवसुभक्ताहरो शुद्ध दर्शन हुजो ॥१०॥

(कलश)

इम समवसरणें ऋद्धि वरणे सहु जिनवर सारखी ।  
सरदहै ते लहै शुद्ध समकृत परम जिन धर्मपारखी॥

प्रकरण सिद्धान्त गुरु परंपर मुणीसहु अधिकारण ।  
सस्तव्यो पास जिखंद पाठक धर्मवद्ध नधारण ॥२॥

-सम्पूर्ण

एकम का स्तवन

(राग सीमदर, करजो माया)

जम्बूद्वीप सोहामणो, दक्षिण भरत मजार ।

राजगृही नगरी भली, अलकापुरी अवतार ॥१॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी ममरता सुख थाय ।

मननाछित सुखपामीये, दोहग दूरपुलाय, श्रीमुनि ॥२॥

राजकरे तिहाराजियो, सुमित्र नरेसर नाम ।

पटराणी पदमावती, शीलगुणे अमीराम ॥श्री॥३॥

श्रावण उज्वलपुनमे, श्रीजिनवर हरिवंश ।

माता कुचिमगेवरे, अवतरिया रायहस ॥श्री॥४॥

जेठपढमपच अष्टमी, जनम्या श्री जिनराय ।

जन्ममदोत्सव सुरकरे, त्रिशुवन हरख न माय ॥श्री ॥५॥

सामलवरण सोहामणो, निरुपम रूपनिवान ।

जिनवरलंछन काछयो, गीण धनुष तनुमान ॥श्री॥६॥

परण्या नारी प्रभावती, भोगपुरंदर साम ।

राजलीला सुखभोगवे, पूरे वाञ्छितकाम ॥श्री॥७॥

तव लोकांतिकदेवता, आधीजंपे जयकार ।

प्रभु फागुणसुदी वारसे, लिधो संयम भार ॥८॥

शुभ फागुणवदी वारसे, मन धरी निर्मलध्यान ।

चारकर्म चक्र चूरीया, पाण्या केवल ज्ञान ॥९॥१॥६॥

(टाल २)

(राग) सुखकारण भवियण

ततखिण तिहां मिलिया, चलिया कुरनर कोड़ी ।

प्रभुनापद पंकज, प्रणमें वेकर जोड़ी ।

वेकरजोड़ी मच्छर छोड़ी समवसरण विरचंत,

माणक हेम रुप्यमय त्रिगडो, छत्रत्रय भलकंत ।

सिंहासन बैठातिहां स्वामी, चौविह धर्म प्रकाशे,

वारे परषदा बैठी आगल, सुणे मन उहनासे ॥१॥

तपने अधिकारे पखवासो तपधार ।

पडवाथी कीजे, पनरह तिथि उदार ॥

पनरह तिथि कीजे, गुरुमुख लीजे जिसदिन होय उपवास,

श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनो जापजपीजे, वंदे देव उहनास ।

तपउजमणो रजतपालणो, सोवन पुतली चग ।  
 मोदक थाल देहरे म्फ्रीजे, जिनवर स्नात्र सुरग ॥२॥  
 तपकरीये निरतर, अहुग्ग दर्गन जेम ।  
 मनयाच्छित केरा, सुख पामीजे तेम ॥  
 सुखमपदा पामीजे लीला लीजे, राजकृद्वि विस्तार ।  
 पुत्र मित्र परिवार परंपर, अति बल्लभ भरतार ॥  
 जस कीर्ति सौभाग्यडाई, महियल महिमा जाण ।  
 परमवमुक्ति तणाफल लहिये, ए तपने परमाण ॥३॥  
 थिग थापीरे चतुर्विज सघतणो अधिकार ।  
 भरुवछ प्रमुख नगरादिक क्रियो विहार ॥  
 विहार करी प्रतिबोध्या सधक, पचसया, परिवार ।  
 कार्तिक सेठ जित शत्रुराजा, सुव्रत नामकुमार ॥  
 तीम महम वरप आऊखो पाली, पाली जग दयामार ।  
 श्री मम्मेत शिखर परमेश्वर, केरा पहुंता मुक्तिमभार ॥४॥  
 इम पचफल्याणक, धुएया त्रिभुवनताय ।  
 श्रीमृनिमुव्रतस्वामि, वीशमा जिनवरराय ॥  
 वीशमा जिनवरराय जगतगुरु, भयभजन भगवत ।  
 निगकार निरजन निरुपम, अजर-अमर अरिहत ॥  
 श्रीजिनचंद्र विनेय शिरोमणि, सकल चद गणि शिष्य ।  
 वाचक ममय, सु टर इम पमणे, पूरो मन जगीमा ॥५॥इति॥



## ॥ २ एकमका स्तवन पखवासे का ॥

एकम जीव एकेलो आयो फिर एकेलो जासी ।

प्रभुभजन की करलो खर्ची, आगे ही सुखपासी ।

चतुरनर ज्ञानविचारो, चतुरनर ? अर्थविचारो ।

अब वीतो पखवाड़ो ॥ चतु. ॥ ॥ टेर ॥

बीजतणा दोय जन्म मरण का, दोनों दुःख छे पूरा ।

दानशीयल तप भाव करीने, मुक्ति पहुंचता शूरा ॥२॥

तीजतणा तीनों ही गुप्ति, मन वच काया धारो ।

पांच सुमति सेंठी कर राखो, ज्यां शिवपुर अवधारो ॥३॥

चोथ चोकड़ी लारेलागी, क्रोध-मान-मद-माया ।

इससे जीत्या उत्तम प्राणी, अविचल पदवी पाया ॥४॥

पांचम पांचों ही इंद्रिवश कर राखो, विषय स्वाद निवारो ।

शुभध्यान हृदय में धरतां, भव-भवमें निस्तारो ॥५॥

छठतणी छ लेश्या जाणो, पद्म शुक्ल छे भारी ।

ए ध्यावे कोई पुण्यवंत प्राणी, तिरिया बहु नरनारी ॥६॥

सातम सातों ही समुद्र धातुछे, तिणरा भेद पीछाणो ।

चेत सके तो चेतरे प्राणी ? आय मिल्यो छे टांणो ॥७॥

आठम आठोंही कर्म सबल है, कोईक उत्तम जीत्या ।

कर्मों रे वश कदेई न पड़ीया, सदा रह्या निःचिंत्या ॥८॥

नम तणा नव तत्तो भारी, नव पद नवकर वाली ।  
 दर्शन-ज्ञान-चाग्नि तप करी ने, भव-भव फेरा टाली ॥९॥  
 दशम दशौंही प्राणतणासुख, त्यागे सो वैरागी ।  
 निद्रा-पिकथा दर निवारो, प्रभुजी से लय लागी ॥१०॥  
 इग्यारस इग्यारे पडीमा, उत्तम श्रावक धारे ।  
 देहीज पर मोह न राखे, परभव पार उतारे ॥११॥  
 बारस बारह त्रत विचारी, पडिकमणो सुद्ध कीजे ।  
 मुद्ध मन सामाटक करने, दान मुपात्रे दीजे ॥१२॥  
 तेरमरे दिन तेरे काठिया, लारे लागी आवे ।  
 ज्ञानी होय सो नहीं टगावे, गाफिल गोंता खावे ॥१३॥  
 चवदश है गुण टाणा चवडे, उपरला छे भारी ।  
 इन्द्रिय तणा जे स्वाड चाखे, नीची ममता धारी ॥१४॥  
 पूनम पनरे कर्मादान सु, अलगा रहेजो भाई ।  
 पनरे जोग मना कर राखो, ज्यामुवरें ला रुमाई ॥१५॥  
 थो मंमार हूँ हाटको मेलो, ज्या थामी, त्या जामी ।  
 चेत मके तो चेत रे प्राणी, त्यागे ही मुख पामी ॥१६॥  
 जैन धर्म हृदय में धरनां, गंका मूल मत थागो ।  
 इंगरमी कहे कर जोटीने, भव-भव फेरा टालो ॥१७॥

## ॥ बीज का स्तवन ॥

रागः—गोपीचन्द लडका

महावीर जिनंदा नमन करूँ रे सच्चे भाव से (टेर)  
 बीज दीवस सुन्दर जिनराया, श्रीमुख से फरमावे ।  
 जे नर सुधमन से आराधे, परमानंद पद पावे जी ॥महा१॥  
 बीज दिने उत्तम कल्याणक, पंच हुवे श्रीकार ।  
 वद्धमान शासन जिनराया, बोलें आनन्दकार जी ॥२॥  
 सुमतिनाथ अरनाथ केरे, च्यवन कल्याणक जाण ।  
 वासुपूज्य शीतल जिनंदरे, पाये केवल ज्ञान जी ॥ ३ ॥  
 शीतल मुक्ति पद को पायो, बीज दिवस सुखकार ।  
 अतित अनागत गिनते भविजन, फल अनंत अपार जी ॥४॥  
 वीर प्रभु ने धर्म दिखाया, श्रावक और अनगार ।  
 धर्मशुक्ल दोयध्यान निरंतर, ध्यावो जयजयकार जी ॥५॥  
 बीज दिवस के चंद्रोदय के, दर्शन करे संसार ।  
 चडतीकला दिन-दिन वधेभवि, बीजदिवस जगसारजी ॥६॥  
 दो महीने लघु से आराधो, जाव जीव उत्कृष्ट ।  
 दोय वर्ष दोय मास से, बीज करो शुभ दृष्टी जी ॥७॥  
 बीज पर्व के तप करने से, नष्ट होय दोय बंध ।  
 राग द्वेष शत्रु हटेरे, मिट जावे भवफंद जी ॥ ८ ॥

चाँपिहार उपवास करीने, आराधे शुभ पर्व ।  
 मनसाँछित मयही फले भवि, पावे सुख निधि सर्व जी ॥६॥  
 घन शामन जिन राजकारे, जगजीवन आधार ।  
 चर्द्धमान जिनराय को जी, बंदुं वाग्धार जी ॥१०॥  
 सुखमागर भगवान हो, त्रैलोक्यनाथ हितकार ।  
 आनंद रत्नाकर कहेजी, बीज दिव्यम मनुहारजी ॥११॥

॥ सीमंधरजी का. ॥

सीमंधरजी ने बटना, नित होय वो हमारी जी ।  
 मनसच पाया शुद्धि थी, मेरा चाँहूँ तुम्हारी जी ( टेर )  
 इध तो आगे पचमो, तिहा चौथो आगे जी ।  
 आप तो गुग्गुडा भोगयो, अमने कान मभाले जी ॥ १ ॥  
 आप तयो रिटेह सेप्र मे, हुं तो भग्ने बेटो जी ।  
 मन जी तो इच्छा लहयी, जाप प्रभुजी ने भेटुं जी ॥ २ ॥  
 जरा विद्या चारगी, फोई लब्धि न रीमेजी ।  
 उय प्रभु पट भेटया, मुग्ग मनदो उनायो जी ॥ ३ ॥  
 आटा इ गर लक्षिपणा, रीन नदियां गांगी जी ।  
 रिम पर आडुं गादिषा, मुग्ग एग पनेंन जी ॥ ४ ॥

दूजतणा तुं चांदला, दीजे साख हमारी जी ।  
 जाय पहुंचाडे वंदना, कहो नाथ संभाले जी ॥ ५ ॥  
 श्री श्रेयांसकुल चंदलो, माता सत्य की राणी जी ।  
 रुखमणी राणी नो वालहो, लछी नवल नगीनो जी ॥ ६ ॥  
 सोवन वर्ण शरीर छे, धनु पांचसे प्रमाणो जी ।  
 चौरासीलाख पूर्वनो, आउखुं गुण-ज्ञान विसालोजी ॥ ७ ॥  
 चौतिस अतिशय शोभता, वाणी गुण पैतीसे जी ।  
 प्रभुजी ने संभारतां, मुक्त मनडुँ हींसे जी ॥ ८ ॥  
 सुपना माहें प्रभुजी मिल्या, मुक्त भयो आनंदो जी ।  
 सुर सागर मुनि इम कहै, साधु भरते आनंदो जी ॥ ९ ॥

❀ श्री सोमंधर जिनस्तवन ❀

चांदलिया संदेशो जिनवर ने कहे रे,

इतरो ओ काम करे अविसार रे ।

बारे पर्षदां जिनवर ओलगेरे,

श्री सोमंधर-जग आधार रे ॥ ८ ॥

सोवन वर्ण शरीर सोहामणो रे,

मोहन मूर्ति महिमावंत रे ।

जग में सुयश धणो सहु को जपे रे,

भेटीस ते दिन धन्य भगवंत रे ॥ ९ ॥

साहिब दुःख अनंता मैं सह्या रे,  
हूँ ममीयो गमियो छूँ भय आल ।

शरणे राखीजो निज सेवका रे,  
तो बिना कोई न दीनदयाल रे ॥२॥

इतरा दिवस लग भूलो थको रं,  
सेव्या तो होसी सुर केई करे ।

ते अपराध खमीजो माहरा रे,  
मोटा तो बचे मृन अनेक रे ॥३॥

हिचे एक तारी कीधी एहवी रे,  
तो बिना अजर नमना खूम रे ।

मुरतरु फल छोडीने तुच्छना रे,  
खावानी केम आवे हुंन रे ॥४॥

इगरो तो नेह घणो ही जालयो रे,  
जावे आवेने करवा प्रीत रे ।

सम त्रिपमी पग न गगे वाटडी रे,  
नरला म्नेही नरली गीत रे ॥५॥

मनहो वनल मुक्त ननु आलभी रे,  
कर्म कठिन गवली अन्तरापरं ।

पाप शिवा फेईमर पाछना रे,  
मन गेलुं शिम मेनो भाय रे ॥६॥

वालेसर ! सांभल मुक्त विनति रे,  
मारे तो तुं हीज सज्जन सेण रे ।

हिवड़ा भीतर तूं सज्जन वसे रे,  
ध्यान धरूं समरूं दिन रेण रे ॥७॥

कोई कहे छे मन तन माहरो रे,  
कोई कहे छे जीवन प्राण रे ।

मारे तो तुम्ह विन कोई नहीं रे,  
जिन भावधरी इम जाण रे ॥८॥

नयने निरखीस मूर्ति ताहरी रे,  
ते दिन सफल गणोस महाराज रे ।

सनमुख करशुं प्रभुमुख वातड़ी रे,  
छोडी पर निज मन नी लाज रे ॥९॥

देवों न दीधी मुक्तने पाखंडी रे,  
उडी मिलूं जिनजी तुम्ह आय रे ।

मनरा मनोरथ मन में रखा रे,  
किण आगल कहूं चित्त लाय रे ॥१०॥

तारे तो मुक्त पाखे सही रे,  
पर म्हारे तो तुम्ह विन नहीं सरंत रे ।

जलधर सारो मोरा साहिवा रे,  
मेह विना मोर किम रहंत रे ॥११॥

चादो गगन सरवर प्राहुणो रे,  
दूर थकी पण करे विकाश रे ।

जेह जीवों रे मनमा वशे रे,  
तेह सदा ही तेहने पासरे ॥चा-१२॥

दूर थकी मानीजो वंदनारे,  
म्हागी प्रह उगमते सूररे ।

महिर करीजो सेमक उपरेरे,  
मुझ ने राखीजो राज हजर रे ॥चा-१३॥

केटं प्रपच साहिव शुं कहंरे,  
कहता न आवे मनमे काणरे ।

श्री सीमंधर तूं जाणे मही रे,  
श्रीमोहमगणिजिन हर्ष मुजाणरे ॥चा-१४॥

॥ श्री सीमंधर स्तवन ॥

श्री सीमंधर साहिया  
साहिन तुम प्रभु देवावि देव,  
ननुमुग्य जोवोने म्हाग साहिना ।

साहिव मन शुद्ध करू थारी सेव,

एक जाग मिलो नी म्हाग साहिया ॥१॥



साहिब सुख दुःख नी बातों,  
म्हारे अतिघणी साहिब ।

किण आगल कहं नाथ  
केवल ज्ञानी प्रभु जो मिले—  
साहिब तो थाऊं हूं रे सनाथ ॥२॥

साहिब भरत क्षेत्रमां हूं अवतर्यो,  
साहिब ओछूं छे एटलुं पुण्य ।

ज्ञानी नो विरह पड़यो आकरो,  
साहिब ज्ञान रहयो अति न्यून ॥३॥

साहिब दश दृष्टांते अति दोहिलो,  
साहिब उत्तम कुल सोभाग ।

पाम्यो पण हारी गयो,  
साहिब रतन उड़ायो काग ॥४॥

साहिब षट्तरस भोजन म्हेंता किया,  
साहिब तृप्ती न पाम्यो लगार ।

हूं रे अज्ञानी अनादि नो,  
साहिब भूलों नी भूल गमाय ॥५॥

साहिब मोहथी मुझने बेरीयो,

साहिब रागथी क्रियो मुझने अथ ।

क्रोध थी काई जाएयो नहीं,

साहिब एले गमायो जन्म ॥६॥

साहिब धन मेलाना धसमस्यो,

साहिब तृष्णा रो नहीं आयो पार ।

लोभ थी लटपट बहु कर्या,

साहिब नहीं जाएयो पुण्य ने पाप ॥७॥

साहिब सज्जन कुटुम्ब धन मेलव्यो,

साहिब तिख दुःख दुखियो थाय ।

जीव अकेलो कर्म जुग जुग,

साहिब दुःखडो ए महीयोरे न जाय ॥८॥

साहिब जमीन उपर शुभ अशुभ वसे,

साहिब तुमे करी रति प्रकाश ।

हूं रे अजानी मनादि नो,

साहिब आपोनी समकित वास ॥९॥

साहिब हूं वसुं भरत ने छेडले,

साहिब तुमे वसो महा विदेह मभार ।

दूर थकी करूं वंदना,  
साहिब मानीजो जग गुरु तात ॥१०॥

साहिब मेह वरसे जेम वाड़ में,  
साहिब वरसे छे ठामो जी ठाम ।

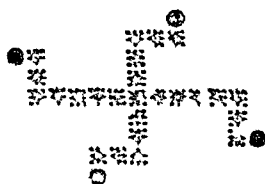
शुभ अशुभ नहीं लेखवे,  
साहिब एरे मोटों नो स्वभाव ॥११॥

साहिब तुम पासे देव घणा वसे,  
साहिब एक मोकलो मारी पास ।

मुख नो संदेशो म्हारो सांभले,  
साहिब सहज सरे मोरा काज ॥१२॥

साहिब हूं तुमरे पगनी मौजड़ी,  
साहिब हूं तुम चरणो नो दास ।

ज्ञान विमल सूरि इम भणो,  
साहिब राखो ने तुमारे पास ॥१३॥



॥ श्री सीमंधर जी का बड़ा स्तवन ॥

मारी विननडी श्रवधारो साहिब । सीमधर महाराज (देर)

त्रिभुवन माहिन अर्ज सुणीजो,

दर्शन दीजो आज ।

दर्शन दीजो महिर करीजो,

अरज सुणीजो राज ॥मारी. ॥१॥

आप रम्या महापिदेह खेतरमों,

हैं दृग भरत मभार ।

ओ मेलो किम होवे माहिव,

एहीज सगल विचार ॥मा. ॥२॥

भरन पिचाले परवत आडो,

नामे रैताडय सार ।

पचीम जोजन को ऊचो छे प्रभु,

पचाम जोजन विस्तार ॥मा. ॥३॥

गंगा मित्रु दोनू नदियाँ,

आदी ये किरतार ।

सदम अटावीन बीजी नदिया,

ए बेहू नो परिहार ॥मा. ॥४॥

इण आगल छे परवत आडो,  
चुल्ल हिमवंत नाम ।

एक सहस वली बावन जोजन,  
चार कला अभिराम ॥मा. ॥५॥

खेतर हेमवंत वली आडो,  
जुगल्यां केरो वास ।

इकवीश सो वलि पांच जोजन,  
पांच कला सुविलास ॥मा. ॥६॥

रोहिता ने रोहितासा नामे,  
नदियों छे असराल ।

छपन्न सहस वलि बीजी नदियों,  
आऊं केम दयाल ॥मा. ॥७॥

महा हिमवंत परवत आडो,  
मोटो अति विस्तार ।

चार सहस दोय सो दश जोजन,  
दश कला मनुहार ॥मा. ॥८॥

आठ सहस शत च्यार अनोपम,  
इकवीश जोजन तास ।

एक कला बलि रूप अनोपम,  
खेतर छे हरी दास ॥मा. ॥६॥

हरी कताने हरित से लीला,  
नदिया छे परतत्त ।

बीजी नदियां आडी छे प्रभु,  
सहस बार एक लाख ॥मा. ॥१०॥

परवत निपथ छे बलि आडो,  
जोजन बलि विस्तार ।

सोल सहस शत आठ बयांलीस,  
दोय कला मनुहार ॥मा. ॥११॥

खेतर छे बलि जुगल्यो केरो,  
देवकुरु इण नाम ।

ते पण जोयण बहु विस्तारे,  
पोजो छे सुणो स्वाम ॥मा. ॥१२॥

मीता नामे नदी बडेरी,  
मय नदियो मिरदार ।

पाच लाख बलि बीजी नदिया,  
अने नत्तीम हजार ॥मा. ॥१३॥

लाख जोजन को मेरु परबत,  
नामे सुदर्शन सार ।

गजदंता वलि च्यार वीचमें,  
आऊं ! केम कृपाल ! ॥मा. ॥१४॥

वनगिरि ने परबत बहुला,  
नदियां ओघट घाट ।

किण विध आऊं सुगुणा साहिब,  
मारग विषमी वाट ॥मा. ॥१५॥

कंचन गिरि बखारा परबत,  
गजदंता गिरि राय ।

भद्र शाल वन मारग वीचमें,  
लागे केम उपाय ॥मा. ॥१६॥

बधां मुक्त देश छे भरत खेतर,  
बधां पुखलावती जिनराज ।

ओ मेलो किम होसी साहिब,  
तारण तरण जिहाज ॥मा. ॥१७॥

निशदिन मारे तूं हीं आलंबन,  
वसियो हृदय मभार ।

भन दुःख भजन तू ही निरंजन,  
करुणा फला भडार ॥मा. ॥१८॥

मन वाछित सुखसपत्ति दाता,  
प्रभु माहिव छो सास ।

मुक्त ने सेवक साचो जाणी,  
पूरो मन नी आस ॥मा. ॥१९॥

सरतर हरख गुरु सुपसाये,  
रूपचढ गुण गाय ।

अगर चढ की यही विनति,  
तारो दीन दयाल ॥मा. ॥२०॥

मन्त अद्वारसे, डकवीणे,  
पोष वदी शुभ मास ।

वीजभद्र बुधवार अनोपम,  
जिन पदवंदन भाम ॥२१॥





## ॥ सोमंधरजी का स्तवन ॥

मनडोते मारो मोकले मारा व्हालाजीरे,

शशीधर साथे— —संदेश,

जईने कहेजो मारा व्हालाजीरे ।

भरतनो भक्त्तने तारवा. मा.

एक वार आवोने आ देश जई ने ॥१॥

प्रभुजी वसे पुष्कलावती, मा.

महाविदेह क्षेत्र मभार जईने ।

पुरीराजे पुंडरीक गिणी, मा.

जिहां प्रभुनो अवतार तार. । जई ॥२॥

श्री सीमंधर साहिवा, मा.

विचरंता वीतराग. । जई.

पडिवोहे बहुप्राणी ने, मा.

तेहनो पामे कुण्ठाग, । जई. ॥३॥

मनजाणे उडी मिलुं, मा.

पण पोताने नहीं पांख. । जई।

भगवंत तुम जोवा मणी, मा,

अलजो धरंछे वे आंख ॥४॥

दुर्गम मोटा डुंगरा, ।मा।

नदी नाला नो नही पार, ।जई।

घाटी नी आंटी घणी मा,

अटवी पंथ अपार, ।जई। ॥५॥

कोडी मोर्नये कापीडं, ।मा।

रुनारो नहीं कोय, ।जई।

कागलियो केम मोरुलुं, ।मा।

हौशतो नित्य नवली होब ।ज। ॥६॥

लगू जे जे लेखमा, ।मा।

लागुं गमे अमिलाप ॥ज।

तमे लेजामा ते लहो, ।मा।

मुक्त मन पूरेछे आग, ॥मा। ॥७॥

लोकालोक स्वरूपना, ।मा।

जगमा तुमे छो जाण, ।ज।

जाण आगे शुं जयायीये, ।मा।

प्राखिर अमे अजाण, ॥ज। ॥८॥

वाचरु उदयनी विनति, ।मा।

गगधर कयोरे सदेश, ।ज।

मानीलेजो वंदना, ।मा।  
वसतां दूर विदेश, ॥ज. ॥६॥



## ॥ श्री सीमंधर का स्तवन ॥

श्री सीमंधर साहिबा, मुझ अंतर जामी ।  
पूर्व विदेह विराजता, त्रिभुवन जन स्वामी ॥१॥  
प्रभु मुखचंद्र सोहामणों, दीठाँ दुःख जाये ।  
मोह संताप मिटे सही, शीतलता पाये ॥२॥  
मुझ मनड़ो उमाहीयो, तुम दर्शन काज ।  
वयण सुधारस तिमवली, सुखावा जिनराज ॥३॥  
मनना संशय भेटवा, मुझ उलट भाव ।  
परतिख प्रभु भेटयां विना, किम बने वनाव ॥४॥  
दूर देशातर में रहूं, करूं कोडी विमास ।  
विचमारग विपमो घणो, पहुँचूँ किम पास ॥५॥  
दूर थकी प्रभु निशदिने, धरूं ध्यान तुमारो ।  
देव अवर सेवुं नहीं, निश्चे अवधारो ॥६॥  
मोह महाभड़ मुजनड़े, एहने प्रभुवारो ।  
निज सेवक जाणी खरो, भव लायर तारो ॥७॥

महाजन टोली माँ मन्यो, एह विनति टाणो ।  
 पण मुक्क डन्छा एहवी, नित्य नाह पीछाणो ॥८॥  
 अमृत सम प्रभु धर्मथी, नित जयजय कार ।  
 जाणो जमा कल्याण नी, वंदना वार वार ॥९॥

॥ सफल संसार श्रीमंधरजी का ॥

सफल संसार अवतार ए हूँ गणू,  
 स्वामी श्रीमंधरा तुम्ह भक्त भणु ।  
 भेटवा पायकमल, भावहियडे घणो,  
 करीय सुपसाय जे विनवु ते सुणो ॥१॥  
 तुम्ह सुं कड अरिहत शुं राखीये,  
 जिस्त्यो अछे तिस्यो करजोडीकरी भासिये ।  
 अति सरल मुक्क हिये मोहमाया घणी,  
 एक मनभक्ति किम करुं त्रिभुवन घणी ॥२॥  
 जीव आरति करे नय नयी परिगडे,  
 रीम चटजो चढे मोह वैरी नडे ।  
 नयण रस वयण रम काम रम रसियो,  
 तेम अरिहंत तूं हियडे नपि वसियो ॥३॥

दिवसने रात हियड़े अनेरो धरुं,  
 मूढमन रींभवा वलिय माया करुं ।  
 तूंही अरिहंत जाणे जिश्यो आचरुं,  
 जेमकर तेम संसार सागर तरुं ॥१॥

कम्म वसी सुख ने दुख जेहूं सहूं,  
 मन तणी बात अरिहंत किणने कहूं ।  
 करी दया करी मया देव करुणापरा,  
 दुख हर सुख कर स्वामी सीमंधरा ॥५॥

जाण संयोग आगम वदण पिणसुणुं,  
 धर्म न कराक प्रभु पाप पोतेवणुं ।  
 एक अरिहंत तूं देव बीजो नहीं,  
 एह आधार जग जाणजो अम्ह सही ॥६॥

धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहूं,  
 हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो रहूं ।  
 जयो जयो जगगुरु जीव जीवनधरा,  
 तुम समो बड नहीं अवसर वालेसरा ॥७॥

अमिय समवाणी जाणुं मदा सांभलूँ,  
 वार वर पर्पदा मांही आवीमिलूँ ।

चित्त जाणूं सदा स्वामी पाय त्रोलगूं,  
किमकरुं ठाम पुंडरी गिणी वेगलूं ॥८॥

मोलीडा भक्ति तूं चित्त हारे क्रिणे,  
पुण्य सयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुणे ।

जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे,  
दूरथी दृकडा जेम हियडे वसे. ॥९॥

मलो मलो एणी ससार सहु ए अछे,  
स्वामी गीमंधरा ते सहु तुम पछे ।

व्यान करता थका सुपनमाही आपि मिले,  
देखिये नयण तो चित्त आरति टले. ॥१०॥

स्वामि सोहामणा नाम मनगहगहे,  
तेह सु नेह जे बात तुमची कहो ।

तुम पाय भेटवा अतिघणो टलवलू,  
पख जो होय तो सहीय आनी मिलूं ॥११॥

मेरु गिरि लेखनी, आभ कागल करुं,  
खीर सागर तणा दूध खडियां मरु ।

तुम मिलवा तणा स्वामि सदेभडा,  
इ द्रपण लखिय न सके अछे एवडा ॥१२॥

आपणे रंगभरी बात मुख जेटली,  
ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली ।

सुणो सीमंधरा राज राजेश्वरा,  
लाडने कोड प्रभु पूर सवी माहरा ॥१३॥

पुत्र भवि मोहवश नेह हुवे जेहने,  
समरीये एणी संसार नित तेहने ।

मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे,  
तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥१४॥

खरूं अरिहंत नुं ध्यान हियडे वस्युं,  
पापहुं पाप हिव रहिय करसे किस्युं ।

ठाम जिम गरुडवर पंखी आवे वही.  
तत खिण सर्पनी जाती न सके रही ॥१५॥

पापना कज्ज सावज्ज सहु परि हरी,  
स्वामी सीमंधरा तुम पय अणु सरी ।

शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालसुं,  
दुक्ख भंडार संसार भय टालसुं ॥१६॥

तुम्ह हूं दास हूं तुम्ह सेवक सही,  
एह मैं बात अरिहंत आगल कही ।

एवढी माही हरी भक्ति जाणी करी,  
आप जो बापजी सार केवल सही ॥१७॥

॥ कलश ॥

इम अद्वि वृद्धि समृद्धि कारण,  
दृष्टि वारण मुख करो ।  
उज्ज्वलाय नर श्री भक्ति लामे,  
शृण्यो श्री सीमंधरो ॥

जयो जयो जग गुरु जीव जीवन,  
करो स्वामी मया घणी ।  
कर जोडी वली वली विनडुं,  
प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १ ॥

॥ तांज के स्तवन ॥

आदि देव अरिहतजी, लीधो मंयम भार ।  
छट छट करता पारणो, पहुंता गोचरी टाम ॥  
देनाधिदेव श्री आदि देव जिन ॥ टेर ॥



पांच सुमति सुमता थया, तीन गुप्तिनाजाण ।  
 समता रस में भीलता, धरता ध्यान सुध्यान ॥१॥  
 ज्यां ज्यां प्रभु पगला धरे, त्यां त्यां करुणा लोक ।  
 कई राणा कई राजवी, केई लावे धनने रोक ॥दे॥२॥  
 केई भूषणमणि में जड़या, केई लावे उरना हार ।  
 हय गय रथने पालखी, केई लावे अवल तुखार ॥दे॥३॥  
 अतिअणियाली लोयणी, कोयल सरिखो कंठ ।  
 अस कंवरी आगलधरी, कहे परणोनी भगवंत ॥दे॥४॥  
 प्रभुजी तो लेवे नहीं, जोवे निरवद्दय आहार ।  
 किणहिक समेपेखंता, करता उग्र विहार ॥दे॥५॥  
 इम विचरंता आवीया, गजपुर नगर सभार ।  
 आया प्रभु देखीकरी, श्री श्रेयांस कुमार ॥दे॥६॥  
 जातिस्मरण ज्ञान थी, त्रण प्रदक्षिणा देय ।  
 आय प्रभु वंदी करी, पावन क्रीजे मुक्त गेह ॥दे॥७॥  
 वर्षीतप ने पारणे, पहुँता श्री जिनराय ।  
 इत्तु रस वहोरावीयो, श्री श्रेयांस कुमार ॥दे॥८॥  
 पांचदिव्य प्रगट थया, अहो दान ! महोदान !  
 वर्षी कोड़ी कनकनी, साढी चारे प्रमाण ॥दे॥९॥

पुप नीर वृष्टि थई, पृथ्वी थई सुवास ।  
 देवदुंदुमी वाजतां, गाज रहयो आकाश ॥दे॥१०॥  
 दान शील तप भावना, जगमें राख्यो नाम ।  
 प्रभुजी केवल सुखलही पहुंता शिवपुर ठाम ॥दे॥११॥  
 श्री इंद्रपुरमडणों, नामि नरेश्वर नंद ।  
 राचक श्रीजिन चढनो, शीस नमावे तिचढ ॥दे॥१२॥

॥ दुजा ऋषभ जिन स्तवन ॥

ऋषभ जिनेश्वर दिन कर साहिव,  
 भिनतही अरधारोरे जगना तार ।  
 मुक्त तारो नी कृपानिधि स्वामी,  
 जग जसवाद प्रगट छे ताहरो ।  
 अनिचल सुखदातारोरे ॥ज॥१॥  
 निजगुण मोहा पर गुण लोप्ता,  
 आत्म शक्ति जगई रे ॥ज॥  
 अग्निनाशी अनिचल अतिकारी ।  
 शिव वामी जिनरायारे ॥ज॥२॥  
 हन्यादिक गुण श्रवणे मुग्गीने,  
 र तुक्त चरणे आयोरे ॥ज॥

तुम रींभावण हेते ततखिण ।

नाटक खेल मचायोरे । ज० ॥३॥

काल अनंतो रहयो एकेंद्रिय,

तरु साधारण पामीरे ॥ ज० ॥

वष संख्याता वलि विकलेंद्रिय ।

वेष धर्या दुःख धामीरे । ज० ॥४॥

सुर नर-तिरि-वलि नरक तणीगति,

पंचेन्द्रिय पणो धार्यो रे ॥ ज० ॥

चोवीसे दण्डक मांहि भमियो ।

अवतो हूं पिण हार्यो रे । ज० ॥५॥

भवनाटक नित प्रति कर नव-नव,

हूं तुम्ह आगल नाच्योरे ॥ ज० ॥

समरथ साहिव सुरतरु सरिखो ।

निरखी तुम्हने जाच्यो रे । ज० ॥६॥

जो मुझ नाटक देखी रीभया,

तो मुज वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥

जो नवी रींभया तो मुझ भाखो,

वलि नाटक नवी कीजेरे ॥७॥

लालच धरी हुं सेवा सारुं,

तुं दुःखडा नवी कापेरे ॥ज०॥

दाता सेती छम मलेरो ।

वहीलो उत्तर आपेरे ॥ज० ॥८॥

तुभ सरिखा साहिय पिण माहरे,

जो नवी कारज सारोरे. ॥ज॥

तो मुभ करम तणी गति अचली,

दोष न कोई तुमारो रे. ॥ज०॥९॥

दीन दयाल दया करी दीजे,

मुध समकित सही नाणीरे ॥ज॥

मुगुण सेनरुना वाछित पूरो ।

एहीज गुण मणि खाणीरे ॥ज॥१०॥

मनंत अटारे गुण चालीसे,

जेठ मुदी सोमवारो रे ॥ज०॥

लालचद प्रतिपद दिन भेटथा ।

वीरानेर मभारो रे. ॥ज०॥११॥

॥ तीजा. शत्रुं जय मंडल ऋषभ जिन स्तवन ॥

पाटोधर पाटिये पधारो (राज.)

सुण सुण शत्रुं जय गिरि स्वामी,

जग जीवन अंतर जामी, हूं तो अरज करूं शिगनामी ।

कृपानिधि विनति अवधारो, भव सायर पार उनागे ।

निज सेवक वान वधारो, जिनेसर विनति अवधारो ॥८॥

प्रभु मूर्ति मोहन गारी, निरख्यां हरखे नगनागी ।

जाऊं वारी हूं वार हजारी ।कृ॥१॥

हवे किसीय विमासण कीजे, मुझ उपर महिर धरीजे ।

दिल रंजन दरिशन दीजे ॥कृ०॥२॥

आज सयल मनोरथ फलिया, भव भवना पातिक टलिया ।

प्रभु जो मुझ सन्मुख मिलिया ।कृ॥३॥

समर्या संकट टली जावे नव नव नित संगल थावे ।

मुझ आतम पुण्य भरावे ॥कृ०॥४॥

करजोड़ी विनति कीजे, केशर चंदन चरचीजे ।

दिन धन धन तेह गणीजे ॥कृ०॥५॥

प्रभु दरस सरस लही तोरो, अति हरखित हुबो चित मोरो ।

जिम दीटां चंद चकोरो ॥कृ॥६॥

परतिस्र प्रभु पचमे आरे, विपम महाभय संकट चारे ।

सद्दु सेवक काज सुधारे ॥कृ०॥७॥

सेनो स्वामी दास सुखदाई, कमणा न रहे घर कांडे ।

राधे संपत्ति शोभा सवाई ॥कृ०॥८॥

नामिराय कुलाभरचेदा, भवि, जनमननयन आनदा ।

ओलगे सुर असुर सुरिंदा ॥कृ०॥९॥

जयकारी रिपभ जिनन्दा, प्रहसमे धरि परम आनन्दा ।

पन्दे श्रीजिन भक्ति सुरिन्दा ॥कृ०॥१०॥

## ॥ आदिनाथ जी का स्तवन ॥

सुग जिनर शत्रु जा धणीजी, दासतणी अरदास ।

तुम्ह आगल मालक परेजी, हूं तो करु प्रियासरे

जिनजी मुक्त पापी ने तार ॥

तूतो करुणा गम भयोजी, तू सद्दुनो हितकाररे. जिन मुक्त-१

दू अगुण नो ओरडोजी, गुण तो नहीं लवलेश ।

पगुण पेयी नरी सकुं जी, केम मंमार तरेसरे जिनजी-२

जीवतणा यध में कर्याजी, बोल्या मृषायाद ।

कपट करी पन्धन दर्याजी, सेन्या निपय संयादने जिनजी-३

## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

(राग) बोल बंदे मानरं

आदि जिनवर जी अनादि, कर्म मल हर लीजिये ।  
दास हूं अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजिये ॥१॥

तीसरा भारा प्रभु वह था, अकर्मक भाव में ।

कर्मयुग तव था दिखाया, अब भी दिखा ला दीजिये ।आ.।१।

आपने नरनारियों को, मोक्ष की दी थी कला ।

नाथ अब वैसी कला का, दान दयया कीजिये ।आ.।२।

राजनीति धर्मनीति, के प्रवर्तक आप हैं ।

है अनीति छा रही बस, दूर उसको कीजिये ।आ०।३।

राज को रजपुंज माना, भोग माने रोग से ।

त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजिये ।आ.।४।

वर्षभर रह निराहारी, कर्म को तोड़े प्रभु ।

वह सफल तप कर सकूँ, यह शांति प्रभु दे दीजिये ।आ.।५।

हाथी हय कन्या रतन मणिके, प्रलोभन आपको

थे चला न सके अचलता, नाथ मुझ को दीजिये ।आ.।६।

भक्त वर श्रेयांस से ले, इच्छु रस पावन किया ।

वैसी भक्ति कर सकूँ, वैसा लज्ज प्रभु दीजिये ।आ.।७।

की तपस्या में क्षमा थी आपने अनुपम प्रभो !

उम क्षमा की माधना को, आज सिखला दीजिये ।आ.।८।

ज्ञान केवल आपने, पाया स्वमाता को दिया ।

शुद्ध उसके अश का कुछ, दान दाता कीजिये ।आ.।९।

आप सुख सागर प्रभु, भगवान हैं ससार में ।

नाथ निजपद मक्ति के, अधिकार को कुछ दीजिये ।आ.।१०।

हे प्रभो हरिपूज्य गुण, गाया करूँ नित आपका ।

शुद्धिबल यह दीजिये, इस विनति को सुन लीजिये ।आ.।११।



## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

भीनारुर स्वामी (राग)

आदीश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी, अभिरामी अचतार ।

पंचम गतिगामी निजगुणधामी आरामी अप्रिकार रे ।टेरा

हे प्रभु कर्म से पीडित हूँ मैं, कर्म बडे निरुराल ।

आप अकर्मक मात्र के नायक, मेरी करो प्रतिपालरे ।आ.।१।

घाती ययाती चार चार हैं, हैं उनका विस्तार ।

आत्म के गुण आठ उन्हीं पर, ये करते अधिकार रे ।आ.।२।



मिथ्यात्वादिक हेतु सहित जो, किरिया होती खास ।  
 उस से आत्म पड़ता पुद्गल, रूपी कर्म के पास रे ।आ.।३।  
 शुभ किरिया है पुण्य का कारण, कंचन बेड़ी समान ।  
 पाप अशुभ है लोह की बेड़ी, दुस्सह दुःख निदानरे ।आ.।४।  
 जीव अनादि कर्म अनादि, उभय अनादि संयोग ।  
 कनको पलमें पावक जैसे, स्वामी साधा वियोगरे ।आ.।५।  
 प्रभुगुण जैसे मुक्त में भी हैं, सत्तागत गुण आठ ।  
 व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे हुताशन काठरे ।आ.।६।  
 विघ्न घना घन कर्मवली को, वर्षाधिक तपधार ।  
 आत्म ध्यान सुपावन पवने, आप किया परिहाररे ।आ.।७।  
 बंध उदय उदीरणा सत्ता, गत मम कर्म अनेक ।  
 उसपर विजय करूं मैं कैसे, ? यह दो नाथ विवेकरे ।आ.।८।  
 गुणठाणों की महिमा भारी, फरमाई जगनाथ ।  
 उत्तरोत्तर मैं भी चढ़ पाऊं, जो पकड़ो मुक्त हाथरे ।आ.।९।  
 कर्म प्रवर्तक होकर स्वामी, हुवे अकर्मक आप ।  
 यह तप त्याग तपोबल बुद्धि, दे दो हे मां बापरे ।आ.।१०।  
 सुखसागर भगवान परम हरि पूज्य दया कर देव ?  
 पाऊं अकर्मक तुम पद दर्शन, तो नित साधूँ सेवरे ।आ.।११।

## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

मैं तो दीवाना (राग)

प्रभु हाज़िर खड़े हम तेरे लिये,  
तेरे लिये हां तेरे लिए ॥टेरे॥

नामिनृप मरु देवी के नंदन । बदन करे हम तेरे लिये ।१।

हाथी को लापें घोड़ों को लावें, रथको मगावें ।प्र.।२।

कन्या को लापें व्याह रचावे, महल तैयार करें तेरे लिये ।३।

रतनो को लापें मणियों को लावें,

कचन का ढेर करें तेरे लिये ।४।

शाल दुशाले वस्त्र अनोखे, अर्पण करें हम ।५।

यह दुःख हमसे देखा न जावे, दुखिये हैं हम तेरे लिये ।६।

ससार छोडा मंयम को धारा । मौनी हुवे प्रभु किसके लिये ।७।

पर्षीतप को धारें प्रभुजी, कर्मकलरु हरने के लिये ।प्रा.।८।

श्रेयांम आया डचु रस लाया,

बह तो उचित था तेरे लिये ।९।

मत्तो ने जाना तप से प्रभुजी, आहार देना तेरे लिये ।१०।

पचद्विज्य तप प्रगटे थे भारी, 'हरि' करे जय तेरे लिये ।११।



## ४ ॥ चौथ का स्तवन ॥ १

॥ पारसनाथजी का स्त. माता त्रिसला. ॥राग॥

मातावामादे बोलावे जमवा पास ने,

जमवा वेला थई छे रमवा ने चित्तजाय ।

चालो तात तमारा बहु थाशे उतावला,

वहेला हालो ने भोजनिया ठंडा थाय ॥मा. ॥१॥

मात नुँ वचन सुणीने जमवाने बहु प्रेमसुँ,

बुद्धि बाजोठ टाली वैठा थई हुशीयार ।

विनय थाल अजवाली लाची ने,

आगल मूकियो विवेक वाटकियो सोहावे थालसभार ॥मा. २॥

समकित सेलड़ी ना छोली ने गट्टा मूकिया,

दान ना दाड़म दाणा फोली आप्या खाश ।

समता सीताफलनो, रस पियो बहु राजिया,

जुक्ति जामफल प्यारा आरोगो ने पास. ॥मा. ॥३॥

मारा नानड़िया ने चोखो चित्त नो चूरसों,

सुमति शाकर उपर भावसुँ मेलूँ घीरत्त ।

भक्ति भुजिया पिरस्या पास कुमर ने प्रेमसुँ,

अनुभव अथाणा चाखो ने राखो सरत्त. ॥मा. ॥४॥

प्रभुने गुण गु जाने ज्ञान गुं दवडा पिरसीया,  
 प्रेमना पेडा जमजो मान वधारण काज ।  
 जाणपणा नी जलेरी जमता मागे भूखडी,  
 दया दूध पाऊ अमीरस आरोगो ने आज, ॥मा. ॥५॥

मतोप मीगे ने वली पुण्य नी पोली पिरसीया,  
 मोग आऊ भला छे दातार टीली ढाल ।  
 मोटा मालपुत्राने प्रभाय नाना पूडला,  
 विचार वही वधारी, नमजो मारा बाल, ॥मा. ॥६॥

रुबी रायतो रुडा पत्रिण पापड पिरसिया,  
 चतुराई चोग्रा आण्या ओमा मण भरपूर ।  
 उग्र इद्रिय दमन दूध तप तापे तातुं रुरी  
 प्रीने पिरप्यु जमजो जगजीवन सहनूर ॥मा ॥७॥

प्रीति पाणी पीधा प्रभायती ना हाथ थी,  
 तत्र तपोल लीधा शिथल मोपागी साथ ।  
 अस्कल ग्लायची आपीने माता मुगु वडे,  
 प्रिसुवन तारी तरजो जगजीवन जगनाथ ॥८॥

प्रभुना बाल तणा जे गुण गावे ने मामले,  
 भेद भेदान्तर ममके ज्ञानी ते रुहेनाथ ।

गुरु गुमानविजय नो शिष्य कहे शिर नामिने.  
सदा "सौभाग्य विजय" गावे गीत रसाल ॥६॥



॥ पारसनाथ जी का. ॥

(राग-सारंग)

पारस! तोरी निरखण दो असवारी,  
जिणंदा तोरी जोवण दो छ्मी प्यारी ।  
अरज सुणो प्रभु मारी ॥पा.॥टेर॥

काशी देश वणारसी नगरी, दिन दशमी जयकारी ।  
वामाराणीनी कुखे थी प्रभुजी, जन्म लियो सुख कारी-१  
छप्पन दिग कुमरी हुलराये, हिये हरप अति भारी ।  
चौसठ इन्द्र करे वली महोत्सव, तरवा भवजल पारी-२  
एक क्रोड़ साठ लाख सोहे छे, कलश महा मनोहारी ।  
वारे जोजन पहोला पेटे, पचीस जोजन ऊंचाधारी.-३  
नीचा ऊंचा जोजन पहोला, निरमल भरियो वारी ।  
फूल चंगेरीने बावना चंदन, केशर ने घनसारी-४  
इण परि ओछव सुरपती कीनो, जोजो सूत्र संभाली ।  
सुरगिरि उपर पांडुक वन में पांडु शिला अति भारी.-५

अश्रमेन राय ओछव कीनो, दान दियो दिल धारी ।  
 गहर नी श्रेष्ठता जुवे जुगते, बँटा गोखे मक्षारी.-६  
 लोक महु पूजा पो लई ने, कमठ पूजणकारी ।  
 प्रभुर्जा पधार्या देखण काजे नाग जले तिणवारी.-७  
 काष्ठ फडावी नाग निकाल्यो, संभलाव्यो मंत्र मारी ।  
 ममकित लई ने सुरपति हुवा, धरखेंद्र एक अवतारी.-८  
 मवत उगणीशे इकतालीम वरसे, पोष दशमी रटीयाली ।  
 आहोर नगर में ओछव कीनो, मंघ सकल बलिहारी.-९  
 सुंदर मूर्ती प्रभुनी पिराजे, मनिजन कुँ सुखकारी ।  
 कीर्ति चंद मम सोहे जगमे, केशरी मुनि जयकारी ।  
 पारम तोरी निरखण टाँ अमवारी ॥पा०॥१०॥

॥ पारसनाथ जी का स्तवन ॥

मपिका श्रीजिन चिब जुहागे,

आत्म परम आचारो रे॥भ॥श्री॥टेर॥

जिन प्रतिमा जिनगागरी जागो, न रगे शंका काई ।

सागम धार्या ने अनुमारे, रागो प्रीति मवाईं ।भ ।१।

जे जिन विंन स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे ।

भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहां तत्त्व पीछाणे रे ।म.।२।

अंबेड़ श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक ।

विविधपरे जिन भक्ति करंतां, पास्या धर्म विवेकरे ।म.।३।

जिनप्रतिमा बहु भक्ते जोतां, होय निश्चय उपगार ।

परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जोजो आर्द्रकुमार रे ।म.।४।

जिनप्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मभार ।

ते देखी बहुला मच्छादिक, पास्या विरति प्रकार रे ।म.।५।

पंचमें अंगे जिनप्रतिमानो, प्रगट पणे अधिकार ।

सूर्याभसुर जिनवर पूजा, रायपसेणी मभार रे ।म.।६।

दश में अंगे अहिंसा दाखी, जिनपूजा जिनराज ।

एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करीये केम अकाज रे ।म.।७।

समकित धारी सतिय द्रौपदी, जिन पूजा मनरंगे ।

जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगेरे ।म.।८।

विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्तथिरराखी ।

द्रव्यभाव विहुं भेदे कीनीं, जीवा भिगमते साखीरे ।म.।९।

इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो ।

जिनप्रतिमा देखी नित नवल्लो, प्रेमघणो चित्त धरजो रे ।१०।

चिंतामणि प्रभु पाम पसाये, श्रद्धा होयजो मवाई ।  
श्रीजिनलाम सुगुरु रुपदेणे, श्रीजिनचद्र मवाई रे । म. ११ ।

## ॥ पारसनाथ जी का ॥

(राग गरवाजी)

जयकारी जिनराज, पुरुषा दाणी रे ।  
पामामुत वरदाय, निर्मलनाणी रे ॥ ज. ॥ १ ॥

पंच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरुग्यारे ।  
प्रिण कमल मुक्क मग, अतिशय हरख्यारे ॥ ज. ॥ २ ॥

वदन महोदय देखी, चढ लजाणु रे ।  
गगन ममे निशदीग, इम मन जाणु रे ॥ ज. ॥ ३ ॥

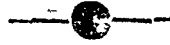
मुग्मणि ज्युँ सुखकार, नयन विराजे रे ।  
हृदय रुमल मुपिमाल, बाल ज्युँ छाजेरे ॥ ज. ॥ ४ ॥

प्रभु कर चरण विलोकि, पकज हायीं रे ।  
तामिग निज संनाम जलमे धायीं रे ॥ ज. ॥ ५ ॥

इम गरंग उदार, श्री जिनराया रे ।  
माने पृण्य मंयोग, माहिय पाया रे ॥ ६ ॥



प्रभु गुण अनुभव नीर, संग सुरंगे रे ।  
 टाल्यो पातक पंक, आतम संगे रे ॥ज॥७॥  
 वरस अठार चौत्रीस, वदि वैशाखे रे ।  
 मनोहर पांचम दिन, सहु संघ साखे रे ॥८॥  
 नगर महेवा मांहि, पार्व जुहार्या रे ।  
 श्रीजिन चंद मुणींद, वांछित तार्या रे. ॥जय॥९॥



### ॥ पंचमीतप वृहद् स्तवन ॥

प्रणमं श्री गुरुपाय, निर्मल ज्ञान उपाय ।  
 पंचमीतप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥१॥  
 चौवीशमो जिनचंद, केवल ज्ञान दिणंद ।  
 त्रिगडे गहग ह्योए, भवियण ने कह्योए ॥२॥  
 ज्ञान वडो संसार, ज्ञान मुगति दातार ।  
 ज्ञान दीवो कह्योए, सांचो सर्द सह्योए ॥३॥  
 ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ।  
 ज्ञान विना पशुए, नर जाणे किशुं ए ॥४॥  
 अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ।  
 ज्ञानी सर्वतुंए, किरिया देशतुए, ॥५॥

ज्ञानी सासो सास, कर्म करे जे नाश ।  
 नाग्री ने मही ए, क्रोड वर्ष कही ए, ॥५॥  
 ज्ञानतणो अधिकार, बोल्या सूत्र मभार ।  
 क्रिया छे सहिए, पण पाछे कहीए ॥६॥  
 क्रिया महित जो ज्ञान, हुवे तो अतिप्रधान ।  
 मोनो ने सुरोए, शंस दूधे भयोए. ॥७॥  
 महानिशीथ मभार, पंचमी अक्षर सार ।  
 भगवत भाखियोए, गणधर साखियोए. ॥८॥

## ॥ ढाल दूसरी ॥

कलहरा नी (राग)

पचमीतपत्रिवि मांमलो, निमपामो भवपागे रे ।  
 श्री अग्रिहंत इम उपदिशे, भवियण ने हितकारो रे ॥१॥  
 मिगमर माह फागुण मला, जेठ आपाट वंशाखोरे ।  
 शग पट मामे लीलिये, शुभ दिन सद्गुम्नी साखोरे ॥२॥  
 देव जुदारी देहरे, गीता रथगुरु वदीरे ।  
 पोधी पूजो ज्ञान नी. जाहि हुवेतो नंदीरे ॥पं॥३॥  
 रेसत जोडी भाव मुं गुम्मुख करो उपपागोरे ।  
 पंचमी पटिकुपगो करो, पटो पडित गुरु पागोरे ॥पं॥४॥

जिण दिन पंचमी तप करो, तिण दिन आरंभ टालोरे ।  
 पंचमी स्तवन भुई कहो, ब्रह्मचर्य पण पालोरे. ॥५॥  
 पांचमास लघु पंचमी, जीव जीव उत्कृष्टि रे ।  
 पंच वरस पंचमासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि रे ॥६॥  
 चोथ करो एकासणो, पंचमी करो उपवामोरे ।  
 पारणे वलिय एकासणो, कर मन अधिक उहनासोरे ॥७॥

## ॥ ढाल तीसरी ॥

( राग उहनाला की )

हिबे भवियणारे, पंचमी उजमणो सुणो ।  
 घर सारुं रे वारुं, धन खरचो वणो ॥  
 ए अवसर रे, आवंतां वलि दोहिलो ।  
 पुण्य जोगेरे, धन पामंतां सोहिलो ॥  
 सोहिलो वलिय धन पामंतां धर्म काज किहां वली ।  
 पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजिये काउसग्ग मन रली ॥  
 व्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी, देई पुस्तक पूजिये ।  
 थापना पहिली पूज केशर, सुगुरु सेवा कीजिये ॥१॥  
 सिद्धान्त नीरे, पंच प्रति वीटांगणा ।

पंच पृठारे, मसमल सूत्र प्रमुख तणां ॥

पच डोरारे, लेखण पांच मजीसणा ।

वास कूपारे, कांची वारुं वरतणां ॥

वरतणाप्रारु वलिय कंठली, पांच भिलमिल अति भली ।

म्यापना चारिज पांच ठपणी, मुहपति पड पाटली ॥

पट सूत्र पाटी पच कोथली, पच नवर वालिया ॥

उणपरे श्राप्ररु करे पचमी उजमणुं उजवालिया ॥२॥

मलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये ।

॥ १ ॥ चर सारु रे दान तिहा वली दीजिये ॥

प्रतिमाजी नेरे, आगल ढोवणु ढोविये ।

पूजा नारे जो जे, उपकरण जोईये ॥

जोईये उपकरण देवपूजा, काज कलश शृगार ए ।

आरति भगल याल दीवो, धूप धाणु सार ए ॥

घनसार केशर अगार सुखड, अंग लुहणु दीशए ।

पच पच मघली वस्तु टोमो, शक्ति सुं पच वीशए ॥३॥

पंचमीनारे माहमी सर्व जमाडिये ।

राति जोगेर गीत, रसाल गजाडिये ॥

इण करणीरे करता ज्ञान आराधिये ।

ज्ञान दरिसणरे, उत्तम मारग साधिये ॥  
 साधिये मारग एह करणी, ज्ञान लहिये निर्मलो ।  
 सुरलोक ने नरलोक माहें, ज्ञानवंत ते आगलो ॥  
 अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी शाश्वतां सुख जे लहें ।  
 जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिनवर इम कहे ॥४॥

(कलश)

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, बद्धमान जिनेश्वरो ।  
 मैं धुणयो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥  
 जयवंत श्री जिन चंद सूरिज सकल चंद नमंसियो ।  
 वाचना चारिज समय सुंदर, भक्ति भावे प्रशंसियो ॥५॥

॥ पंचमी का स्तवन ॥

॥ मन मोह्युं मारुं मोह्युं प्रभु तारा ध्यानमा ॥  
 प्रभु सेवो प्रभु सेवो प्रभु सेवा सार है ।  
 पंचम ज्ञान विराजित प्रभु की सेवा सार है । प्रभु।टेरा  
 चैत वदी पंचमी चन्द्रा प्रभु जगदाधार है ।  
 च्यवन कल्याणक होते फैला, सुख संसार है ॥१॥

श्रावण सुदि पचमी दिन पावन नेमिनाथ का ।  
 जन्म कल्याणक होते घर घर, मगलाचार है ॥२॥  
 उद वैशाख तिथि पाचम मे कुंधुनाथका ।  
 दीना कल्याणक घर होते, जय जयकार है ॥३॥  
 कार्तिक वदी पचमी प्रभु तीजे, सभवनाथका ।  
 ज्ञान कल्याणक लोक प्रकाशक, परमोदार है ॥४॥  
 अजित मभव विभु अनंत जिनवर, शिव निर्वाणकी ।  
 चैत सुदी पंचमी तिथि उत्तम, जय श्रीकार है ॥५॥  
 ज्येष्ठ सुदी पंचमी तिथि तैसे, श्री धर्मेश की ।  
 मोक्ष कल्याणक पुनित परंपर, सुख भंडार है ॥६॥  
 किरिया पाच निवारी महाव्रत, पांचों धार के ।  
 पच काम गुण आश्रय पांचो रूथे पार है ॥७॥  
 पांचों सवर द्वार निर्जग, धानक भावतें ।  
 पाच समिति को साधे साधक शुद्धाचार है ॥८॥  
 पचम ज्ञान प्रकटते पाचों, अमित कायको ।  
 पूर्ण रूप जाने विज्ञानी-गुण रलिहार है ॥९॥  
 ममतायागे पाच वस्तुएं, वणित भावना ।  
 सुखसागर भगवान वतावे, परमाधार है ॥१०॥

‘जिनहरि’ पूज्य दयामय आज्ञा, तिथि आराधते ।  
सुमति ‘कवीन्द्र’ सुयश नित गाते जय जयकार है ।११

## ॥ छठ का स्तवन ॥

॥ महावीर स्वामी का ॥

वीर जिनेश्वर साहिव मेरा, पार नहीं लहूँ तेरा ।  
महर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो जिनजी ।  
अबहूँ शरणे आयो ॥१॥

गर्भावासतणा दुःख मोटा, ऊंधे मस्तके रहियो ।

मल-मूत्र मांहेँ लपटाणो, एहवा दुःख में सहियो हो ।२।

नरक निगोदमां उपन्यो ने चवियो, सूक्ष्म वादर थइयो ।

विंथाणो सूई ने अग्र भागे, मान तिहां किहां रहियो-३

नरक तणी अतिवेदना उहन्नसी, सही ते जीवे बहु ।

परमाधामी ने वश पड़ियो, ते जाणो तुमे सहु हो-४

तिर्यचतणा भव कीधा घणोरा, विवेक नहीं लगार ।

निशादिन नो व्यवहार न जाणयो, केम उतराये पार हो-५

देवतणी गति पुण्ये हूं पाण्यो, विषयारसमां भीनो ।

व्रतपचखाण उदय नवी आव्या, तानपान मांहेँ लीनो हो-६

मनुष्य जन्म ने धर्म सामग्री, पाय्यो छूँ बहु पुण्ये ।  
 राग द्वेष माँहि बहु भलियो, न टली ममता बुद्धि हो-७  
 एक कचन ने बीजी कामिनी, तेहसु मनडुं धाध्युं ।  
 तेहना भोग लेगने हँ शूरो, किम करी जिन धर्म साधुं हो-८  
 मननी 'दोड़-कीधी अति भाभी, हँ छूँ कोक जड जेवो ।  
 कलिकलि कल्प में जन्म गुमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो-९  
 गुरु उपदेशमा हँ नथी भीनो, न आवी सद्वहणा स्वामी ।  
 हवे उडाई जोड़यें तमारी, खिजमत माही छे खामी हो-१०  
 च्यार गति माहे रडवडियो, तोये न सीधा काज ।  
 अपम रुहे तरो सेनक ने, बाँध ग्रथा नी लाज हो-११

## ॥ महावीर स्वामी का स्तवन ॥

तीर्थनी आगातना (राग)

वीर कुमरनी बातडी केने कहिये !  
 हारे केने कहियेरे केने कहिये, हारे नरि मदिर बेमी रहिये ।  
 हारे सुकुमाल शरीर वीर कुमरनी ॥टेग॥  
 बाल पणा थी लाड को मन भाव्यो,  
 हारे मली चौमठ इन्द्रे मन्हाव्यो ।



इन्द्राणी मलिहलराव्यो, हारे गयो रमवा काज ।वी.-१

छोरु उछांछला लोकना केम रहिये,

हारे एनी मावड़ी ने शुं कहिये ।

हारे कहिये तो अदेखा थइये, हारे नाशी आव्यां बाल ।वी.-२

आमलकी क्रीड़ा वशे, वींटाणो,

हारे मोटो भौरिंग रोपे भराणो ।

हारे वीरे हाथे भालीने ताणयो, हारे काढी नांखयो दूर ।वी.-३

रूप पिशाच नुं देवता करी चलियो,

हारे मुक्त पुत्र ने लेई उछलियो ।

हारे वीर मुष्टि प्रहारे बलियो, हारे सांभलिये एम ।वी.-४

त्रिसला माता मौजमां एम कहेती,

हारे सखियों ने ओलंभा देती ।

हारे क्षण क्षण प्रभु नामज लेती, हारे तेड़ावे बाल ।वी.-५

चाट जोवंता वीरजी घेर आव्यां,

हारे माता त्रिसलाए न्हवराव्या ।

हारे खोले वेसाड़ी हुलराव्या, हारे आलिंगन देत ।वी.-६

यौवन वय प्रभु पामतां परणावे

हारे पछी संयम सु दिल लावे ।

हारे उपमर्गनी फोज हटावे, हारे लीधुं केवल ज्ञान ।वी-७

कर्म सुदन तप भाखियो जिन राजे,

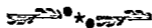
हारे त्रणलोक नी ठकुराई छाजे ।

हारे फलपूजा कही शिव काजे, हारे भविने उपकार ।वी-८

शाता अशाता वेदनी क्षय कीधु ,

हारे आपे अक्षय पद लीधुं हारे ।

“शुभवीर” नुं कारज सीधु , हारे भागे साठि अनत ।वी-९



॥ महावीर स्वामी का ॥

वीरजी सुणो एरु विनति मोरी,

गत विचारो तुम धरणी रे ।

वीर मने तारो महावीर मने तारो,

भयजल पार उत्तारो ने रे ॥१॥

परिभ्रमण में अनता रे कीधा,

हनु ए न आव्यो छेडलो रे ।

तुम तो थया प्रभु सिद्ध निरजन,

अमे तो अनंता भय भम्या रे ॥२॥

तुमे हमे वार अनंती रे वेला,  
रमिया संसारी पणे रे ।

तेह प्रीत जो पूर्ण पालो,  
तो हमने तुम समगणो रे ॥वी.॥३॥

तुम सम हमने जोग न जाणो,  
तो काई थोडुं दीजिये रे ।

भवोभव तुम चरणों नी सेवा,  
पामी हमे घणुं रींजीये रे ॥वी.॥४॥

इन्द्र जालियो कहे तोरे आव्यो,  
गणधर पद तेहने दियो रे ।

अर्जुन माली जे धुर पापी,  
तेहने वीर तुम उधर्यो रे ॥वी.॥५॥

चंदनवालाए उडदना वाकुला,  
पड़िलाभ्या तुम ने प्रभु रे ।

तेहने साहुणी साचीरे क्रीधी,  
शिव वधु साथे मेलवी रे ॥वी.॥६॥

चरणे चंड कोसीयोरे डसीयो,  
कल्प आठमें ते गयो रे ।

गुण तो तुमारा प्रभु मुख थी सुणी ने,  
आची तुम सन्मुख रहीयो रे ॥वी॥७॥

निरजन प्रभु नाम धरावो,  
तो महुने मरिसा गणोरे ।

भेदभाव प्रभु दूर करी ने,  
अमसुरमो एक मेकमु रे ॥वी॥८॥

मोडा बहेला तुम हीज तारण,  
हवे पिलंब शाकारणे रे ।

जानतणा भयना पाप मिटावो,  
वारी जाऊं वीर तुम वारणे रे ॥वी॥९॥

### ॥ सांतम का स्तवन ॥

शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

सेवा शान्ति जिणद की, कीजे अतिमारी रे लो ।

अहो कीजे अतिमारी रे लो,

पदपंकज सेवे सदा जेहना नर नारी रे लो ॥अहो॥ ॥१॥

एक वार सुरलोक मे, मेघरथ राजारी रे लो ॥अहो॥

इन्द्रों कीवी प्रगमा, मोटा उपकारी रे लो ॥१॥

तिण बेला मुर बोलियो, मिध्यामति धारी रे लो. ॥अ॥  
 धानतणो छे कीडलो, मलमूत्र मंडारी रे लो. ॥अ॥२॥  
 तिणमाहे कहो क्यां थकी, एवड़ी एकतारी रे लो. ॥अ॥  
 उत्तर वैक्रिय रूपकरी, चाल्यो तिणवारी रे लो. ॥अ॥३॥  
 कीधा दोय पंखीतणा, रूप बुद्धि विचारी रे लो. ॥अ॥  
 ध्यानधरी बैठा तिहां, नरपति निरधारी रे लो. ॥अ॥४॥  
 राख राख करतो फिरे, पारेवो तिणवारी रे लो. ॥अ॥  
 राजाजी रूडी रीतसुं, लीधो पुचकारी रे लो. ॥अ॥५॥  
 भय मत कर रे बापड़ा, कोई न सके मारी रे लो. ॥अ॥  
 पापी पुठे आवीयो हलवो हिलकारी रे लो. ॥अ॥६॥  
 मत्त दीजे नृप माहरो, तिमखाऊं मारी रे लो. ॥अ॥  
 राजाजी बोलेरे पशुहिंसा नरक दुवारी रे लो. ॥अ॥७॥  
 भोजन आपूं तो भणी, मीठा सुखकारी रे लो. ॥अ॥  
 मांस विना खाऊं नहीं, नृप जात हमारी रे लो. ॥अ॥८॥  
 देसी तो तुम्ह ने होसी हत्या पारेवारी रे लो. ॥अ॥  
 नहीं देसी तुम्ह ने हुसी, हत्या हमारी रे लो. ॥अ॥९॥  
 राजाजी आपे तेहने निज अंग विदारी रे लो. ॥अ॥  
 तो पण न आणयो चित्तमें राय दुःख लगारी रे लो. ॥अ॥१०॥

धीरज देखी बोलियो, सुरवाणी सारी रे लो. । अ. ।  
 परीक्षा कारण आत्रियो, हूँ छूँ आशाधारी रे लो. । अ. । ११ ।  
 आज पछे हूँ ताहरो हूँ छूँ आज्ञाकारी रे लो. । अ. ।  
 इद्र बखाएयो जेहयो, तेहयो उपकारी रे लो. । अ. । १२ ।  
 जीवदया प्रतिपाली ने, निज काज सुधारी रे लो. । अ. ।  
 राजाजी पहोता मदिरे, व्रत पोपध पारी रे लो. । अ. । १३ ।  
 नारमें मयलाधी मली, दोय पदवी सारी रे लो. । अ. ।  
 तीर्थकर थया सोलमा, पंचमा चक्र धारी रे लो. । अ. । १४ ।  
 शान्ति जिनेसर विनति, चित्त में अवधारी रे लो. । अ. ।  
 भाग सागर रुहे थाय जो, संघमे मंगलकारी रे लो. । अ. । १५ ।



॥ शान्तिनाथ जी का ॥

भैरवी (राग)

शान्ति जिनेसर साहेन बंदो, अनुभव रमनो रुदो रे ।  
 मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुरनर वृदो रे । टेर ।  
 आने मजरी फोयल टट्टुके, मेघघटा जिम मोर रे ।  
 तिम जिनगर ने देखी हरखूँ, बलि जिम चद चक्रोर रे । १ ।

मारो पासो न मेलो राग,  
तमे प्रभुजी थया वीतगग रे ॥४॥

मने मायाए मुक्यों पासी, तुँ तो निरबंधन अविनाशी रे ।

हं तो समकित थी अधूरो,

तुँ तो सकल पदार्थे पूरो रे ॥५॥

मारो तुं छे प्रभु एक, तारे मुक्त सरिखा अनेक रे ।

हं तो मनथी न मूकमान,

तुँ तो मान रहित भगवान रे ॥६॥

मारो कीधो क्रिसुं नवी थाय, तुं तो रंकने करे राय रे ।

एक करो मुक्त पर मेरवानी,

मारो मुजरो लेजो मानी रे ॥७॥

एकवार जो निजरे निरखो तो सेवक ने करो तुम सरिखो रे ।

जो सेवक सरिखो थाशे,

तो गुण तुमारा गाशे रे. ॥ ८ ॥

भवोभव तुम चरणों की सेवा, हुँ तो मागूँछू देवाधिदेवा रे ।

साधुं जोवी ने सेवक जाणी,

एवी उदय रतन नी वाणी रे ॥९॥



## ॥ त्रैसठ शलाका पुरुष का स्तवन ॥

\* टाल १ \*

धर्म महारथ सारथीमार (राग)

मद्गुरु चरण कमल चित्त धारं, त्रैसठ उत्तमनर अधिकार ।

पमणीमुं श्रुत अनुमार, जेहना नाम लिये निम्तार ।

आपणो मफल हुवे अत्रतार, पामीजे भत्रपारं ॥१॥

ऋषभ अजित समत्र अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु नयना नदन ।

गातम तेम सुपान, चद्रप्रभु ने सुविधि शीतल जिन ।

श्रेयाम तामुपूज्य जिन शिगेमणि, निमलगुणेकरी वाम ॥२॥

अनत धर्म श्रीशान्ति जिनेमर, कुंठुनाथ अर मन्लिल सुहकर ।

मुनिसुव्रत नमी नेम, पार्श्वधीर ए जिन चौवीश ।

जगपछल जगगुरु जगदीश, प्रणमीजे धरी प्रेम ॥३॥

## ॥ टाल २ ॥

मुनिवर आर्य सुदन्ती

प्रथम भरत नरींद, तीजो सागर सुर्गद ।

मधवा तीजो उदार, चौवो मनत कुमार ॥१॥

पाचम गाति चर्फीम, छटो हुंधु गणीम ।



जिन प्रतिमा श्री जिनवर भाखी, सूत्रघणा छे साखी रे ।

सुरनर मुनिवर वंदन पूजा, करता शिव अभिलाषी रे ।२।

रायपसेणी प्रतिमा पूजी, सूर्याभ समकित धारी रे ।

जीवाभिगमें प्रतिमा पूजी, विजयदेव अधिकारी रे ।३।

जिनवर चैत्य विना नवी वंदूं, आणंद जी इम बोले रे ।

सातमें अंगे समकित मूले, अवर नहीं तस तोले रे ।४।

ज्ञाता सूत्रं द्रौपदी पूजा, करती शिवसुख मांगे रे ।

राय सिद्धारथ प्रतिमा पूजी, कल्पसूत्र मांहे रागे रे ।५।

विद्याचारण मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमें अंगे रे ।

जंघाचारण मुनिवर वंदी, जिन पड़िमा मन रंगे रे ।६।

आर्य सुहस्तीसुरि उपदेशे, साचो संप्रति राय रे ।

सवा क्रोड़ जिनविंघ भराव्या, धन-धन एहनी माय रे ।७।

मोकली प्रतिमा अभयकुमारे, देखी आर्द्रकुमार रे ।

जातिस्मरणे समकित पामी, वरियो शिव वधु सार रे ।८।

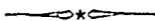
इत्यादिक बहुपाठ कल्याछे, सूत्रमांहे सुखकारी रे ।

सूत्रतणो एक वरण उत्थापे, ते कस्यो बहुल संसारी रे ।९।

ते माटे जिन आणाधारी, कुमति कदाग्रह निवारी रे ।

भक्तिगणाफल उत्तराध्ययने, बोध बीज सुखकारी रे ।१०।

एक मन्त्रे दोष पदवी पाम्या, मोलमा श्री जिनगाय रे ।  
 शुभ मन मदिराये पवरात्रे, धवल मंगल गवराय रे । ११ ।  
 जिन उत्तम पदरूप अनूपम, कीर्ति कमलानी शाला रे ।  
 जिन विजय कहे प्रभुजी नी भक्ति, करता मंगल माला रे । १२ ।



### ॥ शान्तिनाथ जी का स्तवन ॥

गुणो शान्ति त्रिणद मोभागी, हूं थयो छूं तुम गुणगामी ।  
 तुम निरागी भगवंता, जोता केम मलशे तंत रे ॥१॥

हूं तो क्रोध कपाय थी मरियो,

तुं तो उपगम रसनो दरियो रे ।

हूं तो अनाने यागरियो, तुं तो केवल कमला बग्योरे-?

हूं तो रिपया रमनो आशी, तें तो रिपया क्रित्री निगामी रे ।

हूं तो कर्मों ने मारे भायों,

तें तो प्रभु मार उचार्यों रे ॥२॥

हूं तो मोह तपो पग पडियो, तें तो सपलामोहने हर्णायों रे ।

हूं तो मन ममदुर्मां सुच्यो,

तुं तो गिर मदिरमा पट्टयो रे ॥३॥

मारें जन्म मरण नो जोगे, तें तोटयो नेदर्या दोगे रे ।

सातमो अर नरनाथ, आठमो सुभूम सुनाथ ॥२॥  
 नवमो पद्म नरेश, हरिपेण दशम कहेश ।  
 इग्यारमो जयवंत नाम, वारमो ब्रह्मदत्त नाम ॥३॥  
 एह चक्रीश्वर वार, क्षेत्र भरत सिणगार ।  
 सववा सनत कुमार, पहुँता स्वर्ग मभार ॥४॥  
 सुभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम निरय निरत्त ।  
 आठ थया शिवगामी ते प्रणमूँ शिरनामी. ॥५॥

## ॥ ढाल ३ ॥

मुनिवर आर्य. (राग)

पहिलो त्रिपृष्ठ जाण, द्विपृष्ठ दूसरो ।  
 तीजो स्वयं प्रभु जाणीये ए पुरुषोत्तम ए चौथो ।  
 पंचम परगडो, पुरुष सिंह प्रमाणीये ए ॥१॥  
 छटो पुरुष पुंडरीक, दत्ततिम सातमो ।  
 नवमण नामे आठमो ए, नवमो कृष्ण नरेश ।  
 एतवकेशवा. प्रहउटी ते पिणे नमुं ए ॥२॥  
 तिहां पहिलो वामुदेव,  
 नारकीं सातमां आगला पांच छटो गयाए ।

सात्तम पचम नेरैयो,  
 चौथी ग्राठमो नवमो तीजी नेरैयोए, ॥३॥  
 अचल विजय ने भद्र सुप्रभ सुदर्शन,  
 आनद नदन शुभ मतिए ।  
 रामचद्र बलभद्र, बलदेव ए नव,  
 आठ थया तिहा शिवगति ए. ॥ ४ ॥  
 बलभद्र ब्रह्मदेव लोक काल उत्मर्षिणी,  
 जासे शिव कृष्ण शासने ए ।  
 अथवा निःपुलाक नाम तीर्थकर होसे,  
 चण्डमो, उम बहु श्रुत भणेए. ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ ॥

कुम्भरपणे प्रमु रहता (राग)

अश्वग्रीवने तारक मेरुक वली मधु तिमाए ।  
 निशु भ बलिय प्रह्लाद रावण जरामध जिसाए ।  
 ए नव प्रतिपामुडेव नरके गति गामियाए ।  
 ते पण भावि जिनेश तेई प्रणमु मुदाए. ॥१॥

## ॥ ढाल पू ॥

सकल संसार (राग)

शांति ने कुंधु अर एह भव एक ही,  
चक्रधर तीर्थकर दोय पदवी लही ।

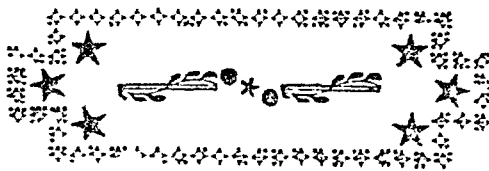
वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूवा,  
देह तिणसाठ पिण जीव गुण सठ थया ।१।

वासुदेव बलिय बलदेव केरा पिता,  
एकहीज थाय नव एण लेखे छतां ।

तीन चक्रधरतणा मिलिय वारे टल्या,  
एम त्रेसठना तात एकावन मिल्या ॥२॥

तीन चक्रधरतणी, टाल दीजे जिसे,  
मायसहु नी थई साठ लेखे इसे ।

एह नर रयणनो, ध्यान नित जे धरे  
तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥३॥



(कलश)

इम 'बुण्या तीर्थकर चक्रीमर वासुदेव बलदेव ।  
 प्रति वासुदेव मुसेव जेहनी करे सुर नर सेवण ॥  
 ए त्रेसठशलाघा पुरुष उत्तम जगे जयवता सदा ।  
 प्रहसमे तेहना चरण परज नमे मुनि वसतो मुदा ॥१॥

१ ॥ अष्टमी का स्तवन ॥

(राग) भरतरी

नमन करू महावीर ने, जगदीश्वर जिनरायजी (टेक)  
 गौतम गणधर विनवे, विनय करी जोड हाथजी ।  
 अष्टमी तप फल दाखीये, कृपाकरी जगनाथजी ॥न॥१॥  
 रीर प्रभु मपुरे स्वरे, श्रीमुख से फरमावेजी ।  
 जे नर अष्टमी तप करे, ते अक्षय मुख पावेजी ॥न॥२॥  
 जीवने आयुष मंथन, पर्वतिथि होय प्रायःजी ।  
 तेथी पर्व आराधीये, शुभगति द्रुत मिल जायजी ॥न॥३॥  
 जन्म दीक्षा आदिनाथ की, अजित जन्म मनुहारजी ।  
 समय न्ययन सुपाश्वर का, अष्टमी दिन हितकारजी ॥न॥४॥

जनसे सुमति सुव्रत, नमि आनंद हर्ष अपारजी ।  
 अभिनंदन नेमि पासजी, पहुंचे युक्ति मभारजी ॥न॥५॥  
 इण परे कल्याणक हुवे, अष्टमी दिन जयकारजी ।  
 अतीत अनागत ध्यावतां, फल अनंत अपारजी ॥न॥६॥  
 ए तिथि आराधन करी, दंड शीर्ष भूपालजी ।  
 अष्टकर्म मल वारिने, पाया मोक्ष विशालजी ॥न॥७॥  
 प्रवचन जननी आठ ने, पालो सदा दिल धारजी ।  
 मद आठों को जीत के, अष्ट सिद्धि लहो सारजी ॥न॥८॥  
 अष्ट प्राति हार्य संपजे, बुद्धिना गुण आठजी ।  
 अष्ट संगल आगे चले, अष्टमी तप ए टाठजी ॥न॥९॥  
 अष्ट पोहरी पौषध करी, चौविहार उपवासजी ।  
 मनशुद्ध पर्व आराधता, पावे मुक्ति निवासजी ॥न॥१०॥  
 सुख दाता भगवान हैं, त्रैलोक्य नाथ आधारजी ।  
 आनंद रत्ना कर कहे, अष्टमीतप जगसारजी ॥न॥११॥



२ ॥ आठम का दूसरा स्तवन ॥

अमल रुमल जिम धरल विराजे, गाजे .गौडी पाम ।  
 मेरा मारे जेहनी गुरनर, मन धरीये उल्लास ।  
 नोभागी माद्वि मेरा वे, अग्निहा सुजानी माद्वि मेरा वे ।१।  
 सुंदर मरति मृगति मोहे, मो मन अविह मुदाय ।  
 पलरु पलरु मे पंगता माने, नर नरी छरीय देखाय ।मो।२।  
 मय दृग्ध भजन जन मनरजन, गजन नयन सुरग ।  
 श्रवणे गुर्गीगुण तादरा, माहरा विरुम्या अगो अंग ।मो।३।  
 दू वही हू यायो वहीने, देव ! लतो दीदार ।  
 प्राणिया पहिटे नही माद्विया, ग्द उत्तम आचार ।मो ।४।  
 प्रन मृग्य नद विनोक्ति दृग्यित, नाचत नयन चरोग ।  
 समर हने गवि देगीने जिम, जलपर आगत मोर ।मो ।५।  
 तिराटे हरि हर विमजे नया, दिन के दिल मे राम ।  
 मेरे मन मे तू जने माद्विया, शिखनुखनोरी ठाम ।मो ।६।  
 गाता रामा भग्य विता जमु, र्थी पन्वमेन नरेश ।  
 पल्लवनी पल्लवर्मा, पन धन पाशानो देश ।मो। ।७।  
 गंधरा नरने मर नारीने वही पैनाय रगत ।  
 गदरा दिन न । नरने, मारी पाता वही परमात् ।मो।८।



सानिधकारी विघ्ननिवारी, पर उपगारी पास ।  
श्रीजिनचंद जुहारतां, सोरी सफल फलो मन आश ।सो॥६॥

## ॥ अष्टमी तीसरा स्तवन ॥

(दोहा)

पंचतीर्थ प्रणमूँ सदा, समरी शारदमाय ।  
अष्टमी स्तवन हर्षे रचूँ, सुगुरु चरण पसाय. ॥१॥

—:०:—

## ॥ ढाल १ ॥

हारे लाला जम्बू द्वीपना भरतमां, मगध देश महंतरे लाला ।

राजगृही नगरी मनोहरु ।

श्रेणिक धहु बलवंतरे लाला अष्टमी तिथि मनोहरु ॥टेरा॥

हारे लाला चेलणा राणी सुंदरु, शियलवती सिरदार ।

रे लाला श्रेणिकसुत बुद्ध छाजता ।

नामै अभय कुमार रे लाला ॥अ ॥१॥

हारे लाला वर्गणा अष्टमी एह थी, अष्ट साधे ।

सुख निधान रे लाला, अष्टमंद भाजे वज्र छे ।

प्रगटे समकित निधान रे लाला ।अ॥२॥

हारे लाला अष्ट भयनाणे एहथी, अष्ट बुद्धितणों भडार ।

अष्ट प्रवचने सपजे, चारित्रतणो आगार रे लाला । अ।३।

हारे लाला अष्टमी आराधन थकी, अष्टकर्मकरे चकचूररे ।

नमनिवि प्रगटे तमुवरे, संपूर्ण मुख मगपूर रे लाला । अ।४।

हारे लाला अड दृष्टि उपजे एह थी ।

शिवमाधन गुण अहूर रे लाला ।

विद्वना आठ गुण सपजे ।

शिवकमला रूप स्वरूप रे लाला । अ।५।



## ॥ ढाल २ ॥

जीहो- गजगृही रलियामणी, जीहो-विचरे वीर जिणद ।

जीहो-समप्रमग्ण इन्द्रे रच्यु, जी हो-सुरा सुर नोवृंद ।

जगत गुरु ! वढो वीर जिणद ॥टेर.॥

जीहो-देव रचित सिंहामण, जीहो-वैठा श्री भगवन्त ।

जीहो अष्ट प्राति दारज शोभता, जीहो भामडल भलकृत । १।

जीहो-अनत गुणे जिनगज जी, जीहो परउपकारी प्रधान ।

जीहो-रग्णा मिधु मनोहर, जीहो-त्रैलोक्ये जगमाण । अ।२।

जीहो-चौत्रीस अतिशय विराजता, जीहो-वाणी गुण पेंतीय ।  
 जीहो-शर परपदा भावसुँ, जीहो सक्रं नमावे शीण । ७३ ।  
 जीहो-मधुरीध्वनि देवे देशना, जीहो-जिम आपाट नो संह ।  
 जीहो-अष्टमी सहिसा वरणवे, जीहो-जगवंधव कहे नेह । ७४ ।

### ॥ ढाल ३ ॥

रुडीने रढीयाली रे प्रभु ताहरी देशना रे,  
 ते तो जोजन लग संभलाय रे ।  
 त्रिगडे विराजे जिन दिये देशना रे,  
 श्रेणिक वंदे प्रभु ना पाय रे, ।  
 अष्टमी सहिसा कहो कृपा करी रे,  
 पूछे गोयम अणगार रे ।  
 अष्टमी आराधन फल सिद्धनुं रे । ७५ ।  
 वीर कहे तप सहिसा एह नो रे ।  
 ऋषभनुं जनम कल्याण रे ।  
 ऋषभ चारित्र हुवो निर्मलुं रे,  
 अजितनुं जन्म कल्याण रे ।  
 संभव च्यवन त्रीजा जिनेमरु रे,  
 अभिनंदन निर्वाण रे ।

सुमति जन्म सुपाम च्यवन छे रे ।

सुप्रिधिनमि जन्म कल्याण रे ॥ ३ ॥

मुनिसुव्रत जनम अति गुण निधि रे,

नेमि शिव पद लहीयो मार रे ।

पारश्वनाथ निर्वाण मनोहर रे,

ए तिथि परम आधार रे ॥ ४ ॥

उत्तम गणधर महिमा सामली रे,

अष्टमी तिथि परमाण रे ।

मगल याठ तणी गुण मालिका रे ।

तमघर जिय कमला प्रधान रे ॥ ५ ॥

—:~:—

॥ ढाल ४ ॥

आपमगनी निरयुगति ए भापे, महा निशीथ सूत्रो रे ।

ऋषभ वश दृष्टीर्य आराधे, शिवसुख पामे पवित्रोजी ।

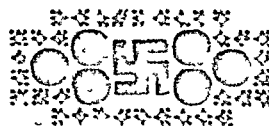
एतिथि महिमा वीरजी प्रकाशे, भणिक जीवों ने मन भासे रे ।

शामन ताहरु अनिचलराने, दिन दिन दौलत वाधे रे ।

श्री जिनराज जगत उपकारी ॥ १ ॥

त्रिसला ना नंदन दोष निकंदन कर्म शत्रु नें जीन्या रे ।  
 तीर्थकर महंत मनोहर, दोष अठारं ने वरज्या रे ॥२॥  
 मनमधुकर जिनपद पंरुज लीनो, हरखे निरखे प्रभु ध्याऊं रे ।  
 शिवकमला सुख दियो हो प्रभुजी, करुणा नंदपद पाऊं रे । ३।  
 वृक्ष अशोक सुर कुसुम नी वृष्टि, चामर छत्र विराजे रे ।  
 आसन भामंडल जिन दीपे, दुंदुभी अंबर गाजे रे । ४।  
 खंभात बंदर अतिय मनोहर, जिन प्रसाद वरणा मोहे रे ।  
 भिन्न संख्या नो पार न लहीये, दर्शन करी मन मोहे रे । ५।  
 संवत अठारह गुण चालीस वर्षे, आश्विन मास उदार रे ।  
 शुक्ल पक्ष पंचमी गुरु वारे, स्तवन रच्युं छे तारुं रे । ६।  
 पंडित देव सौभाग्य बुद्धि लावण्य, सौभागी तिण नामे रे ।  
 बुद्धि लावण्य लियो सुख संपूर्ण, श्री संवने कोड कल्याण रे ।  
 श्री संवने नवरे निधान रे, श्री जिन राज जगत उपकारी ।

परम सुखकारी ॥७॥



## ॥ आठम की दूसरी ढालो ॥

श्रीराजगृही नयरी उद्यान, अतिशय छाजे रे ।  
 विचरता वीरजिण्ड आवी विराजे रे ॥१॥  
 तिहा चौत्रीम ने पांत्रीम चाणी गुण गाजे रे ।  
 पवार्या श्रेणिक राय, बंदन काजे रे ॥२॥  
 तिहां चांसठ सुरपति आनी, त्रिगडो बनावे रे ।  
 तिहा वेसी ने उपदेश प्रभुजी सुणावे रे ॥३॥  
 तिहा सुरनर नारी तिर्यंच, निज-निज भाषा रे ।  
 भेद समझी ने भविजीव लहे सुखवासा रे ॥४॥  
 तिहा उन्द्रभृति महागज, कहे प्रभु वीरने रे ।  
 म्हो अष्टमी नो महिमा, प्रभुजी श्रमने रे ॥५॥  
 तन माते वीर जिण्ड, सुणी भविप्राणी रे ।  
 अष्टमीदिन जिनना कल्याण, धारो चित्त आणी रे ॥६॥

## ॥ ढाल २ ॥

श्री आप्तम नुँ जन्म कल्याण रे, चारित्र लहे शुभ जान रे ।  
 तीजो समव नुँ निर्माण, भवि ! तुमे अष्टमी तिथि सेवो रे ॥  
 गेट्रे शिवप्रभु मलवानो भो. ॥म. ॥२१॥

अजित सुमति जिन जन्म्या रे,  
 जिनसातमा शिव विसराम्या रे ।  
 अभिनंदन शिव पद पाय्या ॥स. ॥२॥  
 वीशमायुनि सुव्रत स्वायी रे,  
 तेनो जन्म कल्याण मोक्ष धायी रे ।  
 एकवीशमां शिव वितरामी ॥स. ॥३॥  
 श्रीपार्व जिन मोक्ष महंता रे,  
 इत्यादिक जिन गुणवंता रे ।  
 कल्याणक मोक्ष कहंता ॥स. ॥४॥  
 तेथी अड़ कर्म दूर पलाय रे,  
 एथी अड़ सिद्धि अड़ बुद्धि थाय रे ।  
 तेने कारण शिव चित्त लाय ॥स. ॥५॥  
 एवी वीर जिणंदनी वाणी रे,  
 सुणी सभज्या कैई भवि प्राणी रे ।  
 इत्यादिक जिन गुण खाणी ॥स. ॥६॥  
 श्री उदयसागर गुहाराया रे,  
 तस शिष्य विवेके ध्याया रे ।  
 श्री न्याय सागर गुणगाया ॥स. ॥७॥

## ॥ नवमीका नेमिनाथ जी का स्तवन ॥

श्री नेमीश्वर वट्टिये रे, जिनपर जगदाधार रे ।  
 ब्रह्मचारी शिव सेहरो रे, जादव कुल सणगार रे ।श्री ।१।  
 ममुद्र विजय नृपकुल तिलोरे शिवादेवी मात मल्हार रे ।  
 वागीशमा शासनधरणी रे, समरंता मुखकार रे ।श्री ।२।  
 सोरठ दंशे शोमतो रे, गिरिवर गट गिरनार रे ।  
 क्रीडागिरी यदुकुलतणो रे, मेरु शिखर अनुसार रे ।श्री ।३।  
 नेमीश्वर जिनवर्गतरणा रे, ज्या थया तीन कल्याण रे ।  
 दीक्षा कल्याणक ने वुरें रे, केवल ने निर्माण रे. ।श्री ।४।

— • —

## ॥ ढाल २ ॥

मीता सती सञ्जायनी राग

वन-वन सघवी टण ममेव रे,  
 गिडिया राजा राम रे मुजानी ।  
 तिलोङ्गचट पनी लूगीया रे लाल,

जिणकर्या उत्तम काम रे ।

मुजानी श्री नेमीश्वर वट्टिये रे ॥५॥



शत्रुंजय संघ कटावीयो रे,

भरुधर देश सम्हार रे ॥सु॥

लक्ष्मीनो लाहो लियोरे लाल ।

सफल कियो अवतार रे ।मु। श्री॥६।

निज शक्तो करता भला रे ।

सारग चैत्य उद्धार रे ॥सु॥

याचक जन संतोष तारे लाल ।

पम पम जय-जयकार रे ॥सु॥७॥

यात्रा करंता आवीयारे ।

पहिलो श्री गिरनार रे ॥सु॥

हय गय रथ भड परिवर्या रे लाल,

उत्सव करता उदार रे ।सु।श्री॥८॥

साधु साहमीनी सदा रे ।

करता भक्ति संभाल रे ॥सु॥

निज पूजा करता भला रे लाल,

त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ।सु॥९॥

खरतर कंवला गच्छपति रे ।

चार आचारज साथ रे ॥सु॥

सवेगी साधु वली रे लाल ।

जपता श्री जगनाथ रे । सु॥श्री॥१०॥

सत्र मिल्या पहू देशना रे ।

करना अदिक उत्साह रे ॥सु॥

सहू साथे यात्रा करी रे लाल ।

पूज्या श्री नेमिनाथ रे । सु॥श्री॥११॥

मटारे सय छामट समेरे ।

मनहर चैत्रक माम रे ॥सु॥

पुनम दिन प्रभु भेटिया रे लाल ।

पूगी मननी आश रे ॥सु॥१२॥

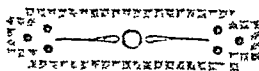
(कलश)

डम गुण्या श्रीजिनराज जग गुरु, नेमि जिनवर दुःख हरु ।

गिरनार गिरिवरं मौलिमटण, सयल सधे सहकरु ।

श्रीमत अमृत धर्म वाचरु, शिष्य प्रभु गुण मनवरी ।

मन शुद्ध चमारल्याण पाठरु, अंत्रिका सानिधि करी । १३।



॥ नैमीनाथ जी का दूसरा स्तवन ॥

नोरण आया हे सखी ! कहे नैसकुमार ।

निरखे राणी राजुलनार परणे जादवराय नैसजी । ८।

अंग फरुके हे सखी, ग्हारो जिमणो हे आज ।

कहे राणी राजुलनार, देखी वालम पाछा बल्ल्याजी । ९।

सहियां जंपे हो राजुल, थे छो राजकुमारी ।

गिरवा वचन न शील, फलसी मनोरथ सन मांसटाजी-२

नेम पूछे हो सारथी, कहो नी एकज वात ।

पशु बांध्या क्रिण काज, वाडो भयां सामटोजी । ११।

सारथी भाखे हो तुणो गढपति नैस कुमार ।

परणी जो राजुलनार, गवरो होसी तुस तणोजी । १२।

नेम भाखे हो धिग्, धिग् संसार असार ।

होसी जीवाँ रो खंगार, विपयारसरे कारणेजी । १३।

दान देई हो नैस कुमार चढ्या गढ गिरनार ।

लीनो संयस सार, पशु देखी पाछा बल्ल्याजी । १४।

राजुल जंपे हो सखी, गढपति लावोरे मनाय ।

धरणी पडी भसकाय, वात सुणी सहियाँ तणीजी । १५।

सहियों जंपे हो राजुल, थे छो राजकुमारी ।

यो छे कालो भरतार, अवर भलेरो जोवमाजी । ८।  
 राजुल जपे हो मखी, थे छो मूट गमार ।  
 इण मय्यो भरतार, अवर परणी जखरी आँसडी । ९।  
 काला हाथी हे सखी, सोहे राज दरवार ।  
 काली घटा जलनीर, काली के कम्तूरीजी । १०।  
 काली टीकी हे मखी, सोहे आख मभार ।  
 कालामे किमी मोड, जीत कीजे मनमाहे लीजी । ११।  
 दान देई हो राजुल, पहुँता गट गिरनार ।  
 लीनों मयम मार, पियु पहेली मुक्ते गयाजी । १२।  
 दम जपे हो जैतमागर गुणगाय जे गावे नरनार ।  
 जिहा घर मदा मुख उपजे, जिहा घर नवनिव मपजेजी । १३।



॥ राजुल नेमजी का वारेमासीया ॥

मीयाले म्हाट्ट (राग)

तोरगथी मय करियो रे लाल, निट्टु नेमकुमार ।  
 प्रेमविलूथी पद्मणी रे लाल, वीनवे राजुल नार ।  
 हो रगीला नेम मुख म्हारी अरदाम ॥ १ ॥

तहेल्यां मुँ राजुल कहे रे, भिगवण नाच्ये पीव ।  
 प्रीतम विन हिच माहरो रे ।  
 वीरज न धरे जीव हो नेम ॥ सु. ॥ २ ॥  
 पौप महीनो आवियो हो, आयो वो देख देण ।  
 तो खरतने सांदला हो, देखण तरसे नयन हो । ३ ।  
 माहमहीने सीपडे हो, पीयु संग पोटे नार ।  
 प्रीतम विन हं एकली हो, केव रहं निराधार हो । ४ ।  
 होली खेले हेत लुँ हो, आयुण में नर नार ।  
 हं क्रिया लुँ खेलूँ हिचे हो, पास नहीं भरतार हो । ५ ।  
 चैतमहीने चांदणी रे, संजोगण मुख देण ।  
 विरहण ने वालम विना रे, रोवत जावे रेण हो । ६ ।  
 वन हरिया वैशाख में हो, मंजिरी रही महकाय ।  
 अरज सुणी अवला तणी हो, तपुत सीटावो आय हो । ७ ।  
 जेठ तपे लू आकरो हो, दाजे कोमल गात ।  
 सस्नेही साहिब विना हो, कुण पूछे मुक्त वात हो । ८ ।  
 आपाटे काली वटा हो, उनसी आयो मेह ।  
 कंत मिल्या निज नार लुँ रे, धरती मिलिया मेह हो । ९ ।  
 आवण चमके दामनी हो, घन वरपे झडलाय ।

इण ऋतु सुतां एरुली हो, क्युंकर रैण विहाई हो । १०।  
 काली कलायण मिलि हो, मांदरवे वरपत ।  
 अरज सुणीने साहिवा हो, पूरो मां मन संत हो । ११।  
 आमोजे आसु भरे हो, नाथ विना निश दीश ।  
 सार न पूछी माहिबे हो, राखो रह्यो मन रीस हो । १२।  
 काति दृढ छाती करी-हो, जाय मिली गिरनार ।  
 देखी मुख निजनाथ नो हो, सफल गिणे अवतार हो । १३।  
 समयले पीयु हाथ से-हो, -पामे भवनो पार ।  
 इण परे पाले प्रीतडी'हो, धन-धन ते नर नार हो । १४।  
 जे कीधी पशु उपरे हो, मो'पर करजो देव ।  
 चन्द मणी त्रो करी दया ही, प्रभु चरणों नी सेव हो । १५।

### ॥ नेमजी का स्तवन ॥

काटो लागो छे मारे (राग)

द्वारापुरी नो नेम राजियो, तजीछे जेण राजुल जेधीनारं ।  
 गिरनारी नेम समय- लीधोछे, धाला वेपमा ॥  
 भाभिये मेणा तेने- मारिया,  
 परणे चालो श्रीकृष्ण नो वीर रे ॥ गि. ॥ १ ॥

मंडप परच्यो छे मध्य चांकमां,  
 हरखियुं छे शौरीपुरी नो लोक रे ॥गि.॥२॥  
 गोखे थी राजुल सती जोई रखां,  
 क्यारे आवे जादव कुलदीप रे ॥गि.॥३॥  
 सासुए पोखण कीधा नेमना,  
 व्हालो मारो तोरण जोवा जाय रे ॥गि.॥४॥  
 पशुडाए नेमने पुकारिया,  
 उगारजो व्हाला राजुलना कंत रे ॥गि.॥५॥  
 नेमजी ए शालाने बोलावियां,  
 शाने करे छे पशुडा पोकार रे ॥गि.॥६॥  
 बेनी राजुल हमारी परणशे प्रभाते,  
 देई शु गोरोव नो भोज रे ॥गि.॥७॥  
 तोरण थी रथ पाछो फेरव्यो,  
 जई चढया छे गिरिगुफा मोभार रे ॥गि.॥८॥  
 राजुल रुवे छे मेली ध्रुसके,  
 रुवे-रुवे छे शौरीपुरी नो लोक रे ॥गि.॥९॥  
 माताए राजुल ने समजाविया,  
 अवर देईसुं नेम सरिखो भरतार रे ॥गि.१०॥

पीयू ते नेमः गुरु धारिया,  
 बीजा देखू भाई ने चाप रे ॥गि॥११॥  
 जमणी आंखे श्रावण संरवडे,  
 डावी आंखे भादरवो भरपूर रे ॥गि॥१२॥  
 चीर मीजाया राजुल नारना,  
 वागे छे कई कने अपरंपार रे ॥गि॥१३॥  
 जैन तीर्थंकर बांवीशमा,  
 मसीयो कहे अवर न मिले जोड रे ॥गि॥१४॥  
 कीर्ति विजय नी विनति,  
 लब्धि विजय कहे कर जोड रे ॥गि॥१५॥

—:~:—

॥ दशमीका-पार्श्व जिन स्तवन ॥

पास जिनेसर भगति लीए, गवडीपुर मडग गुण निलीए ।  
 म्त्तन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वछित पूरो माहरो ए ।१।  
 नयरीनाम बनारसी ए, सुर नयरी जिम रिद्धे वसी ए ।  
 तेषापुरी छे दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ।२।  
 वामा तमु घर नार ए, तमु गुणहि न लव्मे पाए ए ।  
 तमु उयर अनतार ए, तमु अतिशय रूप उदार ए ।३।



चवद सुपन तिण निशि लह्या ए ।  
 अनुक्रम करिते सहु मन ग्रह्या ए ।  
 पूछे भूपतिने कह्या ए, करजोडि कह्या ते जिम लह्या ए ।४।

## ॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, माय तणो मन हरख्यो ।  
 बीजे वृषभ उदार, धरणी जिण धर्यो भार ॥५॥  
 तीजे सिंह प्रधान, जसुवल कोय न मान ।  
 चउथे देखी श्री देवी, कमल वसे सुर सेवी ॥६॥  
 पांच में पुष्पनी माला, पञ्चवरण सुविशाला ।  
 छट्ठे दीठोए चन्द, ग्रहगण केरो ए इन्द्र ॥७॥  
 सातमें सूरज सार, दूर कियो अन्धकार ।  
 आठ में धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥८॥  
 नवमें पूरण कुंभ, भरियो निरमल अरुम ।  
 देखी सरोवर दशमें, मन थयो अति विसमें ॥९॥  
 समुद्र इग्यार में ठामे, खीर जलाधि जसुनामे ।  
 बार में देव विमान, वाजिंत्र ध्वनिगीत गान ॥१०॥  
 तेर में रत्ननी राशि, दहादिशि ज्योति प्रकाशी ।

सुपन चवद मे।ए दीठो, पात्रक धुमंथी मीठो ॥११॥

सुपन कथा सुविचार, हरख्यो भूप उदार ।

पुत्र रत्न होस्ये ताहरे, यास्ये उदय हमारे ॥१२॥

॥ दोहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख क्रियो सुविचार ।

सुन्दर सुत तमे जनमस्यो, कुल दीपक आधार ॥१३॥

गामा प्रीतम वचन सुणी, आवी मन्दिर भक्ति ।

देत्र सुगुरु कीरत करी, जनम क्रियो सुकयत्य ॥१४॥

इण अनुक्रमे उग्यो दिवस, कीधा सुपन विचार ।

ते घरि पढंता आपणे, दीधा दान अपार ॥१५॥

॥ ढाल ३ ॥

हिन जनम्या जगतगुरु, जगत्र हुवो जयकार ।

खिण इक नारक्रिये पायो सुख अपार ।

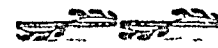
दिशि कुमरी मिल कर स्रुतिकरम निशिकीव ।

करी थानक पुहती वाञ्छित तेहनो मिद्ध ॥१६॥

निगाहिन निशि चौमठ इंद्र मिली तिहा आवे ।

लेई निज भगते, सुरगिरि स्नात्र करावे ।  
 करि जन्म श्छोच्छ्रव, जननी पासे ठावे ।  
 तिहाथी सुर सब मली दीप नन्दीसर जावे ॥१७॥

इम रयण विहाणी उगो दिवस उदार ।  
 घर घर गाईत्रो कीजे मंगलाचार ।  
 इग्यारम दिवसे मिली सहु परिवार ।  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥१८॥  
 प्रभु वाधे दिन दिन कला करी जिमचन्द ।  
 त्रिहुँ ज्ञान विराजित रूप जिसो देविन्द ।  
 गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधान ।  
 यौवन वय आयो परणायो राजान ॥१९॥



## ॥ ढाल ४ ॥

कुमर पदे प्रभु रहितां काल सुखे गमं ए ।  
 आयो मन वैराग्ये संयम लेवा समं ए ।  
 तव लोकान्तिक देव जणावे अवसरु ए ।  
 देई संवच्छरी दान याचक जन सुखकरु ए । २० ।  
 स्वामी संयम लेई इन्द्रादिक सहु मिल्या ए ।

देश विदेश विहार करी कर्म निरदन्या ए ।  
 पामिय केरल ज्ञान गुणे महिमा करी ए ।  
 वापिय चउविह भय मुगति रमणी ररी ए । २१।

(कलश)

प्रथम

इम श्री गांठी पाम तण गुणा जे नर गावे ।  
 ते नर नारी इह परलोक मुवद्धित पावे ।  
 सप्तकरी भवपति जिके गवटी पुर जावे ।  
 चार घाट भक्त टले विघन घुराई न आवे । २२।  
 धरणीय पडमात्रड जाम वहे मिर आण ।  
 सावल परण मुगोमित नवरु क्वाय प्रमाण ।  
 रूपवृत्त चिन्तामणि कामगवि समतोले ।  
 श्री गुरुजोसर सीस ममय रंग इण परिवोले । २३।



श्री गोडी पार्श्वनाथ बृहत् स्तवन ॥

दोहा

श्री जिन वदन निवासिनी, सरस्वती समरेह ।  
 तीर्थकर तेवीसमा, गुण गाइश गुणगेह ॥१॥  
 गुण गिरुवा गौडी तणां गाजे गौडी राय ।  
 सङ्कट हरण संपत्ति करण, समर्या करे सहाय ॥२॥  
 समकाले प्रतिमा तिहां, शुभ मुहूर्त शुभ वार ।  
 महिमा पसरी महितले, प्रगटी पाटण मझार ॥३॥  
 परचा श्रीप्रभु पार्श्वनां, प्रगट थई प्रतिमादि ।  
 मति सारू छोड मद, आखिस गुण आल्हादि ॥४॥

॥ ढाल १ ॥

देशां सहु शिर देश छे काशी,  
 नगरी बनारसी वासीरे जिनवर जयकारी ।  
 जाऊं जेहनी वारी रे जिनवर जयकारी ॥१॥  
 राज्य करे अश्वसेन नरिन्दा,  
 तेज रूपे अभिनव इन्दारे ।

शुभ की खाणी मीठी खाणी,  
नम्र धारिणी नामा गणी रे ॥१॥

जानी जने प्रभु प्यवनरिया,  
नेत्र नर मुगुग परिवरिया रे ।

पोष पटी दगमी दिन प्रभु जाया,  
नेत्रे रवि नेत्र दगपारे ॥२॥

एक दिन तुमारी मनी गावे,  
एक एक नागरिया मुनपावेरे ।

उन्म महोन्मव इन्द्रा कीनो,  
निहा पान्थ तुमार नामटीनोरे ॥३॥

गौरव रव कन्या परगाई,  
प्रकारकी नाम सहाई रे ।

दिगणी प्रभु नयम नीनो,  
पानी केरव अरुण पट नीनो रे ॥४॥

दिगणी प्रभु नयम नीनो,  
पानी केरव अरुण पट नीनो रे ।

ज्योति रूप जन्म ज्य कीनो,  
अजर अमर पद लीनो रे ।

पूजीजे प्रभु टामो टामे,  
गौडी राजे गोडी गामे रे ॥६॥

सुग भवियण तुम गौडी केरा,  
शुभ भाव से विंच अलेरा रे ।

॥ ढाल २ ॥

थापीरे प्रतिमा तीन अहमदावाद में ।  
इण सम विंच न कोय, दीठोरे पृथ्वी तले ॥  
गोडी पार्श्वनी प्रतिमा तुरक ले संग्रही ।  
धरती खणने तेह राखी प्रतिमा सही ॥१॥  
एक दिन स्वप्न सांहि, आवी यत्त ते कहे ।  
गोडी पार्श्वनो विंच ते धरतीमां रहे ॥  
प्रगट करजे तेह तुरत तूँ तुरकडा ।  
नहीं तर पडसी भीड़ देखीस दुख वांकडा ॥२॥  
परिकर वासी भेषो पाटण आवशी ।  
अत्त तिलक लिलाडते, अहिनाण वावसी ॥

पान्च जिनेसर रेगी, प्रतिमा डेयजे ।  
 दृग पांचजे दामके गुणने लेयजे ॥३॥  
 मनमे टरते पात, मरु चित्त मन्ही ।  
 मुद्रना माही यत्तगाय, ते मरु कही ॥  
 द्विच मेघाके हाय रे, बिम्ब जिनेसर तर्गा ।  
 खर्गी रिम रिध ण्ढ, पणिर भवियण्ण ! मुणो ॥४॥

॥ टाल ३ ॥

इन्द्रिय मन मुत्तेर मे, परिवर नामे देण रे ।  
 गर दगां मिर नेहरी, नहीं तिहा दुग प्रवेण रे ॥५॥  
 मरुत एं विण मरुती, नृपति गय मेणार रे ।  
 गर धार मति माहमी, आवि दगां परमाण रे ॥६॥  
 रिं देणे मरु नगर छे, मरु मर तिहा गाम रे ।  
 मरुती माहि मने मिर, विधि मरुती विन्वर मुद्राम रे ॥७॥  
 रिं देणे मरु मरु मरु नामे छे, मरुती मरु रे ।  
 मरुती मरुती मरुती मरुती, मरुती मरुती मरुती रे ॥८॥  
 मरुती मरुती मरुती, मरुती मरुती मरुती रे ।  
 मरुती मरुती मरुती, मरुती मरुती मरुती रे ॥९॥



माहो मांही सुखे वशे, ममावे दिन रात रे ।  
 एक दिवस सेवा भणी, काजल भांखी वात रे ॥५॥  
 धन लेई इहांसे घणो, जायो व्यापार काज रे ।  
 मानी वात शाह मेघजी चाल्या तुरत ममाज रे ॥६॥  
 वहताने सउण सम्वरा हुवा, यासी सहु काम सिद्ध रे ।  
 पाटण के रे चौहटे, तिहां लेशी नव निद्ध रे ॥७॥  
 उतारा सेवे किया, डेरा तम्बू ताण रे ।  
 राते स्वप्न में कछो, तिहां आवी यत्तराण रे ॥८॥  
 तुरक धरे जिनवर तणी, मूरती महिमा वन्त रे ।  
 दाम पांचसे देईने, लेजो मन धरी खंत रे ॥९॥  
 यत्त पहुंतो निज थानके, निशि गई ऊगो भाण रे ।  
 पाटण केरे चहुंअटे, तुर्क करे छे विनाण रे ॥१०॥  
 जितने दीठा शाह मेघजी, सहु पहुंता सहिनाण रे ।  
 चालो मुक्क घर शाहजी ! थाने देखाऊं जग भाण रे ॥११॥  
 हर्ष भराणो हियडे, आवे असुरनेहुं गेह रे ।  
 झलहल तेज विराजतां, देख्या जिनवर तेह रे ॥१२॥  
 यह मूर्ति राखो तुम्हें, दो मुक्क पांचशे दाम रे ।  
 वचन सुण्या अमृत समा, हुलस्या आतमराम रे ॥१३॥

॥ ढाल ४ ॥

तुफने दाम दिया पांचसे,

जिन विन लिया मन हेर्प रे ।

म्हारी भाग्य दशा आज जागी,

भाग्यदशा आज जागी म्हेतो आज हुवा बडभागी रे ॥८॥

मावठ मनदारी भागी, प्रभुजी से अतर लय लागी रे ।

ममता रूप सौभागी, दिल रज्जनने निरागी रे ।१।

निमल मुद्रा पैरागी, तजी भोग हुवा प्रभु त्यागी रे ।

अरुल ध्वरूपी अथागी, मे तो पायो जिनपुर पागी रे ।२।

मनना मनोरथ फलिया, मने तेनिममा जिन मलिया रे ।

मोतीडे बुढा मेहो, म्हारे प्रगटयो मुरतरु मेहो रे ।३।

दीठी प्रभुजीनी देहो, म्हारा नयन मराणा जाजा स्नेहो रे ।

हुवा अविऊ, उछाहो, चित्तडानी पुगी चाहो रे ।४।

निरुपम त्रिभुवन राया, म्हेतो पुएवे प्रभुजी पाया रे ।

दुःख दोहग परजलिया, म्हारा वखत अमोलख फलियारे ।५।

गुणमणी गुण गढ गायां, म्हेतो पार्श्व जिनेश्वर पाया रे ।

माता धामाराणी जाया, जय जय तू त्रिभुवन रायारे ।६।

त्रिण प्रदिक्षण दीधी, कर लटकै वंदना कीधी रे ।  
 द्रव्य भाव पूजा कीधी, महु हंस हियानी सीधी रे । ७।  
 दाम देइ रू तिहां लीधो, मन मान्यो कारज सीधो रे ।  
 रूका भरिया ऊंट तेवीस, मांहे वंसाडया जगदीश रे । ८।  
 पाटण हूँति सिधाया अनुक्रमे राधनपुर आया रे ।  
 दाणलेवा दाणी आया, अति हर्ष भराणी काया रे । ९।  
 गिणतां ऊंट जेलेखे ओछो अधिको मेघा एक देखे रे ।  
 दाणी मन आश्चर्य पाया, तव मेघाने जुलाया रे । १०।  
 शाह मेघो कहे सांभल दाणी, हम मूर्ति पार्वनी आणी रे ।  
 ते मूर्ति राखी रुमांहे, घणा जतनासुँ उमाहे रे । ११।  
 ए मूर्ति प्रभावे, हमने यह अचरज आवे रे ।  
 दाणी जिन विंज दीठो, चित्तडामें लागे अति मीठो रे । १२।  
 पूजा करी करी प्रणाम, दाणी छोड गया निज ठाम रे ।  
 तिहांथी भूदेसर आया, नरनारी हर्ष सवाया रे ॥१३॥  
 सहु जन मामा आया, नर नारी मङ्गल गाया रे ।  
 मोती भर थाल वधाया, वली जीत नीशाण घुराया रे ॥१४॥  
 पूजा प्रभावना करी अपार, मांहे थाप्या जगत आधार रे ।  
 संघ सहूमन अति हरखे जिन विम्ब नयणे निरखे रे ॥१५॥

शाह मेघेरा मनोग्य फलिया, शुभ मावे प्रभुर्जा मिलिया रे ।  
 जिनवरना यश गावे, दिन दिन दीपे वधावे रे ॥१६॥  
 मयत चवदे प्रतीसे, कार्तिक सुदी वीज शुभ दिवसे रे ।  
 शुभ मुहूर्त म्यावर वारे, म्याप्या सघ मरुल आधार रे ॥१७॥

### ॥ दोहा ॥

मेवाशाह की भार्या, मृगा नयनी नाम ।  
 गुणवन्ती ने रागिणी, सुन्दर अति अभिराम ॥१॥  
 तेहनी कवे अयतर्या पुत्र रतन सुखकार ।  
 मेरोने महिओ विहु, देव कुमर अवतार ॥२॥

—:~:—

### ॥ ढाल ५ ॥

एक दिन मावे हो काजल मेघने, सामल मोरी वात ।  
 नाणो हमारो लट्टि करी, तुम गये थे गुजरात ॥टेरा॥  
 वे लेयो आयो विरग सुद्धा हपने, नहि तर टूटमी प्रीत ।  
 प्रलतो मेघो फरे काजल ! सुगो धनसुख्यो धर्मरीत ।१।  
 पाचसे दामे हो मृति मनोहर, ह्ये लीनी मनरुद्र ।  
 कहे काजल ओ पत्यर रिम कामको, अहारे धन जु रत्न ।२।

मांही मांहीं ऋगडता दोनुँजणा वीते चारह वर्ष ।  
 सगपण हुंति हो धन संसार में, ब्हालो विश्वाशीम ।३।  
 ऋगडा ने विचमें मूर्ति पार्श्वनी, पूजे शेट धनराज ।  
 तिण समये गौठीने सुपनो दियो, करजे एह उपाय ।४।  
 नगरीको नाश हुंतो में जाणियो, आयो तुर्त इण ठाम ।  
 इकदिन निश्चल पणोसुँ निर्मल पणे, धरजे धणीकूँ आय ।५।  
 स्थल वोहला हो पर्वत सारिखा, दीसन्ता विकराल ।  
 तिण समये एकलठो रथ तूँ खेडजे, निडर थइ तत्काल ।६।  
 वहतां जिण स्थान के रथ थंभी जे, तिहां लेजे विश्राम ।  
 श्री पार्श्व नाथनो विंव तूँ स्थापजे, चैत्य करे अभिराम ।७।  
 जिण समय गोठीने सोच उपन्यो, पाणी नहीं पाषाण ।  
 सूनी रोहीने विन धन देवल तणो, कैसे मंडावुँ मंडाण ।८।  
 श्री पार्श्वनाथ प्रसाद थी, होसी वातरसाण ।  
 सब वृतान्त स्वप्नमांहे कही, यत्त गया निज स्थान ।९।  
 ग्रह उठी शेट रथ जोतरे, ऊपर ठवियां साम ।  
 चारहकोस भद्रेसर हुँती आया, थंभाणो रथ ठाम ।१०।  
 चिन्तातुरने मारग खेदथी, आई नींद तिणवार ।  
 तिण समय सेवक ने स्वामी तणा, सुणिये शेट महराय ।११।

## ॥ ढाल ६ ॥

मुण मुण मुगुण मनेही शेटजी, मीठी माहरी वाणी जी ।  
 जाना दक्षिण दिश भणी, तिहा पडियो नीलो छाण जी ।टेर।  
 तिहा सणजे धरती भूमिका, अमृत सम प्रगटणे नीरो जी ।  
 तिहा रुने धवला आकडा, तेहने हेठे धन छे धीरो जी ॥१॥  
 स्वम्तिक मोपारी तणा, टीसे के सहनाणो जी ।  
 सिरोही सिलावट वसे, तेहने तुम इहा आणोजी ॥२॥  
 हिचे स्वप्ना माही यत्न जी, मिलावट ने जणाय जी ।  
 देवल करे जो तूँ पार्श्व नो, तो नीरोगी थाय जी ॥३॥  
 नेटी मिलावट आपियो, शेट दियो मन्मान जी ।  
 पाणी पापाण प्रगटिया, पली प्रगटयो निधान जी ॥४॥  
 श्री जिन भयन ना काम मे, कोड न करजे काण जी ।  
 आये मृदुर्त शुभ दिने, मटायो मण्डाण जी ॥५॥  
 मनोहरणी करी कोरणी, वर्णन करयो नहि जायजी ।  
 सुखता तन मन उल्लसे, नयन रया लोभायजी ॥६॥  
 उत्तम तीर्थ यमिनयो, रचियो मेधे गाहोर्जा ।  
 नाग प्रथम प्रसाणीयो, लोग रुहे राह राहो जी ॥७॥

धोरी धर्म रो इण जुगे, मेघो चढते भावेजी ।  
 गांडी गाम गुनोहुंतो, तेतो तुर्त वसावे जी ॥८॥  
 गोडी गामरं नामथी, गांडी पार्श्व कहायोजी ।  
 इंडो हजेय चढयो नहीं. विच में थयो अन्यायो जी ॥९॥  
 हिवे काजल मेघाने क्रिण विध करसी वातजी ।  
 भावी पदारथ नहीं टले, सुणजो आगल वातजी ॥१०॥

### ॥ ढाल ७ ॥

काजल सब लोकांरी साखे, मेघाने इम मांखे रे ।  
 वात होवण वाली। नहीं टले, होवण हारसुँ जोर न चाले ।  
 कांड न लागे कारी रे ॥टेर॥  
 लागी धन जे देहरा सारुँ, आपो आधो इण वारुँ रे ।  
 मेघो कहे पार्श्व मूर्ति पाई, सुभ्र घर कमी कांडरे ।१।  
 पार्श्व स्वामी के परसादे, दिन दिन नव निधि बाधे रे ।  
 मननी वात मेघा सब भासी, तव काजल रह्यो विमासीरे ।२।  
 माणस जब मेघाने बखाणे, तव काजल दुंग्र आणे रे ।  
 किसही विध मेघाने मारुँ, मन चित्या कारज सारुँ रे ।३।  
 वात सहु मनभांहे ध्यायी, परपंच रचूँ बणाई रे ।

पुत्र को पित्राह रचावे, मेघाने बुलावण आवे रे । ४।

यक्षराय निज स्वप्ने आवे, मननी वात वतावे रे ।

दूध भोजन माहि विष जो देशी, पापी प्राणज हरसी रे । ५।

जो तूँ जावे तिणरे माथे, तो तूँ जमण कर लेजे हाथे रे ।

तिहा दूध भोजन मत करजे, वात सह मन सदहजे रे । ६।

यक्षगाय निज स्थानक पूगो जितने सूरज उगो रे ।

दिन उगा मेघाने बोलावे, तब काजल धर आवे रे । ७।

आदरमान अतिक्र दिलावे, युक्ति सुं भोजन जिमावे रे ।

विष मेल कर दुधज टीनो, ते पिण मेघा पीनो रे । ८।

दूध भोजने मेघो मरणज पामी, तत्क्षण ह्रवो सुगति गामीरे ।

मापीपश वात याद न आई, जे यक्षराय वताई रे । ९।

मेहगेने महियो आवे, देखीने अति दुख पावे रे ।

द्रोह करी कुल तिलकज मारयो, काजलभूडो पिचारयोरे । १०।

यह कार्यवहनी ? मं नपिकीनो, माणस दोष मृक टीनो रे ।

लोग सह तं फिट फिट भासे, मुखा मुखी डम टासे रे । ११।

होनहार मुं जोर न चाले, डम वहिनी मन चाले रे ।

मेहगेने महियो वीरज वारे, मरण मेवागे मुवागे रे । १२।

काजल मय तिहा मंय बोलावे, देवल डटो चटावे रे ।



देवल इन्डो चढायो, पड़ने धरती आयो हे । १३।  
 वीजी वार तीजी वार चढ़ावे, शिखर उपर नहीं टावे रे ।  
 जितने यज्ञ ऊचरी वाणी, तेषिण सबले जाणी रे । १४।  
 मेहरोने सहियो जो इन्डो चढासी, तो इन्डो स्थिर रहसी रे ।  
 देवल शिखरे इन्डो चढायो, पुण्ये अचरिज पायो रे । १५।  
 संशत चवदेने चम्मालिस शुभ सूहूर्त शुभ दिन वार रे ।  
 देवविमानसम देवल दीठो, तन मन नयणे लागे मीठोरे । १६।  
 देहरे प्रतिष्ठा प्रभुनी कीधी कीतिं जगमां लीनी रे ।  
 महीयले तीर्थ जेह रचायो स्थान स्थान में टायो रे । १७।  
 यह तीर्थ मेघे शाह रचायो, नामे आश्चर्य पायो रे ।  
 मेघा सुतनो मनोरथ सिद्धो, द्रव्य खर्ची यशलीधो रे । १८।  
 सुर असुरने कोडा कोडी, सेव करे कर जोडी रे ।  
 मद मत्सर मनसु सहु छोडी, गावे गौडी गौडी रे । १९।



## ॥ ढाल ८ ॥

म्हारि महियाए जय ॥ जय जग गोडी धणी ।

एकल मिल अगीह, म्हारी सहियाए जय ॥८॥

दुस दोहग भजन धणी, साचो साहिव एह ॥९॥

देश विदेश काड फिरो, काड करो मन मे विचार ॥१०॥

एक मने तुम भविजना, सेगो श्रीजगन आधार ॥११॥

पुत्र अपुत्रिया ने देवे, निर्धनिया धन देह ॥१२॥

परचा पूरण टण युगे, सुरतरु सम प्रभु एह ॥१३॥

आज घडी सु धन्य घडी, आज जन्म सुप्रमाण ॥१४॥

परचा पूरण पायर्न जी, स्थिर चित्त स्थलनो राण ॥१५॥

### (कलश)

सप्त अठारह पचवीश वर्षे, चैत्र शुक्ल पचमी दिने ।

धरणेन्द्र ध्यायो गुणही गायो, हर्ष घरी शुभ मने ॥

पाठक क्षमा प्रमोदे शिष्ये, अनोपचद सुरमणी ।

मम पाचमे यह स्तवन कीनो, धरल धिंग गौडी धणी ॥



## ॥ श्री पार्वनाथ का स्तवन ॥

प्रभुजी हो बनारसी नगरी में, रिद्धि सिद्धि सबली पाई हो ।

जयकारी जिनराज, उपकारी जिनराज बना. जिणंद हो ।

प्रभुजी हो माता वामाराणी ने, चउदे रुपना लाधा हो ।

जयकारी जिनराज, उपकारी जिनराज, बना. जिणंद हो ॥१॥

प्रभुजी हो पोष वदी दशमी ने, पार्व प्रभु जन्मया हो ।२।

प्रभुजी हो शिखर चटीने, सोवन थाल बजायो हो ।

जय. बनारसी. हो जिणन्द ॥३॥

प्रभुजी हो सोनेरी छुरियां सँ, प्रभुजी को नालो परनाल्यो हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो जि. ॥४॥

प्रभुजी हो सोने की झारी, रुपेरे कुण्ड नहवाया हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो जि. ॥५॥

प्रभुजी हो पानीरे बदले दूधों सँ नवराधा हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥६॥

प्रभुजी हो पहिले पीताम्बर, जिनजी रे अङ्ग लेपेटयो हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥७॥

प्रभुजी हो धर्म पालखडी, माताजी के पास पोढाया हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥८॥

प्रभुजी हो इन्द्र इन्द्राणी, मिलके महोत्सव कीना हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥६॥

प्रभुजी हों चोरखारे बदले मोतीडामुं बधाया हो ।

ज जि उ. म. व. हो जि० ॥१०॥

प्रभुजी हो हिवडे आपरे, जैन धर्म की कुची हो ।

ज जि. उ. म. व. हो. जि० ॥११॥

प्रभुजी हो कर्णी आपकी, नवली अधिकी उची हो ।

ज. जि. उ म. व. हो. जि० ॥१२॥

प्रभुजी हों परमत माहि, नाग-नागिणि तारया हो ।

ज. जि. उ म. व. हो. जि० ॥१३॥

प्रभुजी हों वीम परम में, परण्या सुन्दर नारी हो ।

ज. जि उ म. व. हो. जि० ॥१४॥

प्रभुजी हों तीस वर्ष में, राज पाट सन छोडया हो ।

ज. जि. उ. म व. हो. जि० ॥१५॥

प्रभुजी हों मो जपों से आऊरों, सबलोही पायो हो ।

ज. जि. उ. म. व, हो जि० ॥१६॥

प्रभुजी हों स्तन मुनीवर स्तवन बनाया हट भारी हो ।

ज. जि उ म. व. हो जि० ॥१७॥

प्रभुजी हो मूर्ति आपकी, श्याम वरन में सौंहे हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥१८॥

प्रभुजी हो दान शीयल तप भावना दिल में धारी हो ।

ज. जि. उ. म. व. हो. जि०

वनारसी नगरी में रिद्ध सिद्ध सधली पाई हो ।

जिनन्द, जयकारी जिनराज उ. म. व. हो. जि० ॥१९॥

॥ श्री मल्लिनाथ की ढालो ॥

नव पद समरी मन सुधे, वली गौतम गणधार ।

सरस्वती माता चित्त धरूँ, वाधे वचन उदार ॥१॥

मल्लिनाथ उगणीसमा. जिनवर जगमें जेह ।

गुण गाइश हूं तेहना, सुगुण सुखों धरि नेह ॥२॥

कोण देश कोण नगर में, कोण पिता कोण मात ।

पांच कल्याणक परगड़ा, विगत करी कहूं बात ॥३॥

॥ ढाल १ ॥

इण हीज जम्बू द्वीप, क्षेत्र भरत सुखकारी ।

नगरी मिथिला नाम, अलकाने अनुहारी ॥टेरा॥

तिहा नृप कुँम रुहाय, राणी प्रमावती नामे ।  
 शियल गुणे अभिराम, जस पसर्यो ठामे ठामे ।।१।।  
 एक दिवस ते नार, सूती सेज मंकारी ।  
 देवी चवटे सुपन, ते जागी तिण वारी ।।२।।  
 पति ने पढौती पास, सुपन सह ते कहिया ।  
 नृप हर्गयो मन माहि, अनुपम एये लहिया ।।३।।  
 सुपन तणे अनुमार, पुत्री होस्वे पुण्यवती ।  
 अर्थ सुणी ने एह, घर पोहती गह गहती ।।४।।  
 रुहुँ पूर मज वात, तिहायी चरि ने आया ।  
 रीतशोका नामे नगर, महावल नाम कढाया ।।५।।  
 ने मिलया छण मित्र, सह मिली दीक्षा लीवी ।  
 महावल उचे मित्र. तप मे माया कीधी ।।६।।  
 म्यानरु सेव्या वीम, गोत्र तीर्थद्वर वाध्या ।  
 म्नीवेद उदार, पुण्य मे पाप न माध्या ।।७।।  
 अगमग्न करिय निगवार, जिग धर्मगुँ लयलाट ।  
 छण जीव जयन्न विमान, मुन पदरी तिहां पाट ।।८।।



## ॥ ढाल २ ॥

तिणहिज जम्बूद्वीपमें रे, भरत क्षेत्र कहवाय रे ।  
 छए मित्र तिहां जई उपना रे, ते सुणजो चित्तलाय रे । १८।  
 पडिबुद्धा इक्ष्वाकमें रे, चन्द्र छाया अङ्गराय रे ।  
 शंख काशीनो राजियो रे, रूपी कुणाल कहाय रे । तेसु । १९।  
 अदीन शत्रु कुरु देशमां रे, जितशत्रु पंचाल कहाय रे ।  
 जयन्तथी चवि ते सहु रे, इहां अवतार लहाय रे । तेसु । २०।  
 महाबल जीव तिहां थकी रे, पुण्यवंत परधान रे ।  
 फागुण सुदी चौथने रे, चविया श्री जयन्त विमान रे । तेसु । २१।  
 प्रभावती उर अवतयो रे, मास हुआ जय तीन रे ।  
 दोहलो एहवो उपन्यो रे, विन पूरयां रहे दीन रे । तेसु । २२।  
 जल थल उपन्या फूलनी रे, सोवुँ सैज विछाय रे ।  
 पंचवरण फूलनो चंद्रवो रे, सुगन्ध स्वरूप सुहाय रे, तेसु । २३।  
 नवसरियो हार फूलां तणो रे, हुं पहिरुँ मनरङ्ग रे ।  
 वाणव्यन्तर तिहां देवता रे, पूरे तेह सुरङ्ग रे । तेसु । २४।  
 मिगसर सुदि इग्यारसे रे, जाई पुत्री रत्न रे ।  
 अर्ध निशा वित्यां पछी रे, माताजी हरख्या मन्न रे । तेसु । २५।

॥ डाल ३ ॥

छप्पन कुमारी आई तिहां हर्षे, जिनवर वन्दि पाय जी ।  
जन्म महोच्छ्रय करिय जुगतिसे, गई निजगृह मतिलायजी ॥  
चौमठ डद्र तिके पिण आवी, मेरू शिखर न्हवराय जी ।  
गीतमपुरी धुनि नाटक करके, मूकिया निज ठाम जी । १।  
द्विज परमात थयो कुम्भराजा, जन्म महोत्सव कीध जी ।  
दशोदण वह जनने जिमावी, मल्ली कुमरी नाम दीध जी । २।  
एकशत वरस थया केही ऊणा, अवधि प्रयु जी ताम जी ।  
पूर्व भव छए मित्रा केरा, लहीये आगम नाम जी । ३।  
ते मुक रूपे मोह्य सबला, आमी उण हीज ठामजी ।  
दम जाणी कुमरी गृहमाहे, कनक मूर्ति करि ताम जी । ४।  
मस्तक भेदी करल एक भू के, आप जीमे तिण वार जी ।  
द्विजम केतने दुर्गाव प्रगटी, मित्रा द्विखाय उछाह जी । ५।  
ते देवी छण मित्र प्रति वृभया, सहु गया निज निज गेह जी ।  
द्विजे मल्लि दीचा अग्रमर जाणी, दे वरमी दान नेह जी । ६।



## ॥ ढाल ४ ॥

मिगसर सुदी इग्यारस आविया, तीनसै नर लेई साथ ।  
 तीनसै नारी हो वली लीधी दीक्षा, छोड़ी सहु घर आथ ।टेर।  
 तिण हीज दिन संध्या समय थयां, लहियो केवल राज ।  
 तत्क्षण समवसरण देवा रच्यो, सीधा सगला ही काज ।१।  
 परषदा वारे हो मिल बैठी, तिहां सुणे धर्म धरि नेह ।  
 तिण समे छए मित्र पिण आविया, लिये दीक्षा तजि नेह ।२।  
 अट्ठावीस गणधर थाप्या जिनवरे, साधु सहस चालीस ।  
 साधवी सहस पंचावन जेहने. करे धर्म विश्वा वीस ।३।  
 सहस चौरासी इकलख श्रावका, श्राविका वलि लख तीन ।  
 सहस पैसठ छे उपर जेहने, तय जय नहीं हेज दीन । ४।  
 सहस पंचावन आयू पालीने, उपशम धरिय उदार ।  
 पर उपगारी हो श्री जिनवर तणो, नाम लियां निसतार ।५।  
 पांचसै साधु अढी से साधवी, लई साथे परिवार ।  
 समेत शिखरने ओ जिनवर, चालिया सुमति गुप्ति सुविचार ।६।

॥ ढाल ५ ॥

मल्लि हो ममेत शिखर सिधाया,  
गिरिनर देखी बहु सुख पाया ।

सवला साधा रे मन भाया,  
छोडी मकल मंसाग्नी माया ॥१॥

पुढनी पट परमार्जण कीधा,  
साधा रा मनवांछित मीधा ।

डाभ सथागसु मन दीधा,  
वर्म व्यान शुक्ल ध्यान माथे लीधा ॥१॥

चौरामी लागु जीव समाया,  
पाप अटारे दुरे गमाया ।

सिद्धि वधु मिलवा ऊमाया ।  
पडिलेही छोडी निज काया ॥२॥

साधवी अतरपर्पदा कहिये,  
बाहिर पर्पदा मापुनी कहिये ।

काउस्तग करिने काथा दहिये,  
मिद्र ध्यानगुं शिरपद लहिये ॥३॥

ऋतु वसंत फागुण सुखदाइ.

शुक्ल पक्ष वारस अति साई ।

अर्ध निशा जब मरणी आई,

तव मल्लि जिन मुक्ति श्री पाई ॥४॥

अविनाशी अत्रिकार कहाई,

परम अतीन्द्रिय सुख लहाई ।

समाधान सर्वाङ्ग सदाई,

परम रस सर्वाङ्ग सुहाई ॥५॥

सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध कहिए,

आदि न कोई एहनी लहिए ।

जिन वचने करि सदाहिये,

अनुपम सुख में सदाई रहिये ॥६॥

(कलश)

संवत् सत्तरहसै छप्पत्ते, आसु मास उदारए ।

प्रतिपदा तिथि शुक्ल पक्षे, जेसलमेर मङ्गारए ॥

परधान पाठक श्री कुशल धीरे, गुरुनी सान्निध करी ।

ए स्तवन कीधो कुशल लाभे, धर्म राग मन में धरी ॥१॥

## ॥ एकादशी स्तवन ॥

समवसरण वेडा भगवत, धर्म प्रकाशे श्री अरिहत ।

गारे पर्पटा वेटी जुडी, मिगमिर शुदि इग्याग्म वडी ॥१॥

मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीना ने केवल ज्ञान ।

अर दीना लीधी रुग्रडी, मिगमिर मुदि० ॥२॥

नमिने उपने केवल ज्ञान, पाच कल्याणक अति प्रधान ।

ए तिथिनी महिमा जेवटी, मिगमिर मुदि० ॥३॥

पाच भग्न ऐश्वर्य उमर्हाज, पाचकल्याणक दुवे तिस हीज ।

पन्चागनी मग्या परगटी मि० शु० ॥४॥

अनीन अनागत गिणता गम, दौटमो कल्याणक थाये तंम ।

दुग तिथि देण तिथि जेवडी, मि० शु० ॥५॥

अनन्त चोर्वीर्मा शक्ति परे गिणो, लाम अनन्त उपवामा तगो ।

ए तिथि महु तिथि शिर राखटी, मि० शु० ॥६॥

मानपणे गता श्री मल्लिनाथ, एक दिवस नयम प्रत माथ ।

नीन तगी पण्डित इम पटी मि० शु० ॥७॥

प्राट पदोरी पोरो लीजिये, चौदितार विधि मं जीजिये ।

पण परमाट न हीजे पटी, मि० शु० ॥८॥

रुग्म इगारं हीजे उपवाम, जाव हीय पण अशिर उल्लान ।

ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, मि. शु. ॥९॥

ऊजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ।

करो काउस्सग गुरु पाये पडी, मि. शु. ॥१०॥

देहरे स्नात्र कीजे वली, पोथी पूजी जे मनरली ।

मुक्ति पुरी कीजे हुंकडी, मि. शु. ॥११॥

मौन इग्यारस महोदुं पर्व आराध्यां सुख लहिये सर्व ।

व्रत पञ्चखाण करो आखडी, मि. शु. ॥१२॥

जेसल सोल इक्यासी समें, कीधुं स्तवन सह मन गमे ।

समय सुंदर कहे करो ध्यावडी, मिगशिर सुदि० ॥१३॥

## ॥ रोहिणी जी का स्तवन ॥

शासन देवतां स्वामिनी ए, मुक्त सान्निध्य कीजे,

भूल्यो अक्षर भल भणिए, समझाई दीजे ।

मोटो तप रोहिणी तणोए, तिणरा गुण गावुं,

जिम सुख सोहग संपदाए, वांछित फल पाऊं ॥१॥

दक्षिण भरते अङ्ग देश, छे चंपा नयरी,

मन्वाराजा राज्य करे, तिण जीत्या क्यरी ।

पाट तणी राणी रुवडी ए, लक्ष्मी इण नामे,

आऽ पुत्र जाया तिणे ए, मन में मुत्त पांसे ॥२॥  
 गेहिगी नामे पुत्रिकाए, मरकुं मुत्तकारी,  
 आटा पुत्रा ऊपरे ए, तिण लागे प्यारी ।  
 माये चन्द्र तणी फला ए, जिम पर्य अजपाले,  
 तिम ते कुंररी धायमाय पाचे प्रत पाले ॥३॥  
 तुंबरी रूपे रुवडी ए, घर आगण बेटी,  
 दीटी राजा रेजती ए, मन चिंता पेटी ।  
 श्रीन सुवन माटे गहरी ए, नहीं कोई बीजी नारी,  
 रंभा पडमा गौरी गद्ग ए, इग आगल हारी ॥४॥  
 पुत्रा न दीसे कोई इमो ए, जिग्ने परगातुं,  
 यानां आगण शान वषे ए, जिम चैन न पावुं ।  
 इम पिनागी चितये ए, राजा स्वयंवर मंडाव्या,  
 देग देगता गवरी ए, तच्छण मंडाव्या ।  
 मरुन मझई माय परी, नरपति पिग आव्या ॥५॥  
 सीत मोरु राजा तणी ए, छे पुमर मोमागी ।  
 तन्ना केरी आंनडी ए, पिण केरी नानी,  
 एग देसे मुत्तए मोर, पतिपा देई दाना ।  
 विपनेर दे कहे टीरी, इ परी दर भावा ॥६॥

देव अले देवाङ्गना ए, जंपे जय जयकार.  
 रलियायत थयो देखिने ए, सारो मंसार ।  
 कर जोडीने लोक कहे, वर कन्यारो जोड़ो.  
 वीतशोकनो कुंवर थयो, शिर ऊपर मोड़ो ॥७॥  
 इस विवाह थयो भला ए, दीधा दान अपार ।  
 वरे आव्या परणी करीए, हरख्यो परिवार ।  
 वीतशोक राजा पुत्र भणी, आपणी पाटज दीधो,  
 आपण संजम आदरी ए, जगमें जस लीधो ॥८॥

## ॥ ढाल २ ॥

(हवे भवियणरे ? पंचमी ऊजमणो सुणो)

तिण नयरीरे चित्रसेन राजा थयो,  
 सुख मांही रे केटलो काल वही गयो ।  
 एण अवसर रे आठ पुत्र हुआ भला,  
 चढते पखरे चंद्र जैसी चढती कलां ॥१॥

त्रोटक—चढती कला हवे राय बेठी पास बेठी रोहिणी,  
 सातमी भूमि कंत सेती करे क्रीडा अति वणी ।  
 आठमो बालक गोद उपर रंगशुं-राणी लियो,

पुत्र ने प्रीतम आस आगल देखतां हरखे हियो ॥२॥

टाल-एक कामिनी रे गोखे चढी दृष्टी पढी,  
शिर पीटे रे रोवे रीके वापडी ।  
बूढा पणरे मन गमतो बालक मूओ,  
हुनो एरुजरे तिण अधिकैरो दुख हुओ ॥३॥

बोटक-दुख हुओ देखी, रोहिणी इम कहे प्रीतम भणी,  
एह नार नाचे अने कृदे कृहो किम मोटा धणी ।  
एहबो नाटक आज तांड मै कदी देख्यो नही,  
मुझने तमातो अने हांसो, देखतां आवे सही ॥४॥

टाल- इण वचने रे रीसाणो राजा कहे,  
तू तो पापिणीरे, परनी पीडा नवि लहे ।  
ए दुखिणीरे पुत्र मुथो तड फड करे,  
जब पीते रे देदना जाणीजे तरे ॥५॥

बोटक-जाणीजे तरे तू बात दुखनी गर्वधेली कामिनी,  
एम कही राजा हाथ झाल्यो, तेहना बालक भणी ।  
सातमी भूमिथी तले नार्यो तिसे हाहारव थयो,  
रोहिणी हमती कहे प्रीतम, पुत्र नीचे क्रिय गयो ॥६॥

टाल-हवे राजा रे पुत्र तणे शोके करी,



धयो मूर्च्छित रे रोवे छे आंखे भरीभरी ।  
पडतो मुतने रे शासन देव ते आनियों,  
कञ्चनमय रे सिहासने वंसाड़ियो ॥७॥

त्रोटक—वंसाड़ियो कर जोडी आगे करे नाटक देवता,  
गोद खिल्लावे केई हंसावे पाद पङ्कज सेवता ।  
उपज्यो भूपतिने अचंभो देखी ए कारण किमो,  
जो कोई ज्ञानीगुरु पधारे पूछिये संशय इसो ॥८॥

ढाल—चितवंता रे चारित्रिया आच्या इसे,  
राजा पिण रे पहोंच्यो वन्दन ने तिसे ।  
सुणी देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो,  
कहो स्वामी ? रे पूरव भव वालक तणो ॥९॥

त्रोटक—वालक तणो भव भूप पूछे कहे राणी परे केवली,  
रोहिणी राणीनो भवान्तर, अने राजानो वली ।  
श्री सुगुरु भाखे पाछले भव, रोहिणी तप आदर्यो,  
तप तणी सक्के साधु भक्के तुमें भवसायर तर्यो ॥१०॥

ढाल—कहे राजा रे किम रोहिणी तप कीजिये,  
विधि भाखो रे, जिम तुम पासे लिजिये ।  
तव मुनिवर रे, विधि रोहिणीना तप तणी,

इम जपं रे चित्रसेन राजा भणी ॥११॥

त्रोटक-राजा भणी विधि एह जपे, चन्द्र रोहिणी आविये

उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाविये ।

नारमा जिनपर तणी प्रतिमा पूजिये मन रंगशु ,

एम गार्दीमात परमां लगे कीजे, तजी आलम अङ्गशु ।१२।

### ॥ ढाल ३ ॥

महेली ० आगे मोरियो ॥१०॥

तप करिये रोहिणी तणो, उली करिये हो,

ऊनमणो एमके, तप करता पातिक टले ॥टेर॥

निगे कीजे हो तप सेती प्रेम के ॥तप॥१॥

देव जुदारी देहरं, जिन आगे हो कीजे वृष अगोरु के,

गुणगो भारमा जिन तणो ।

मन्ना नैवेद्य हो धरिये गरु धोरु के ॥तप॥२॥

देगर चंदन धरचिये, जिन आगे हो आटे

मङ्गनीर के विधिगुं पुम्पक पूजिये ।

तो नदिये हो निरपुत्र नर तीरु के ॥तप॥३॥

सेवा कीजे साधुनी बली दीजे हो,  
 मुंह मांग्या दान के संतोषी जे साधुर्षी ।  
 मन रङ्ग हो करी करी प्रकाश के ॥तप॥४॥  
 पाटी पोथी पूँजणी मसी लेखण हो,  
 भिलमिल सुजगीश के नवकार वाली वींटणा ।  
 गुरु आगे हो धरो सत्तावीश के ॥तप॥५॥  
 चोखुं व्रत पण तिण दिने ।  
 इम पाले हो मन आणी विवेक के ।  
 इण विधि रोहिणी आदरे ।  
 ते पामे हो आनन्द अनेक के ॥तप॥६॥

### ॥ ढाल ४ ॥

इम महिमा रोहिणी तणी श्री ज्ञानी गुरु प्रकाशे रे ।  
 चित्रसेन ने रोहिणी, वासुपूज्य तिर्थङ्कर पासे रे ।  
 इम महिमा रोहिणी तणी ॥टेरे॥१॥  
 इणी परे रोहिणी आदरी,  
 ऊपर ऊजमणो कीधो रे ।  
 चित्रसेनने रोहिणी ।  
 मन शुद्ध संजम लीधो रे ॥इम॥२॥

आठे पुत्र आदरी, दीक्षा वारमा जिन आगे रे ।  
 नली नानाविध तप आदरे, जिन धर्म तणी मती जागे रे । ३।  
 करी अनशन आराधना, लही केवल शिवपद पायो रे ।  
 जिनगणी आणि हिरे, प्रभु चरणे चित्त लायो रे ॥३म॥४॥  
 मन मांढन महिमा निलो, म स्तत्रियो शिवपुर गामी रे ।  
 मन मान्या माद्वितणी हवे पुण्ये सेवा पामी रे ॥३म॥५॥

(कलश)

इम गगनद्वन्दुगुनिचट (१७१०) गसे, चोय श्रावण सुदिमली  
 मे कयां गेदिगी तणी महिमा, गुगुरु हसे जिम साभली ।  
 रामुपुज्य इम यया प्रमन्न अमने, चित्तनी चिन्ता टली ।  
 श्री गार जिन गुगु भायता हवे, सकल मन आशा फली ॥१॥

॥ वासु पूज्य स्वामी का स्तवन ॥

नाव रागो प्रभु मार्ग दयानु देवा, लाज रागो प्रभु मार्ग ।  
 बहू भव मटरी नारो आन्यो भी धानु पूज्य तमारी,  
 दयानु देवा लाज रागो प्रभु मार्ग ॥ १ ॥

काल अनंतो नरक तिगोदे, खमियो वहु दुंख भारी ॥२॥  
 परमाशामी देव मुजने त्रास पडाव्यो अपारी ॥३॥  
 तिरिय गति पण महा पापकारी, वध बंधन करनारी ।द.।४।  
 सुरनर गतिमां कामे विटंव्यो, कर्म करी किकियारी ।द.।५।  
 एके गतिमां शाता न पास्यो, शी कहुं कथनी हूं मारी ।द.।६।  
 तारकता तुज सांभली आजे, आव्यो छुं आशा धारी ।द.।७।  
 मोह पिंजर थी छोडावो मुजने, आपनो हुंछुं आभारी ।द.।८।  
 दीन दशामां वाकी न राखी, बनी गयो छुं लाचारी ।द.।९।  
 नियमिक थई भवसागर थी, लेजो मुजने उगारी ।द.।१०।  
 शुद्ध बुद्ध चाली गई छे मारी, हिम्मतगयो छुंहुं हारी ।द.।११।  
 दयाना सिंधु करुणा करीने, सेवकने ले जो तारी ।द.।१२।  
 सूरि नीतिना बाल उदय ने, मेलवजो शिवनारी ।द.।१३।



॥ वासु पूज्य स्वामी का स्तवन ॥

धरशो ना दिलमां रीश जिणंदजी, धरशो ना दिलमां रीश ।  
 तूं दायक ने हुं मांगण छुं, मांगण तो मागीश ।  
 हठील थई हठ मांडीश, धरशो ना दिलमां रीश ॥१॥

आज काल कहीं कहीं ललचायो, दीवुं ना हाथयी दान ।  
 फरी फरी फेरा फरी थाफ्यो. तोचे ना दीवुं दान ॥  
 हवे घरघर घरगुं वलीग, जिणद जी धरशोना दिलमा रीश ।२।  
 मोरु नयी हमणा देवानो, एम मुखे कहेतां शुं थाय ।  
 सुटी वच्चे सोपारी आरी एवो वनो छे न्याय ॥  
 छतालीया पिना नहीं जाईग, जिणद जी धरशो० ॥३॥  
 ना कहेता मान न रहे, देता ना चाले जीम ।  
 दातारयी पण क जुग मागे, ना कहीं आपे मढेव ॥  
 हवे साली केम काटीस, जिणद जी धरशो० ॥४॥  
 ओछु थर्ट जाणे एना भयथी, देता करो छो पिचार ।  
 माग जे मागे आपु तुजने, ते केम कर्यो उचार ॥  
 हवे तु मृजने शुं आपीश, जिणद जी धरशो० ॥५॥  
 दायक विरुद धरीने वेठा, कल्पतरु नी जेम ।  
 हवे याचकनु वाछित देता, गुडा गारो छो केम ॥  
 जगपति विरुद केम पालीग, जिणद जी धरशो० ॥६॥  
 वार्यायी तने ओछु आपीश, काठीग नहीं निराश ।  
 आटलुं पण नमि मुखयी मोलो, शुं अम मरणे प्राश ॥  
 वली मुज दारिद्र शुं राखीश, जिणद जी धरशो० ॥७॥

तुं दारिद्र दावानल समाववा, समजी मेघ समान ।  
 वर्ष वर्ष कहेतां हूं मुखथी, धरुं छुं ताहरूं ध्यान ॥  
 छतां मने क्यां सुधी तुं तपावीश, जिणंद जी धरशो० ॥८॥  
 वीतराग पद पामी पोते, भक्तने राजी कीध ।  
 रागीने शुं आपे विरागी, हवे में समजण लीध ॥  
 मुनीरवर इच्छाने वालीश, जिणंद जीध रशो० ॥९॥  
 नरपति चंपानगरी नो वासी, वासुपूज्य परमेश ।  
 चतुर विजय किकर कहे छे, दर्शन तारुं मलो हमेश ॥  
 मुज उमेद दिल राखीश, जिणंदजी धरशोनां दिलमां रीश ।१०॥

## ॥ अमावस्या स्तवन ॥

वीर सुणो मोरी विनति, कर जोडी हो कहूँ मननी वात ।  
 बालकनी परे वीनधुँ, मोरा स्वामी हो तुमें त्रिभुवन तात ।टेर।  
 तुम दरिशाण विण हूँ भय्यो, भवमांहे हो स्वामी समुद्र सभार  
 दुख अन्नता में सखा, ते कहितां हो किम आवे पार ।१।  
 पर उपकारी तुं प्रभु, दुख भांजे हो जग दीन दयाल ।  
 तिण तोरे चरणे हूं आवियो स्वामी मुक्तने हो निज नयण निहाल २

अपराधी पिण उद्धर्या, ते कीवी हो कृष्णा मारा ग्राम ।

परम भरुहुं ताहगे, तिणे तारो हो नहो टीलनो काम ।१०।३

शूलपाणि प्रतिभूष्यो, जेणे कीवा हो तुजने उपसर्ग ।

डंक दिवो चण्टकोशिये, ते दीवो हो तमु आठमो स्पर्ग ।१०।४

गोशालो गुण हीनटो, जेणे मोल्या हो तोग अस्पर्ग जाड ।

ते पततो ते गखियो, जीतलेश्या हो मरुती सुप्रसाड ।१०।५।

ए वृग छे इन्द्र जालियो, इम रुहे तो हो आयो तुम तीर ।

ते गौतम ने त कीयो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ।१०।६।

पचन उत्याप्या ताहारा, जे भगडयो हो तुअ माय जमाल ।

तेहने पिण पनरे मवे, शिखगामी हो ते कीयो कृपाल ।१०।७।

अटमनो अष्टपि जे रम्यो, जल माहे हो बायी माटीनी पाल ।

तिरता मरुती अचली, ते तायो हो नेहने तक्राल ।१०।८।

भैरवमर अष्टपि दूहयो, चिन चूको हो चारित्र थी अषार ।

एरावतागी नेहने, ते कीयो हो कृष्णा मटार ॥१०॥९॥

साव परम रेखा ररे, ग्यो मुरी हो संयमनो भार ।

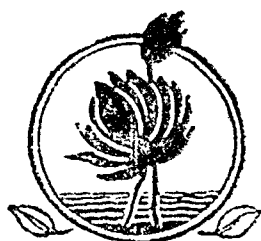
नदिपेण पिण उग्रयो, गुणपटवी हो तीरी अतिभार ॥१०॥१०॥

एव महाप्रण परिगरी, गृहदामे हो धमिया रम्य चोर्ताम ।

ते शिव साठे इमाने ते मायो हो नोरी ए जर्मानारी ।१०॥११॥



ते तो प्रणमोरे मन हंस, जात्रीड़ा जात्रा० ॥७॥  
 पांचे पांडव इण गिरि आया रे, सिद्धा नवनारद ऋषिराया रे ।  
 वली साम्ब प्रधुम्न कहाया, जात्रीड़ा जात्रा० ॥८॥  
 ए तीरथ महिमा वन्त रे, जिहां सिद्धा साधु अनन्त रे ।  
 इम भाखे श्री भगवंत, जात्रीड़ा जात्रा० ॥९॥  
 उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सबला माहि जोय रे ।  
 जे फरस्यां पावन होय, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१०॥  
 एकल आहारीने सचित्त परिहारी रे, पदचारीने धूर्मासंधारी रे ।  
 शुद्ध समकितने ब्रह्मचारी, जात्रीड़ा जात्रा० ॥११॥  
 एम छहरी जे नर पाले रे, बहु दान सुपात्रे आले रे ।  
 ते तो जन्म मरण भय टाले, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१२॥  
 धन्य धन्य ते नरने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे ।  
 जाऊं तेहनी हूँ बलि हारी, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१३॥  
 श्री जिनचन्द्र सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुल साये रे ।  
 इम विमलाचल गुण गाये, जात्रीड़ा जात्रा० नवाणुं करिये रे १४



॥ श्री महावीर सप्त विंशति भव वर्णन का स्तवन ॥

॥ दोहा ।

श्री महावीर जिनेंद्र को, नमन करू चित्त लाय ।  
मम मत्तापीम म कहूँ, सुख कर गुरु मुपसाय ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ वर्तमान जिनवर तणा जी चरण नमु चित्तलाय ॥ (देखी)

भक्तिजनन वीर चरित्त चित्तधार,  
वरलो समकृत सार ।भ. ॥टेरे॥

पण्डितम महा विदेह मे जी, “नयमार” नाम सुधार ।

काण्ठ कारण रण मे गयो जी, लागी भृख अपार ।भ. ॥१॥

भोजन करने के लिए जी, बैठा तरुवर छाह ।

ततखिण मन परिणति हुई जी, पामी हर्ष उछाह ।भ. ॥२॥

अतिथि जो आवे इहा जी, होवे आतम शुद्ध ।

भाग्य उदय हो माहरो जी, देऊ दान विशुद्ध ।भ. ॥३॥

मारग सनमुख देखतेजी, बैठा श्री “नयसार”

भाग्य सयोगे भेटियाजी, पथ चूके अणगार ।भ. ॥४॥

मन मे हर्ष बरी करी जी, पहुँच्यो मुनिवर पास ।

धन्य घडी दिन आज है जी, पूरो मुझ मन आम ।भ.।७।  
 भाव देख "नयसार" के जी, आये मुनि महाराज ।  
 शुद्ध मान आहार को जी, लेवे संयम काज ।भ.।६।  
 भव्य जीव तव जानके जी, देवें गुरु उपदेश ।  
 समकित सोती उरधर्यो जी, सीप स्वाति जल लेश ।भ.।७।  
 द्रव्य भाव मारग लहे जी, साधु श्री नयसार ।  
 साधु संगे साधुताजी, प्रकटत है निर्धार ।भ.।८।  
 भव पहिले समकित लखो जी, बीजे भव "देव लोक"  
 पहिले एक पल्योषमें जी, हरि सुख पावे अशोक ।भ.।९।



## ॥ दोहा ॥

सौधर्मा सुर लोक में, भोगवी सुख अपार ।

"दत्रिण" भरते अन्नतयों, श्री नयसार सुधार ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या भौचरी ॥देशी॥

विनिता नगरी रे 'चक्रि भरत के' के घर में लियो अन्नतार जी

नाम दियो शुभ मरिची तात ने उत्सव पूर्वक सारजी ।

देखो देखो रे करम तणी गति, भुलादेवे निज भानजी ॥टेरा॥

माल कालको रे छोड युवा भयो, करे अनेक मिलाम जी ।  
एक दिन वन्दन आदि जिनद गयो, पायो नोष विकास जी  
देखो देखो रे करम तणी गति ॥१॥

बंगग रगे रे दीक्षा ले सदा, सेवे श्री जिन नाथ जी ।  
तीव्र तपस्या शरीर सहे नहीं, जाणी छोडे माथ जी ।  
देखो २ करम तणी गति ॥२॥

हो एकाकी मनमे चितवे, मे करू नूतन चालजी ।  
हाथ कमडलु शिर छत्री धरे, पग चाखडी गले माल जी ।  
देखो २ रे करम तणी गति ॥३॥

हाथ त्रिदंठ रे मगया वेप मे, रागि हुआ जिण चित्तजी ।  
मु ड मु उपे रे चोटी गिर धरे, राखे यज्ञो पचित्तजी ।  
देखो २ रे करम तणी गति ॥४॥

स्नान करे आंग जाप जपे सही, आदि जिनद त्रिकालजी ।  
कन्द मूलका रे नित भक्षण करे, करे समकित मंगालजी ।  
देखो २ रे करम तणी गति ॥५॥

प्रभुजी के पीछे रे पीछे रहे मदा, पिचरे देण प्रिदेश जी ।  
ममयमग्न गव सुरपति जव करे, बँटे चाहिर प्रदेश जी ।  
देखो २ रे करम तणी गति ॥६॥

आपे रोई मे पदन मारगे, दे मन्चा उपदेश जी ।

संयम रंगे रे रंगी भाव से, भेजे प्रभु जी के पास जी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥७॥

करते पावन अवनितल प्रभु, आवे नगरी “विनिता जी” ।

भरतादिक सब नर सुर वर मिलि, वंदन करे इक चित्ताजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥८॥

वंदन करके रे निज थानक प्रति, बैठे भरत सनूर जी ।

बार परपदा बैठी देख के, पूछे भूप पंडूर जी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥९॥

आप समान रे कोई जीव है, समवसरण मझार जी ।

भापे प्रभुजी रे बाहिर है सहि, मरिची नाम कुमार जी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१०॥

चोथे आरे के होगा अन्त में, “चोवीसमो श्री वीरजी ।

“क्षत्रिय कुंडे” ‘सिद्धारथ’ घरे, त्रिशला नन्दन धीरजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥११॥

श्री मुख वाणी रे भरत सुणी करी, पाया हर्ष अपारजी ।

मरिचि निकट में रे जावे प्रेम से, बोले वचन उदारजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१२॥

तूँ वासुदेव रे पहिलो भरत में, मुका विजये चक्कीजी ।

फिर तू होगा रे जिन चोरीममो, महावीर नामे नरकीजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१३॥

पहिली दूजी रे पदवी को नहीं, नाही त्रिदडी वेशजी ।

श्री तीर्थद्वार पद को में नमृ, सुन श्री जिन उपदेश जी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१४॥

बन्दन करके रे भरत धरे गयो, लुन कर नाचे मरिचीजी ।

धन २ मुक्तको रे धन मुक्त वंशको, धन मुक्त करणी ऊंचीजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१५॥

मेरे दादा रे तीर्थकर हुवे, तात हुए मुक्त चकी जी ।

उन दोनोसे रे अत्रिका मे हुया, वासुदेव पद चकीजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१६॥

तीर्थकर की रे पदवी मुक्तको, होगी प्रिसया वीसजी ।

तीनों पदवी को में भोग के, लूंगा मुक्ति जगीशजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१७॥

नाच कृद के रे कुल को मठ कयो, गायो कर्म को वधजी ।

हरि कहे ताते रे होगा देखना, नीच गोत्र सनवजी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥१८॥

इग्यारमें भव सुर भयो, तीजे सनम् कुमारजी ।  
 च्यव श्वेतास्वी नगरी में, भारद्वाज द्विज सारजी ।प०।१३।  
 चालीस लाख पूरव भली, वारमें त्रिदण्डी जाणजी ।  
 सरके चौथे महेन्द्र में, तेरम भवगुण खाणजी ।प०।१४।  
 राजगृह में द्विज हुयो, थावर लाख चौत्रीशजी ।  
 पूर्व आयु त्रिदण्डीयो, चौदवें भव मुजगीशजी ।प०।१५।  
 पनरम ब्रह्म में अवतर्यो, सोलम विश्वभृति जीवजी ।  
 'विद्या नन्दी' घर जन्मियो 'धारणी' कुत्ती से दीवजी ।प०।१६।  
 वीर चरित्त शुभ भाव से, हरि गावे गुण धामजी ।  
 सार विचार सुधारके, पायो शिव आरामजी ।प०।१७।



## ॥ दोहा ॥

बाल कालको छोडके, भयो युवान कुमार ।  
 वाडी में मुख भोगवे, नित प्रति सुर समसार ॥१॥  
 देखी राजकुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल ।  
 जाय पिताको यों कहे, दो वाडी तत्काल ॥२॥  
 शांत करे निज पुत्र को, सोचे भूप उपाय ।

विश्वभक्तिको भेजता, वश कारण सिंह राय ॥३॥  
 जीत पकड़ लाया दिया, निज चाचा के हाथ ।  
 वार्डीमे जाने लगा, जय कीर्ति के साथ ॥४॥  
 द्वाग्पाल तब यों कहे, रहते राज कुमार ।  
 नहीं जा सकते आप यत्र, तत्र जाने छल सार ॥५॥  
 पुनः क्रोध से वह कहे, मुन लेना नर नार ।  
 वश भ्रम म ना करूँ, नहीं तो क्या है भार ॥६॥  
 चरे वृत्त करीठका, देकर मुष्टि प्रहार ।  
 निज दुश्मन को चरते, लगे जु इतनी वार ॥७॥

ॐ ॐ ॐ

## ॥ ढाल ४ ॥

माला काटे रे जाला जीवना (श्रीगो) -

तुम देखो नाई गहन गति रे, गति चार की ॥८॥  
 मभक्ति गुरु पाममे रे, जा कर दीचा लीव ।  
 तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रमिद्धजी ।  
 तुम देखो नाई गहन गति रे, गति चार की ॥९॥  
 विचरना अरनीतले रे, मरुग पुरम जाय ।  
 मारे ज्यो गोचरी किन्ने को पाटे दाँटी गायजी । तुम ॥१०॥



विशाखनन्दी भाई चंचरा, हंस कर बोलने वाली ।  
 कवीठ फल बल गया कहाँ कह, अरे महा अस्मिनीजी ।३।  
 सुन कर साधु पश्चिाति पलटी. क्रोध हुआ विकराल ।  
 गाय घुमाई मींग पकड़ कर, छोड़ दिई संभालजी ।तुमा१।  
 देखा बल अब तप फल हो तो, पूरव भव निर्धार ।  
 मारुं में तुम्हको यों कहते, विश्वभृति अणगारजी ।तुमा१।  
 कर निदान अनशन करी रे, महा शुक्र में जाय ।  
 सतरह में भवमें सुख विलसे. उत्कृष्ट स्थिति पायजी ।तुमा६।  
 पोतनपुर नृप प्रजापति की. पुत्री रत्न कुञ्जी ।  
 भव अष्टादश में वह जनमा, सप्त सुपन की साक्षी जी ।७।  
 विशाखनन्दी जीव सिंह को, सारी वासुदेव ।  
 त्रिपृष्ट नामे हुआ भरतमें, करता सुर नर सेव जी ।तुमा८।  
 पाप पुष्ट उन्नीसमें भव में, सप्तम नरके जाय ।  
 वीसमें भवमें भीम भयङ्कर, सिंह हुआ वन रायजी ।तुमा९।  
 इक्कीसमें भव चौथी नरक से, निकल फिरे संसार ।  
 बाईसमें भव साधारण नर, पुण्य क्रिया व्रत धाराजी ।१०।  
 तेईसमें भव राय धनञ्जय, धारिणी कुखे आय ।  
 चौद सुपन सूचित अवतरिया, प्रिय मित्र चक्रीरायजी ।११।

पोट्टीला चारुज से दीक्षा, शिक्षा युत ले पाले ।  
 वर्ष कोटि नयम आराधी, पाप पुजको गलेजी । तुमा । १२ ।  
 महाशुक्र मे चौबीस भय, सुर पदवी सुखकारा ।  
 पचमीममें भवम फिर होवे, नन्दन राज कुमाराजी । तुमा । १३ ।  
 दीक्षा पोटिलखरि से ले, बीस पदो को ध्यावे ।  
 तीर्थङ्करवर नाम बंधनकर, भावदया दिल भावेजी । तुमा । १४ ।  
 लाख वर्ष चारित्र पालते, यावज्जीव उदारा ।  
 मामसमणसे करे पाग्णा, क्षमा महित हितकाराजी । तुमा । १५ ।  
 वर्ष लाख पचमीमका रे, आयुष्य अपना भोगी ।  
 'हरि' कहे नित प्रदु नंदन. महा तपस्वी योगी रे । तुमा । १६ ।



## ॥ दोहा ॥

प्राणत नामक धर्म मे, पृष्पोत्तर सुविमान ।  
 छत्रमीममें भयमें रहा, सुर सुरनाय समान ॥१॥  
 देवलोक सुख भोगते, करते पुण्य विधान ।  
 जिन यात्रा स्नायादि में, नित्य रहे गुलतान ॥२॥  
 गीम नागर प्रायु भ्यिति, पूर्ण भई जब मार ।

च्यवन दुःख नहीं जानते, तब च्यवते निर्धार ॥३॥

च्यवन कल्याण के समय, भुवन भयो कल्याण ।

पुण्यवान जावे जहां, प्रकटे वहां निधान ॥४॥



## ॥ ढाल ५ ॥

गुजराती गरवा पद्धति (देशी)

भविष्यां वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारना रे ।

भीषण भव सागर से कैसे पावे पार ॥

इसका वीर चरित्र में खूब किया विस्तार ।

आत्म परिणत कर निज कर्म विचारना रे ॥टेरा॥

साखी-पूर्व गोत्रमद करने से, नीच गोत्र कर बन्ध ।

सत्तागत उस कर्म से, हुवा उदय संबन्ध ॥

सत्तावीस में भव ब्राह्मण कुल में अवतारना रे ।भ०।१।

साखी-ब्राह्मण कुण्ड सु गांव में, ऋषभदत्तवर, नाम ।

देवानंदा ब्राह्मणी, तस गृहिणी गुण धाम ।

करती चौद सुपन लख, दिव्य गरभ प्रति पालना रे ।भवि० २।

साखी-शक्र सिंहासन धर हयों, जाने च्यवन सुरिंद ।

सात आठ पग सामने, जा वन्दे जिन चन्द ।

शक्रस्तव की सविनय शक्र करे, उच्चारना रे ।भवि०।३।

साखी-पूर्वाभिमुख सिंहामने, वदन करके उन्द ।

बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष शलाका वृन्द ॥

भिच्चादिक नीच कुल में जन्म न लं निरधारना रे । भवि० । ४।

साखी-हरिणगमेपी देव को, हुकम करे सुर राय ।

जत्रिय कुण्ड सुगाम में, श्री "मिद्वारथ" राय ॥

त्रिशलादेवी कुक्षि श्री जिनको संचारना रे । भवि० । ५।

साखी-हरिण गमेपी देव तन, दिव्य गति को धार ।

देवानन्दा कुल से, करे प्रभु अपहार ॥

दूजा गर्भ हरण कल्याणक शास्त्र धारना रे । भवि० । ६।

साखी-सिहादिक चौदह मुपन, देखे परम उदार ।

त्रिशला निज पतिसे तदा, सुनती स्वप्न विचार ।

होगा चक्री वा तीर्थकर सुत सुखकारना रे । भवि० । ७।

साखी-धीते नौ महीने उपर, दिन जय साडे सात ।

हन्तोत्तर नक्षत्र में, जनमे प्रिभुवन तात ॥

तीजा जन्म कल्याणक, तीन भुवन जयकारना रे । भवि० । ८।

साखी-छप्पन दिशा कुमारिया, सृति कर्म कर जाय ।

सुरपति सुरसह मुगगिरि स्नात्र, महोत्सव ठाय ॥

सुरपति शका म्यामी करते दर निवारना रे । भवि० । ९।

द्र सामानिक संगम सुर मन, छाया तव अभिमान ।

पापी शौचे कैसे न चलते ?

देखूँ करके निदान ॥नमो० ॥३॥

दृढ भूमि पेढालोधाने, पोलास नामक थान ।

वीर प्रभु पर वीस महा ।

उपसर्ग करे अज्ञान ॥ नमो० ॥ ४ ॥

उपसर्गों की दारुणता लख, सुर पति शोक प्रधान ।

सुर सुख भोग तजे मन चिते,

धन धन धन भगवान ॥नमो रे नमो० ॥५॥

## ॥ ढाल २ ॥

भेखरे उतारो राजा भरथरी (देशी)

रे मन प्रभु गुणमें रमो, प्रभु हैं तारण हार ॥टेरे॥

संगम सुर उपसर्ग में, अनुपम आतम ध्यान ।

धारे वीर प्रभु नमो, भक्ति भाव प्रधान ॥रे मन० ॥१॥

धूली वर्षा सुर करे, भरे निज मन पाप ।

वज्रमुखी करे चीटियों, पर प्रभु निर्मल आप ॥रे मन०॥२॥

मच्छर डांस विमेल से, चटकावे प्रभु अग ।

छोडे मिच्छु नेनला, चूहे काले भुजग ॥रे मन० ॥३॥

हाथी हथिणी मढ भरे, काटे व्याघ्र कराल ।

अड्डहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल ॥रे मन० ॥४॥

तेज हवा तलमारसी, और आधी अपार ।

फैलावे सुर पर प्रभु, आतम गुण अतिकार ॥रे मन० ॥५॥

सिद्धारथ विशला वने, करे करुण विलाप ।

पर प्रभु आतम ध्यान मे, परमातम पद छाप ॥रे मन० ॥६॥

प्रभु अगे पक्षी पींजरा. बाधे वने चडाल ।

प्रभु पढमे अगनी धरे, ज्वाला जारे विशाल ॥रे मन० ॥७॥

छोडे गोला लोहका, सहस भार प्रमाण ।

प्रभु मिर पे आकाश से, धसे जानु प्रमाण ॥रे मन० ॥८॥

सूर्योदय दिखला कहे, मिचरो हे आर्य ।

पर प्रभु जाने कर रहा, माया देन अनार्य ॥रे मन० ॥९॥

निज ऋद्धि दिखला कहे, हुवा हूँ तुष्टमान ।

जो मागो सो दूं तुम्हे, पर प्रभु निश्चल ध्यान ॥रे मन० ॥१०॥

वीम करे उपसर्ग्यों, एक रात मे हंत ।

आखिर देन ही थक गया, जय जय जिन जयपंत ॥रे मन० ॥११॥

अन्तिम चउमासी प्रभु पावन, “पावापुरी” पधारे ।  
 सोलह प्रहर तक उपदेशामृत, वर्षे अखंडित धारे रे ।भ०।४।  
 कर्म विपाकोदय प्रभुजी के, भविजन पुण्य सहाई ।  
 कारण योगे कारज प्रकटे, यह अनुभव चिर थाई रे ।भ०।५।  
 चौदश में गुणठाणे स्वामी, पुदगल वन्व वियोगी ।  
 शैलेसी करणे करी होते, शिव रमणी के भोगी रे ।भ०।६।  
 काती अमावस स्याति नक्षत्रे, कल्याणक निर्वाणी ।  
 मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे ।भ०।७।  
 भावोद्योत जिनेश्वर के बिन, थी अम्मावस काली ।  
 गणराजा विचरत तव जगमें, द्रव्योद्योत दिवाली रे ।भ०।८।  
 आदिम गौतम गणधर स्वामी, वीर प्रभु पटधारी ।  
 देव मुखे निर्वाण सुने, तव शोच करे अति भारी रे ।भ०।९।  
 मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली ।  
 केवलज्ञान रवि तव प्रगट्यो, प्रकटी अद्भुत लाली रे ।१०।  
 आय हरि उत्सव तव रचते, करते जय जय कारी ।  
 गौतम वीर प्रभु नित नमते, संघ में मंगलाचारी रे ।११।



(कलश)

अति म्पच्छ खम्तर गच्छ मे मवेग रंग 'विराजते ।  
 श्री मदगुरु सुख मिथु, विभु भगवान् मागर गाजते ॥  
 तम शिष्य "हरि मागर गणी", उन्नीम से त्यासी समे ।  
 वेरावले श्री वीर भय गाते, विजय हो सधमे ॥

॥ छह मासी का स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ नमो रे नमो मगलमय महावीर ॥ (देशी)

नमो रे नमो वर्वमान भगवान्,  
 शामन नाथ महान ॥नमो. ॥टेर॥

देव मभा मे देवपति करे, वीर प्रभु गुणगान ।  
 त्रिभुवन विजयि भाव अरुम्पित,  
 धारें आत्म ध्यान, नमोरे नमो० ॥१॥

मागर पर गभीर धीर प्रभु, अनिचल मेरु समान ।  
 सुर असुर समरथ नही प्रभुका,  
 तोड मके शुभ ध्यान ॥नमो० ॥२॥



## ॥ ढाल ३ ॥

थोडीसी जिंदगी के काज क्या तुम कडवा बोलो (देशी)

महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।

धीर वीर गंभीर, ज्ञानी और नहीं है ॥टेर॥

मन वच तनु तीनों योग, जिनके आत्म योगी ।

शाश्वत सुखमें लीन, दुखका नाम नहीं है ।महावीर ॥१॥

संगम सूर उपसर्ग, करता नाना भांति ।

छह महीना महावीर, मन में शौच नहीं है । महा०।२।

वह थक गया सुरलोक सुरपतिने विकारा ।

धन प्रभु वीर महावीर, मन में क्रोध नहीं है ।महा० ।३।

इच्छा रोधन योग, प्रभु तप धारी भारी ।

छहे भासी उपवास, विषय की आश नहीं है ।महा०।४।

सुखसागर भगवान सुर गणपति हरि वंदे ।

महावीर स्वामी जैसे वीर जगमें और नहीं है ।महा०।५।



(कलश)

शामन पति महावीर स्वामी दीर्घ तप धारी प्रमो ।  
 पावन तपोमल दीजिये दानी गुणी ज्ञानी निमो ॥  
 सुख सिन्धु हे मगमान हे हरि पूज्य मैं सेरुँ सदा ।  
 जय हो विजय हो थापकी गुण-कीर्तियां गाउ मृदा ॥

॥ हालरड्ड ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे,  
 गावे हालो हालो हालरमानां गीत ।  
 मोना रूपाने वली रन्ने जडियुं पालणुं,  
 रेशम दोरी घुवरी वागे छुम छुम रीत ।  
 हालो हालो हालो मारा नन्द नें ॥१॥  
 जिनजी पार्व्व प्रभूधी, वरम अटासे अन्तरे,  
 होगे चोरीशमो तीर्यंकर जिन परमाण ।  
 केशी म्यामी मृत्तयी एवी वाणी साभली,  
 माची माची हृद्दे ते, मारे अमृत वाण, हालो ॥२॥  
 चांटे प्यप्ते होवे चक्री के जिनराज ।

वीता वारे चक्री, नहीं होवे चक्रीराज ।  
 जिनजी पार्श्व प्रभुना श्री केशी गणधार,  
 तेहने वचने जाण्या चोविशमा जिनराज ।  
 मारी कूखे आव्या, तारण तरण जहाज,  
 मारी कूखे आव्या, त्रण भुवन शिरताज ।  
 मारी कूखे आव्या, संघ तीर्थनी लाज,  
 हूं तो पुण्य पनोती, इन्द्राणी थई आज ।हालो. ।३।  
 मुक्ने दोहलो उपन्यो, वेसुँ गज अंबाडिये,  
 सिंहासन पर वेसुँ, चामर छत्र धराय ।  
 ए सहु लक्षण मुक्ने, नन्दन ताहरा तेजना,  
 ते दिन संभारुने, आनन्द अंग न माय ।हालो. ।४।  
 करतल-पगतल लक्षण, एक हजारने आठ छे,  
 तेहथी निश्चय जाण्या, जिनवर श्री जगदीश ।  
 नन्दन जमणी जांघे, लच्छन सिंह विराजतो,  
 मैं पहिले सुपने, दीठो विश्वावीस ।हालो० ।५।  
 नन्दन नवला बंधव, नन्दी वर्धनना तमे,  
 नन्दन भोजाईयोना देवर छो सुकुमाल ।  
 हंसी भोजाईयो कहेशे, देवर माहरा लाडका,

हसशे रमसेने वली चूँटी खणसे गाल,  
हमशे रमणेने वली ठूँसा देसे गाल ।हालो० ।६।

नन्दन नवला चेडा राजाना भाणेज छो,  
नन्दन नवला पाचणे, मामीना भाणेज छो ।

नन्दन मामलियाना, भाणेजा सुकुमाल,  
हमी हाथ उछाले, कहीने न्हाना भाणजा ।

आख्यो आजीने वली, टपकुँ करणे गाल ।हालो. ।७।

नन्दन मामा मामी, लावणे टोपी आगलां,  
रतने जडिया झालर, मोती कशुँची कोर ।

नीला पीलाने राता, मग्वे जातिना,

पहेरावणे मामी, म्हारा नन्द किशोर ।हालो. ।८।

नन्दन मामा मामी, सूरखडली सट्ट लावणे,

नन्दन गजुवे भरणे, लाट्ट मोतीचूर ।

नन्दन मुखडा जोईने, लेणे मामी मामणा,

नन्दन मामी कहेणे, जीरो सुख भरपूर ।हालो ।९।

नन्दन नवला चेटा, मामानी साते सती,

मारी मरीजीने, वंन तमारी नन्द ।

ते पण गजुमो भरवा, लाखण साई लावणे,

तुमने जोई जोई, होशे अधिको परमानन्द ।हालो।१०।

रमवा काजे लावशे, लाख टकानो घूवरो,

वली सूडा मेना, पोपटने गजराज ।

सारस हँस कोयल, तीतरने वली मोरजी ।

मामी लावशे रमवा, नन्द तमारे काज ।हालो।११।

छप्पन कुमरी अमरी जल कलशे नवराविआ,

नन्दन तमने अमने, केली घरनी मांय ।

फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मण्डले,

बहु चिरंजीवो, आशिष, दीधी तुमने त्यांय ।हालो।१२।

तमने मेरु गिरिवर सुरपति ये नवरावीआ,

तमने निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ।

मुखडा ऊपर वारूँ, कोटि कोटि चन्द्रमा,

वली तन पर वारूँ, ग्रहगणनो समुदाय ।हालो।१३।

नन्दन नवला भणवा, नीशालें पण मूँकशुँ,

गज पर अम्वाडी, वेसाडी म्होटे साज ।

पसली भरशुं श्रीफल-फोफल नागर वेलशुं,

सखडली पण लेशुं, निशालीआने काज ।हालो।१४।

नन्दन नवला म्होटा थाशोने परणावशुं,

बहुवर सरखी जोडी, लावशु राजकुमार ।  
 सरखा वेवाई वेणुने पधरावशु,  
 वर बहु पोंखी लेशुं जोई जोई ने दीदार ।हालो. ।१५।  
 पीअर सामर मारा, वेहु पचे नन्दन ऊजला ।  
 माहरी कृसे आव्या, तात पनोता नन्द ।  
 माहरे आगणे वूठा, अमृत दूधे मेहुला,  
 माहरे आगण फलिया, सुरतरु सुखना कन्द ।हालो. ।१६।  
 इणि परे गायु माता, त्रिशला सुतनुं पालणुं ।  
 जे कोई गाणे लेशे, पुत्र तथा साम्राज ।  
 वीलिमोरा नगरे, वर्णव्युं वीरनुं हालरुं,  
 जय जय मङ्गल होजो, दीप विजय कविराज-।हालो।१७।

॥ नन्दीश्वर द्वीप का स्तवन ॥

नन्दीसर वासन जिनालय, शाश्वता चौमुख सोहे रे ।  
 ऋषमानन चन्द्रानन वारिपेण, वर्वमान मन मोहे रे ।नाटेरा  
 आठमो द्वीप नन्दीसर अद्भुत, बलयाकार विराजे रे ।  
 तेहने मध्ये चिहूँ दिशि शोमित,  
 अञ्जन गिरिवर छाजे रे ॥न ॥२॥

जोयण सहस चउराशी ऊंचा ऊंचपणे अभिरामा रे ।

मूले पृथुल सहस दश जोयण ।

उवरि सहस इक श्यामा रे ॥नं ॥२॥

ते ऊपर प्रासाद प्रभुना, अति उत्तुङ्ग उदाग रे ।

साधु जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥नं ३॥

चैत्ये चैत्ये एकशो चोवीश, विंब संख्या सवि दाखी रे ।

ध्यावो सेवो भविजन भक्ते, शुद्ध आगम करि साखी रे ।नं४।

ऊंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ।

पिहुल पणें पचास जोयणना, प्रभु प्रासाद सुठामारे ।नं५।

धनुष पांचशे आयत प्रभुनी, विविध रतन मय काया रे ।

जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भगते आया रे ।नं६।

अंजन अंजन चिहुंगिरि ऊपरे, चौमुख वावि विशाला रे ।

वावि वावि विच इक इक पर्वत, राजत रङ्ग रसाला रे ।नं७।

चौसठ सहस जोयण उत्तुङ्गे दश सहस सम पिहुला रे ।

चिहुं दिशि सोलह सोहे दधिमुखगिरि,

तिहां प्रासाद सुविमला रे । नं८ ।

वावि वाविने अन्तर विदिशे, रतिकर पर्वत रूडा रे ।

दोय दोय संख्या जगदीशे, कव्या नहीं ए कूडा रे ।नं९।

जोयण सहस मान दश ऊंचा, दश सहस विस्तारा रे ।  
 ऋत्नीरसम मठाण जगतगुरु निश्चय ए निरधारा रे । न१० ।  
 ते ऊपर प्रासाद सतोरण, अजनगिरि परिमाणे रे ।  
 जिन प्रतिमानी सख्याते हिज, श्री जिनराज वखाणे रे । ११ ।  
 इम ग्रामाढ प्रभुना वावन, नन्दीसर वर द्वीपे रे ।  
 द्रव्य भाव विधि पूजा करता, मोह महा मड जीपे रे । १२ ।  
 प्रवचन गार उद्धार प्रकरणें, जीवामिग में जाणो रे ।  
 इम अधिकार छे ग्र थ अनेके, इहा शंका मत आणो रे । १३ ।  
 जिम सुरपति निरचे तिहा पूजा, ते अनुमन इहां लावो रे ।  
 घ्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचन्द्र गुण गावो रे । १४ ।

## ॥ पशुपण स्तवन ॥

कर लो कर लो रे थे भविजन प्राणी,  
 शिव मुख वर लो रे पशुपण कर लो रे ॥ १ ॥

मय सुरवर मिल निज निज भक्तों, द्वीप नदीश्वर जावे रे ।  
 आठ दिवस अट्टाई महोत्सव, कर मुख पावे रे । पजू. ११ ।  
 तिम भावि प्राणी आत्म शक्तों, धार्मिक कार्य आराधो रे ।  
 जिनवर जी की पूजा करके, शिव मुख साधो रे । पजू. २ ।



विविध प्रकारे पूजा रचावो, समकित निर्मल कर लो रे ।  
 आंगी भावना मन शुद्ध करके भवजल तर लो रे । पजू. १३।  
 आठ दिवस अट्टाई. तपस्या, करके काज सुधारो रे ।  
 जैन धर्म की महिमा करके, वान वधारो रे । पजू. १४।  
 हाथी घोड़ा और पालखी, रथ की तैयारी करावो रे ।  
 वस्त्राभूषण सजकर भविजन, मंगल गावो रे । पजू. १५।  
 वाजे गाजे सब मिल गौरी, गुरु के पास जावो रे ।  
 कल्पसूत्र को लेकर माथे, हाथ धरावो रे । पजू. १६।  
 घर ले जावो रात्रि जगावो, ज्ञानकी भक्ति करावो रे ।  
 सर्व शहर में फिर कर गुरु के पास लावो रे । पजू. १७।  
 कल्पसूत्र की पूजा करके, वाँचना नवको सुन लो रे ।  
 मधुरी वाणी गुरु मुख प्राणी, अमृत पीलो रे । पजू. १८।  
 जिन चरित्रने और पटावलि, सामाचारी भावे रे ।  
 तीन अधिकार आदि से सुने, वो मुक्ति में जावे रे । १९।  
 अट्टाई उपवास करो भवि, बड़े कल्प को बेलो रे ।  
 संवत्सरी को तेलो करके, वारे सौ भेलो रे । १०।  
 मूल पाठ को एक चित्त सुणिने, चैत्य प्रवाडी जावो रे ।  
 मोहन मुद्रा जिनवर निरखी, अति हरखावो रे । ११।

अभय अमारी पडह जजागो, दान सुपात्रे देवो रे ।  
 अनुकम्पा कर जीवों ऊपर, प्रेम जगावो रे । १२ ।  
 ननविध ब्रह्म गुप्ति को धारो, भावना शुद्ध मन भावो रे ।  
 दौय टक पडिकमणा करिने, पाप भगावो रे । १३ ।  
 सवत्मरी पडिकमणो करिने, जीव चौराशी खमावो रे ।  
 अपरावी को माफी देकर, अति हर्षावो रे । १४ ।  
 तिवरी ग्राम चोमासो रह कर, पर्व पज्पण घ्याया रे ।  
 सवत्त उन्नीसे अस्सी वर्षे, 'हरि' गुण गाया रे । १५ ।

### १ ॥ नवपदुजी का स्तवन ॥

महावीर तुमारी मोहन मूरति देवी मन ललचाय ॥देशी॥  
 मनवा धरले नवपद ध्यान, अभयपद तुम्हको आन वरे ।  
 नवपद की महिमा मारी, है तीन भुवन विस्तारी ।  
 कहते नहीं आवे पारी, सुर गुरु मन में खेद धरे ।म.॥१॥  
 पूरन नव अक परा है, अनुपम मात्र मेरा है ।  
 निजरूप न और धरा है, गिनती कितनी क्यों न करे ।२।  
 है योग असख्य गिनाये, अक्षय पद प्राप्ति उपाये ।  
 नवपद ही मुख्य दिखाये, उनसे गाँण सुनो मिगरे ।३।

पहले पद हैं अरिहंता, निज द्रव्य-भाव-अरिहंता ।  
 है उपकारी जयवंता, सेवा सुरपति नित्य करे ॥४॥  
 सब लोकालोक विलोके, निज केवल ज्ञानालोके ।  
 ऐश्वर्य अनन्त विशोके, तेरम गुणठाणे विचरे ॥५॥  
 शठ आठ करम क्षयकारी, आत्मिक गुण आठ प्रकारी ।  
 शैलेसी करण निर्धारी, सिद्ध शिला पर जाय ठरे ॥ ६ ॥  
 निज जन्म मरण भय टारी, अजरामर भाव विहारी ।  
 हैं सिद्ध परम सुखकारी, सञ्चित् ज्योति से ज्योति भरे । ७ ।  
 जिनशासन थंभ समाना, छत्तीस परम गुणवाना ।  
 आचार विचार प्रधाना, आचारज भवरोग हरे ॥८॥  
 श्री उपाध्याय पदवासे, मूरख मति बोध विकासे ।  
 अज्ञान तिमिर भर नाशे, सूत्र अरथ का भान करे ॥९॥  
 जो द्रव्य भाव मुण्डित हैं, अनगार हुवे पण्डित हैं ।  
 की मोह चमू खंडित है, जिनने वे हैं साधु खरे ॥१०॥  
 जिन देशित तत्व विचारें, श्रद्धान अटल चित्त धारें ।  
 परभाव हृदय से टारे, दर्शन दुःख को दूर हरे ॥ ११ ॥  
 तब मोह तिमिर भर त्रासे, अनहद आनंद विलासे ।  
 भुवन त्रय नाटक भासे, जब वर ज्ञान कला प्रसरे ॥१२॥

आत्मिक गुण रमण निदानं, कृत परमात्म पद दानं ।  
 चारित्र्य पवित्र विधान, जिससे कर्म समी विखरे ॥१३॥  
 जहा भाव रहे अविकारी, निज इच्छा रोधन कारी ।  
 तप द्वादश विध जयकारी, नवमें पद सन्ताप हरे ॥१४॥  
 वे नवपद शिष्य पद दाता, ध्यावो मिले सुख साता ।  
 तोडो जगत से नाता, चउगति चकर जासु टरे ॥१५॥  
 उन्नीस सत्यासी साले, आसो तेरस ऊजियाले ।  
 जयपुर में नव पद ध्यावे, कीर्ति हरि कपीन्द्र उचरे ॥१६॥

## २ ॥ नवपद जी का स्तवन ॥

रामचन्द्र के वाग मे दियो नारणी पाकी रे लो ॥देशी॥

सुरमणि सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामी रे ।

अहो नवपद अभिरामी रे लोक ।

करुणा सागर गुणनिधि, जग अतरजामी रे लोक अहोजग ।

त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोक ।

एइना श्री अरिहत जी, नमू चित्त उलासी रे लोय ।२।

अष्ट करम टल जयकारी, यया मिद्व सरूपी रे लोय ।

सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपी रे लोय, ॥३॥  
 गुण छत्तीसे शोभता, सुन्दर सुखकारी रे लोय, ।  
 आचारज तीजे पदे वन्दू अविकारी रे लोय अहो वन्दू ॥४॥  
 आगम धारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ।  
 चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधिरे लोय, अहो सं ।५।  
 पंचाचार पालनपरा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय, अहो पं. ।  
 गुणरागी मुनि पांच में, प्रणमँ वडभागी लोय ॥ ६ ॥  
 निज पर गुणने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवेरे लोय ।  
 छठे गुण दरिशण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ।७।  
 ज्ञान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ।  
 स्वपर प्रकाशक दिनमणि, अज्ञान निवारे रे लोय । ८ ।  
 आठमे चारित्र पद नमो परभाव निवारी रे लोय ।  
 खांत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ।९।  
 नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ।  
 वांध्या काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ १० ॥  
 ए नवपद बहुमान थी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय. ।  
 नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित पावे रे लोय. अ. ।११।  
 आसो चैत्र मासमां, नव आंवल करिए रे लोय. अहोनव ।

नम ओली विवि युत करी, शिव कमला वरिए रे लोय, ।१२।  
 सिद्ध चक्रनी नहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय, अहो वर ।  
 श्री जिनलाम रुहे मदा, अनुपम जस लीजे रे लोय.  
 अहो अनुपम जस लीजे रे लोय. ॥ १३ ॥

### ३ ॥ नवपदुजी का स्तवन ॥

राग—वनासरी

शिवमुख के दातार, सेनो भवि ! नवपद जग सुखकार ।  
 वारे गुण करि शोभे जिनेश्वर, करते जग उपकार ।  
 घन घातिको दर हटावे, केवल ज्ञान उदार, सेनो । १ ।  
 अलख निरजन मर्म शिरोमणि, निर्मल गुण भडार ।  
 मिद्व शिला पर मिद्व विराजे, महिमा अपरपार । से. ।२।  
 गच्छ यमण आचारज सेनो, पाले पचाचार ।  
 अन्धारे छत्तीम छत्तीमी, ते सघके आधार ।सेनो। । ३ ।  
 चौधे पद पाठक विज्ञानी, आगम अगम विचार ।  
 सघ सकल को राचना देवे, नशय छेदनहार ।सेनो. ।४।  
 पंच महाप्रत उत्कृष्ट पाले, गुण सत्तामीम धार ।  
 तप जप ध्यान मज्जाय करत हें, चन्दो भवि अणुगार ।५।

सम्यग् दर्शन सम्यग् धारो, हो जावो भवपार ।

जब लग समकित हाथ न आवे, मटके भव संसार ।६।

सम्यग् ज्ञान सुरत्न चिन्तामणि, दर्शन चरण आधार ।

तीन लोकमें दिव्य दिवाकर, बन्दो वारम्बार । सेवो । ७।

अष्टम पद पूजो भवि हर्षे, चरण शरण मनुहार ।

आगम रीते जो भवि पाले, सफल गिनो अवतार । ८।

अन्तिम पद में शोभे तपस्या, कर्म निकन्दन हार ।

द्वादश विध जो ध्यावे दिलधर, पावे शिवपद सार । ९।

सेवो बन्दो ? भाव धरिने नवपद जग जयकार ।

मनवांछित फल पावोगे जिम, श्री श्रीपाल कुमार । १०।

सुखसागर भगवान महागुनि, त्रैलोक्य गुरु दिलधार ।

आनंद से आनंद गुण गाया, आनंद आनंदकार सेवो । ११।

## ४ ॥ नवपदुजी का स्तवन ॥

श्री सिद्धचक्र आराधो, मनवांछित कारज साधो रे ।

भवियां श्री सिद्धचक्र आराधो ॥ टेरे ॥

पद पहिले अरिहंत ध्यावो, जेम अरिहंत पदवी पावो रे । १।

पद दजे मित्र मनावो, जिम मिद्ध मरूपी होई जावो रे ।३।  
 मृरि तीजे गुणवता, जगनायक जग जयवता र ।३।  
 चौथे पद उरुकाया, जिनमार्ग आण वताया रे ।४।  
 मातृ मरुन गुणवारी, पद पचमे जग हितकारी रे ।५।  
 दग्शिण पद छड्डे वन्दो, जेम कीरति होय चिर नन्दोरे ।६।  
 ज्ञान पद मातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमे भाख्योरे ।७।  
 तप पद नवमे आख्यो, जेम प्रीरजीने वचने राख्योरे ।८।  
 श्रीपाल ने मयणा लीधो, नवमे भवे कारज मीधो रे ।९।  
 दम नवपद महिमा जाणी, जिनचन्द्र हिचे मन आणीरे ।१०।

॥ नवपद जी की डाल ॥

डाल ॥१॥

जीहो कृ वर वेडा गोपटं ॥देगी॥

जीहो प्रणमु दिन प्रने जिनपति ।लाला॥

शिव मुखकारी अणेष ॥ जीहो ॥

आमोज चैत्री तणी ।लाला॥ अड्डाई त्रिणेष,

भविक जन । जिनपर जग जयकार ॥१॥

जीहो जिहा नवपद आचार, भ० । टेर ।



जीहो तेह दिवस आराधवा. नंदीश्वर सुर जाय ।  
 जीहो जीवाभिगम मांहे कह्युं, करं अडदिन महिमाय. ।२।  
 जीहो नवपद केरा यन्त्रनी, पूजा कीजेरे जाय ।  
 जीहो रोग शोक सत्रि आपदा, नाशे पापनो व्याप. म. ।३।  
 जीहो अरिहंत सिद्ध आचारजा, उवज्झाय साधु ए पंच ।  
 जीहो दंसण नाण चारित्र तवो, ए चऊ गुणनो प्रपंच ।४।  
 जीहो ए नव पद आराधतां, चंपापति विख्यात ।  
 जीहो नृप श्रीपाल मुखियो थयो. ते सुगजो अवदात. ।५।



## ॥ ढाल २ ॥

कोईलो पर्वत धूंधलोरे ॥देशी॥

मालवपुर उज्जैणियेरे लो, राज्य करे प्रजापाल रे,  
 सुगुण नर ! सुरसुन्दरी मयणा सुन्दरी रे लो,  
 वे पुत्री तस बालरे सु. श्री सिद्ध चक्र आराधिण रे लो. ।१।  
 जेम होय सुखनी मालरे, पहिली मिथ्या श्रुत भणी रे ।  
 नीजी जिन सिद्धांत रे सु. बुद्धि परीक्षा अवसर रे ।  
 पूछे समस्या तुरन्तरे सु. श्री. ॥२॥

तूटो नृप वर आपवारे पहिली करेते प्रमाण रे सु ।  
 बीजी कर्म प्रमाणथी रे, कोप्यो ते तत्र नृपभाग रे ॥३॥  
 कुप्टीपर परणावियो रे, मयणा वरे धरी नेहरे ।  
 रामा हजिय पिचारीए रे, मुन्दरी विणसे तुज देहरे ॥४॥  
 श्रीमिद्ध चक्र प्रभावथी रे, नीरोगी थयो जेहरे ।  
 पुण्य पमाये कमला लही रे, वाच्यो धणो समनेहरे ॥५॥  
 माउने वात ते जब लही रे, वाढवा आच्या गुरु पामरे ।  
 निज घर तेडी आवियो रे, आपे निज आरामरे ॥६॥  
 श्रीपाल ऋहे कामिनी सुणो रे, हुँ जातु परदेश रे ।  
 माजमता बहु लावशु रे, पूरशु तुम तणी स्वतरे ॥७॥ ।  
 अरवि करि एक र्पनी रे, चाल्यो नृप परदेश रे ।  
 गेट वयल माथे चल्यो रे, जलपथे सुविशेष रे ॥८॥

### ॥ ढाल ३ ॥

इतर आत्रा आत्रली रे ॥ देशी ॥

परणी बन्धन पति सुतारे, धवल मूकाच्या ज्याह ।  
 जिनपर त्रार उघाटने रे, कनककेतु बीजी न्याह ॥१॥  
 चतुर नर ? श्री श्रीपाल चगित्र पगणी सुतानसुपालनी रे ।

समुद्र तटे आवंत मकर केतु नृपनी सुतारे, वीणावादे रीभंत । २ ।  
 पांचमी त्रैलोक्य सुन्दरी रे, परणी कुब्जा रूप ।  
 छट्टी समस्या पूरती रे, पंच सखीमूँ अनूप ॥ ३ ॥  
 राधावेधे सातमी रे, आठमी विष उतार रे ।  
 परणी आव्यो निज घरे रे, साथे बहु परिवार ॥ ४ ॥  
 प्रजापाले सांभली रे. परदल केरी बात ।  
 खंघे कुहाडो लेई करी रे, मयणा हुई विख्यात ॥ ५ ॥  
 चंपा राज्य लेई करी रे, भोगवी कामित भोग ।  
 धर्म आराधि अवतर्यो रे, पहाँतो नवमें सुरलोग ॥ ६ ॥

### ॥ ढाल ४ ॥

कंत तमाकू परिहरो ॥ देशी ॥

एम सहिसा सिद्धचक्रनो, सुर्णी आराधे सुखिवेक ।  
 मोरे लाल, श्री सिद्धचक्र आराधिए ॥ १ ॥ टेर ॥  
 अष्टदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ।  
 चिहूँ दिशे सिद्धादिक चउ, वक्र दिशे चतुगुण धार ॥ २ ॥  
 वे पडिकमणां जंत्रनी, पूजां देववंदन त्रिकाल ।  
 नवमे दिन सविशेष थी, पंचामृत कीजे पखाल ॥ ३ ॥

भूमिगयन ब्रह्मविधि धारणा, ऋर्धा राखी व्रण जोग ।  
 गुरु नैऋतच क्रीजिण, धरो महहणा भोग ॥ ४ ॥  
 गुरु पडिलार्भी पारीण, साहमी वल्लल पण होय ।  
 उजमणा पण नव नवा, फल धान्य खणादिक टोय ॥५॥  
 इह भव मत्रि सुखमपदा, परमत्रे मत्रि सुख वाय ।  
 पट्टित शान्ति विजय तणो, कहे मान विजय उदभाय ॥६॥

### ॥ नवपदजी का स्तवन ॥

देवण दो गणगोर भँवर ? माने देवण दो गणगोर ॥१॥  
 धरलो निर्मल ध्यान भविक जन ? धरलो निर्मल न्यान  
 शिवसुख के मनेही भविक जन ? धरलो निर्मल न्यान ।टेरा  
 चार कर्म को जय करीने, होते अरिहत रूप ।  
 वारे गुण के धारक जिनवर, सेरो शुद्ध स्वरूप ॥ १ ॥  
 अगम अगोचर अलख निरजन, जीजे पदमे मिद्व ।  
 अष्ट कर्मके धारक धारक, गुणके आठ प्रमिद्व भविक ॥२॥  
 गुण छनीसे गाजे गणवर, त्याजे विषय उपाय ।  
 पचाचारको पाले पलावे अतिशय चार कुहाय ॥३॥  
 पाठक गिजा नित प्रति देते, गुण पचवीम लो मान ।  
 ज्ञान तुझको हाथ में लेके, छेदे मोह अज्ञान ॥४॥

निग्रन्थ अङ्गार अनुपम, गुण हैं मत्तावीस ।  
 सम परिणामे निहारे जगत को, तारें वीम्बा वीस ॥५॥  
 भव संताप के दूर हरण को, मानो औपधि एक ।  
 मूल पांच गुण हैं अति सुन्दर, समकित शुद्ध त्रिवेक ॥६॥  
 ज्ञान विज्ञान महान मनोहर, पांच प्रकार प्रमाण ।  
 लोका लोक विलोकन कारण, दीपक मान सुजाण ॥७॥  
 दस प्रकार गुणों का आकर, चारित्र गुण मणिमाल ।  
 आश्रय अवगुण रोध करीने, संवर गुणको संभाल ॥८॥  
 तप दीय भेद जिनेश प्ररूपे, कठिन कर्म दे बाल ।  
 ध्यान पवन के जोग करीने, शुद्ध करे तत्काल भविक ॥९॥  
 ये नव पद के ध्यान करण से, पावों सुख भरपूर ।  
 रोग शोक संताप विपत्ति सब, कष्ट त्रियोग हो दूर ॥१०॥  
 त्रिधि संयुत गुरु मुख से पढ के, आराधो शुद्ध भाव ।  
 आसोज चैत्री दीय वर्ष में, करिये हर्ष उच्छ्राव ॥११॥  
 साढा चारवर्ष में होवे, इक्यासी आँविल सार ।  
 व्रत उजमणो करिये भविजन, तरिये भवजल पार ॥१२॥  
 संवत्त उन्नीसे इक्यासी वर्षे, जोधनगर के मांय ।  
 चैत सुदी नवमी रवि पुण्ये, हरि गावे हरपाय ॥१३॥

## ॥ नवपद मन्डन स्तवनम् ॥

नवपदनो ध्यान धरीजे, मिद्धचक्र रजत मय कीजे हो ।

नदगुरु उपदेशे, पूर्व दिशी गुणनो करिजे ।

नव दिन लग लक्ष जपीजे हो ॥ १ ॥

मदगुरु पूरा अक्षर मभारो, पर निन्दा दूर निवारो हो ॥२॥

जिमतिम मुख भूठन भाखो, जिन शाखे निजव्रत राखो हो ।

आयत्रिल नव दिन शुभ वेला, प्रतिक्रमण दोनो वेला हो ॥३॥

त्रण चार देव पदीजे, नयकार वाली चित्त दीजे हो ।

साहमीने उठमो दीजे, मानव भव मफल करीजे हो ॥४॥

पाटा पर रात्रिये सोवे, इम करता जयणा होवे हो ।

नित प्रति जिन पूजा, मानना भावे नर दूजा हो ॥५॥

स्तवना करो विध सेती, श्रद्धोत्तर सौ करि जेती हो ।

काउस्मग्ग करी लोगम्म वारे, नवकार कहीने पाले हो ॥६॥

मन में क्रोध न कीजे, खोटो पण आलन दीजे हो ।

रमत हँमी क्रिम करीये, व्रत दूषणधी डरिये हो ॥७॥

धन्य पुण्यवन्त नर नारी, मिद्ध चक्रनी गत विचारी हो ।

त्रिकरण वण कर व्रतचारी, इम जाप जपे सुविचारी ॥८॥

गुरु वचन सुधारम पीजे, जिन राज कथन चित्त दीजे हो ।

धर्मी जन मन एम पतीजे, कुमती जन देखी खीजे हो ॥६॥

तप पाण्णा भक्ति करीजे, गुरु गुरुणी प्रति लाभीजे हो ।

स्वामी वात्सल्य कीजे, लचमीनो लाहो लीजे हो ॥१०॥

श्रावक कोटी ध्वज थावे, दुर्गति दुःख दूर पलावे हो ।

भव भवना पातिक नाशे, कीर्ति कमला घर वासे हो ॥११॥

हेमभूरि मलयगिरि खूरी, देवेन्द्र सुगुरु मति पूरी हो ।

सिद्धसेन दिवाकर जाणो, यह फल सिद्धचक्र बखाणो ।१२।

संघवी श्रीपाल सुहाई, सिद्धचक्र नी वात चलाई हो ।

गच्छपति जिनराज सवाई, नवपद नी रीत दिखाई हो ॥१३॥

नवपद नव निधि सिद्धि पूरे, सधली चित्त चिन्ता चूरे हो ।

वाचक कनक कीर्ति गुरु बोले. सिद्ध चक्रने कोई न तोले हो ।१४।

## ॥ दीवाली का स्तवन ॥

दीवाली दिन वीरजीरे, पहुंच्या मुक्ति धामरे ।

आंखडी आंसु भरी ॥ टेरे ॥

सूना दिवस सूनी रातडीरे, सूनी आ भारत देश रे ॥१॥

वीर प्रभु निर्वाण जाणीने, देव देवी आवे तत्काल रे ॥२॥

शोक छवायो चिहुँ दिशी रे, वीर वीर करे पुकार रे ।३।

देवोना कोलाहल साभलीरे, मुछित थया गौतम स्वाम रे । १।  
 हा हा प्रभु तमे शुं कयँुरे, मुकी गया गौतम बाल रे । ५।  
 गौतम २ कही कोण गोलावणे, कोण करणे सार सभालरे । ६।  
 अत ममय दूरे कयोरै, जाण्युं के आणशे माथ रे । ७।  
 बडी जण नपि विसारतारे, मुकी गया केम तात रे । ८।  
 निरावार बालक हुं थयोरै, केम जाणे दिन गत रे । ९।  
 प्रश्न फिडा जई पृच्छुरै, कोण देणे ज्ञान रे । १०।  
 हुं रागी थई भूलियोरे, नीर हता वीतराग रे । ११।  
 महानीर स्वाभी मोचे पधार्या गौतम केवल ज्ञान रे । १२।  
 बल्लभ महने लागतारे, ओच्छ्रय करे इन्द्र आय रे । १३।

## ॥ दीवाली का स्तवन ॥

मारग देशक मोचनोरे, केवल ज्ञान निधान ।  
 मान दया मागर प्रभुरे, पर उपकारी प्रधानो रे ।  
 वीर प्रभु सिद्ध थया, सध सकल आवारो रे ।  
 हिव दण भरतमा कुण करणे उपगारो रे ।  
 नीर प्रभु सिद्ध थया, नाथ निदृशी सैन्य जूं रे ।  
 नीर निदृशों रे मघ, माधे कुण आधारयी रे



परमानंद अभंगो रे ॥ ३ ॥ वीर ॥

सात विहुणा बाल ज्युरे, अरहा परहा अथडाव ।

वीर विहुणा जीवडारे, आकुल व्याकुल थायेरे ॥४॥ वीर॥

संशयछेदक वीरनोरे, विरहते केम खमाव ।

जे दीठें सुख ऊफजेरे, ते विण किम रहिवायरे ॥५॥ वीर॥

निर्यामक भवसमुद्रनारे, भव अटवी सारथ वाहरे ।

ते परमेसर विन मिल्यारें, किम वाधे उच्छाहोरे ॥६॥ वीर॥

वीर थकां पिण श्रुततणोरे, हुंतो परम आधार ।

हिवणां श्रुत आधार छेरे, एह जिन आगम सारोरे ॥७॥

इण काले सहु जीवनेरे, आगमथी आनंद ।

व्यावो सेवो भविजनारे, जिन पठिमा सुख कंदोरे ॥८॥

गणधर आचारज मुनिरे, सहुने इण परि सीध ।

भव भव आगम संगथीरे, देवचंद्र पद लीधरे ॥९॥

॥ दिवाली का स्तवन ॥ भास ॥

श्री जिनवर जी ना गुण गावो, पूजो चरण पखाली ।

भर मुक्ताफल थाल वधावो, अङ्गी रची लटकाली है ।

आज म्हारी अजर अमर दीवाली ।

नेह भर निजर निहाली हे, आज ॥टेर॥

काती वढि तेरम के दिन से, वाधे मगल माला ।

धन धन दीयो धन तेरम को, रिद्धि लहे मतवाली हैं ।१।

रूप चउदम आई जिन पूजो, केसर चन्दन धोली ।

नर नारी मिलि पौषध कीजे नैसीने धर्मशाली है ।२।

अमावस्यो अमर आयो, पर्व थई दिवाली ।

घर घर दीपक ज्योति भिगमिग, जिन सुंदर ज्योत मवाई है ।३।

पाछली राते वीर प्रभुजी, मोक्ष गया सुखकारी ।

चौमठ इन्द्रा महोत्सव कीनो, रात थई उजवाली है ।४।

गुरु गौतमजी पाभ्या केवल, मकर लोक रलिआई ।

चौमठ सुगति महिमा कीनो, गुरु की भक्ति सभाली हैं ।५।

पहेर पोशाक के मन मिल गौरी, गुरु वन्दन ने चाली ।

हिलमिल टोली वाली भोली, जय जय करवा चाली हैं ।६।

लटक लटक गुरु चरणे लागी, लू छना ले सुखकारी ।

मुनी देणना मन मे हर्षे, गावे भाम रगाली है ।७।

पडपारे दिन घर घर तोरण, दीसे भाक भमाली ।

ओच्छर गङ्ग वगैरे कीजे, मने मनाए मेली है ।८।

क्रांती सुदी द्वितीयारे दिवसे, भाई बीज पण चाली ।  
 पांच दिवस तक थई दिवाली, रोग शोक सब टाली है ।६।  
 निशदिन गुरुनी भक्ति करीने, श्रावकना व्रत पाली ।  
 भट्टारक नी सीख सुणिने, उदय रतन अघटाली है ।१०।

## ॥ १ ॥ अक्षयनिधि विधि स्तवन ॥

॥ सीता माता की गोदी में हणुमत डारी मुदडी ॥देशा॥

सुखकर समवशरण में शासन स्वामी देवें देशना ।  
 अमृत पदवी पावें भवि सुन, अमृत अधिकी देशना ।टेर।  
 आत्म कर्ता कर्म विधान, भवमें भटके दुःख प्रधान ।  
 धर्माराधनसे सुख पावे, स्वामी देवें देशना ॥१॥  
 दानादिक हैं चउविध धर्म, तप-पद काटे कलुषित कर्म ।  
 आत्म स्वभाव सुनिर्मल होवे, स्वामी देवे देशना ॥२॥  
 आगममें तप विविध प्रकार, अक्षयनिधि तप सुख भंडार ।  
 आराधक अक्षयनिधि पावें-स्वामी देवें देशना ॥३॥  
 पयूपण संवत्सर पर्व, पनरह दिन पहिले हो अगर्व ।  
 अक्षय निधि विधि सावक साथे-स्वामी देवें देशना ॥४॥  
 स्वस्तिक ज्ञानकी पूजा करना, संगलघट अक्षत से भरना ।

भक्ति द्रव्य भाव चित्त धरना, स्वामी देवें देशना । ५ ।  
 आनश्यक प्रति दिन मुखकाग, पालो ब्रह्मचर्य अतिकारा ।  
 आतम परमातम लय लाना, स्वामी देवें देशना । ६ ।  
 सुरमित रूप दशाग उदारा, दीपक ज्योति असडित धारा ।  
 सुरमित ज्योतिर्मय जीवन हो, स्वामी देवें देशना । ७ ।  
 चाटो विक्रमित मुन्दर फूल, चाटो सुमधुर फल बहुमूल ।  
 विक्रमित सुमधुर जीवन होवे, स्वामी देवें देशना । ८ ।  
 पूजा प्रभावना इक चित्त, करना देव वदन भी नित्त ।  
 हर्गना पाप ताप मभाग, स्वामी देवें देशना । ९ ।  
 ध्याओ निज आतम गुण ज्ञान, उत्तम हय गय रथ मडान ।  
 राजे गाजे प्रभुको भेटो, स्वामी देवें देशना । १० ।  
 अक्षयनिधि तप एकासनसे, पूरण करना तन मन धन से ।  
 गावें जिन हरि जय जय कारा, स्वामी देवें देशना । ११ ।

॥ अक्षय निधि तप का स्तवन ॥

श्री पद्मी जगरिया ॥देगी॥

परमातम गुण गाओ, तपस्वी तन मन से ।

आतम मे लय लाओ, तपस्वी तन मन से । ६ ।

अक्षय निधि तप इच्छा रोधन, करनेसे हो आत्म शोधन ।

कर्मों को दूर भगावो तपस्वी तन मन से ॥ १ ॥

जवन्य सध्यम यह उत्कृष्टा, इकदो तीन वरस में पुष्टा

निज गुण ज्ञान उपावो, तपस्वी तन मन से ॥ २ ॥

श्रुत देवीको चौथे वरसे, अक्षय निधि विधि साधन हरसे ।

भाव अक्षय निधि लाओ, तपस्वी ॥ ३ ॥

निज निजका मंगल घट ठावो, अक्षत धोवा नित्य भरावो ।

उत्सव ठाठ रचावो, तपस्वी तन मन से ॥ ४ ॥

समवशरण में प्रभु पधरावो, कल्पसूत्र पूजा विरचावो ।

अखंड ज्योति जगावो, तपस्वी तन मन से ॥ ५ ॥

धूप दशांग फूलों की माला, भर भर फल नैवेद्य के थाला ।

भक्ति में प्रेम लगावो, तपस्वी तन मन से ॥ ६ ॥

पंच शब्द वाजिंत्र बजावो, हय गय रथ सिंगार सजाओ ।

शासन शोभा बढावो, तपस्वी ॥ ७ ॥

पूजा और प्रभाचना करके, पुण्य भंडारा अपना भरके ।

जीवन में हुलसावो, तपस्वी तन मन से ॥ ८ ॥

सामायिक पडिकमणा करके, देववंदन गुरुवंदन करके ।

रत्नत्रय प्रगटाओ, तपस्वी तन मन से ॥ ९ ॥

नोल्लह दिन तरु तप आगयो, मरुत्मरी दिन पूरण मायो ।

प्रभु गुण गान जगायो, तपस्वी तन मन से । १० ।

अचय निधि अचय निधि खोले, जिन हरि पूज्य गीर प्रभु खोले ।

जय जय नाड गुँजायो, तपस्वी तन मन से ।

परमानम गुण गायो तपस्वी तन मन से । ११ ।

★○★

॥ अक्षय निधि ध्यान स्तवन ॥

मोना दटा भूल आवे ॥ देगी ॥

ॐ अहं पद प्यारा, हमारे मन भा गया ।

ॐ अहं पद प्यारा ॥ टेर ॥

ॐ अहं पद प्रातम अनुपम, गुण अचय निधि गग ।

दरु भार अत्रप निधि तप मे, हँ यह लक्ष हमारा । १ ।

पर पृथगल परिपति को तन कर, मिथ्या भार मिटाया ।

गम्भिर दर्शन करके आतम, आतम में टहराया । २ ।

पानादि गुण पर्यायोडा, आतम सिण्ट हमारा ।

पर द्रव्यो मे बुडा अरना, अस्वप्नमार निर्भारा । ३ ।

अप अतना म ही हँ मना, लीन न पर परारा ।

२ न मे पम पर अरने महरा, पाया अत्र सिनाग । ४ ।

हेय ज्ञेय सारी दुनियां में, कोई नहीं हमारा ।  
 आत्म ही आत्म का है, यह उपादेय अविकारा ॥५॥  
 द्रव्यालंबन भावाभिमुख, वृत्ति आज हमारी ।  
 भाव रूप अक्षय निधि आत्म, ध्यान विधि विस्तारी ।६।  
 शुद्धात्तम बुद्धि अभिवृद्धि, सिद्धि समृद्धि विधाना ।  
 समस्त समस्त कर आराधन यह, हमने मनमें ठाया ।७।  
 मन मंगल घट हुआ हमारा, देवगुरु सत्संगी ।  
 गुण अक्षय निधि भरते जीवन, पावन यह सरवंगी ।८।  
 कल्पसूत्र कल्पद्रुम जैसा, सुमनस पूजा चंगी ।  
 ज्ञान प्रदीप अखंडित ज्योति, धूप घटा गुण रंगी ।९।  
 वर्द्धमान आत्म सुखसागर, शासन जय जय कारी ।  
 परमगुरु भगवान शरण में, श्रद्धा बढी हमारी ।१०।  
 जिन 'हरि' पूज्य परम पुरुषोत्तम, अक्षयनिधि अधिकारी ।  
 आत्म परमात्म पद पावें, कर्म कलंक निशारी ।११।



## ॥ अभिनंदन जिन का स्तवन ॥

तुम जो जो जो जो रे, वाणीनो प्रकाश ॥८॥

उठे छे असड धनि जो जने मभलाय, नर तिरिय देव ।

आपणी सहु भाषा ममजी जाय ॥९॥

द्रव्यादिक देखी करीने, नय निक्षेपे जुत्त ।

भगतणी रचना घणी काइ, जाणे सहु अद्भुत ॥१०॥

पय सुधाने ड्छु वारि, हारि जाए सर्प ।

पाखडी जन साभली ने, मूझी दीए गर्व ॥११॥

गुण पात्रीस अलकरी, अभिनंदन जिन वाणी ।

सगय छेदे मनतणा, प्रभु केवल ज्ञाने जाणी ॥१२॥

वाणी जे नर सांभले ते, जाणे द्रव्यने भाव ।

निश्चयने व्यवहार जाणे जाणे निज परभाव ॥१३॥

मांघ्य साधन भेद जाणे, ज्ञानने आचार ।

हेय ज्ञेय उपादेय जाणे, तत्वा तत्व विचार ॥१४॥

नरक सरग अपवर्ग जाणे, थिर व्यय ने उतपात ।

राग द्वेष अनुबध जाणे उत्सर्गने अपवाद ॥१५॥

निज स्वरूपने ओलसीने, अवलवे स्वरूप ।

चिदानंदधन आतमाते थावे निज गुण भूप ॥१६॥



चिनयथी जिन उत्तम केरा अवलंबे पद पद्म ।  
नियमाते परभाव तजीने पामे शिवपुर मन्त्र ॥६॥

॥ अक्षय तृतीया स्तवन ॥

केशरिया थॉमुं प्रीत करीरे ॥ देशी ॥

म्हारी रस सहेलडी, आज आदीश्वर कियो पारणो ।  
म्हारी सुगुण सहेलडी, पहिला तीर्थकर कियो पारणो ।  
सुतीने सुपनो आवियो सिरें, आंगण आई जहाज ।  
वस्तु भर्या आविया सरे, जाग्या श्रेयांस कुमार रे ॥१॥  
दादा कहीये दीपता सरे, जोग लियो जिनराज ।  
भरत नरेश्वर पाटवी सरे, सार तणा परिवार रे ॥२॥  
घडा एकशो आठ सेलडी, रस भर्या छे नीका ।  
उलट भावसे श्रेयांस बहिरावे, मांड दिया प्रभु बुकारे ।३।  
देव दुंदुभि बाज रही है सो नैया की वर्षा ।  
बारे मास से कियो पारणो, भूख गई सब तिरसारे ।४।  
रिद्धि सिद्धि कारज मनो कामना, घर घर मंगलाचार ।  
दुनियां हर्ष वधामणा सरे, आखातीज त्योहार रे ।५।  
श्री शेत्रुंजे सिद्ध क्षेत्र, जे उत्तम कहिये धाम ।

श्री मंथना मांछित पुरो, पुरो मोटा न्याम रे । ६।  
 मरुट काटो विघन निवारो, राखो हमारी लाज ।  
 वे कर जोड़ी नान्हँ कहेता, ऋषभदेव महाराज रे । ७।

॥ श्री केवल ज्ञान कल्याणक स्तवन

जावो जावो हे मेरे साधु, रहो गुरु के मन ॥देशी॥

द्विन्दकारी प्रभुर्जी लेवे, नयम मुखद अपार ।

अधिकारी आतम गुण धानरु, पावे परम उदार ॥टेर॥

अप्रमत्त भाषों में निचरे, जगपति जगदाधार ।

कर्म प्रकृति जडमूल सपावे, मात्र अपूर्व धार ॥१॥

अनिवृत्ति आतम गुण उज्ज्वल-मुत्तम कृपाय विकार ।

ज्ञान मोह होते हो जाता, नाम जेप समार ॥२॥

यथा स्यात्त चाग्निश्च रमणीया, ज्ञायिक भाव प्रचार ।

धानी चार कर्म सब होंता, पावें अनन्ते चार ॥३॥

अनन्त केवल ज्ञान अनुपम, केवल दर्शन नार ।

सर्व अनन्त चाग्नि विराजित, वीर्य अनन्त अपार ॥४॥

स्त्रिय देवगण मित्ररश्च रचते, समप्रसन्न बलिदार ।

सर्व स्युर्ग सर्व सन् गतों में, चार रोग विस्तार ॥५॥

अशोक वृक्ष सुर पुष्प वृष्टिवर-तीन छत्र मनुहार ।  
 चामर युग भामण्डल, मणिमय-सिंहासन श्रीकार ॥६॥  
 दिव्य ध्वनि राजित प्रभु राजे, चार दिशा मुख चार ।  
 देव दुंदुभी नाद सुखद ये, प्रतिहारज जयकार ॥७॥  
 ज्ञानातिशय पूजातिशय-वचनातिशय धार ।  
 अपायां पगमातिशय श्री-अरिहंत गुण अधिकार ॥८॥  
 केवल ज्ञान कल्याणक होते, होवे जग उपकार ।  
 समवसरण में वारह परिपद्-बोध सुने दिल धार ॥९॥  
 पुण्य कर्म तीरथ सुख सागर-भविजन तारणहार ।  
 प्रकटत प्रकटे पुण्य महोदय, आत्मगुण भंडार ॥१०॥  
 तीर्थकर भगवान प्रभु “जिन-हरि पूज्येश्वर सार ।  
 सर्वज्ञातम नमो नमो नित मङ्गल मालाकार ॥११॥

### ॥ बीस स्थानक का स्तवन ॥

तीर्थकर वन्दो तारे दुख वारे तिहुं काल में ॥६॥  
 अनुपम आत्म दर्शन योगे, परमात्म पद ध्याने ।  
 जलमे कमल रहे ज्यों जीवन, साधक पद सनमानेरे ।१।  
 महा मोहमति मूढ जगत जन हों, जिन शासन रागी ।

आवि व्याधि उपाधि मुक्त हो, मान सुखी बड मागीरे ।२।

तीन भुवन उपकार मान, कल्याण मित्र जयकारी ।

पुण्य महोदय गुणी महाशय, अतिकारी अतारी रे ।३।

वीम स्थानक महा साधना, साधक निज भव तीजे ।

उत्तरोत्तरे सुकृत सुख भोगी, प्रभुता गुणगम भीजेरे ।४।

मद्य चतुर्विध तीर्थ थापते, अदभुत अतिशय वारी ।

तीर्थकर पर नाम कर्म कौ, सकल करे बलिहारी रे ।५।

जनम मरण जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।

तीर्थकर दर्शन धन पावै, धन दिन पुण्य प्रमाता रे ।६।

प्रभु दर्शन परमारथ पुरण, जो कर पावे प्राणी ।

ज्योतिर्मय जगम यह पावन, ग्योले निज गुण ग्याणीरे ।७।

अरिहंतादिक वीम पटोकी, सेवा गिर सुयकारी ।

अप्रमत भाषेकर भविजन, पावै पद अतिकारीरे ।८।

आठमिद्धि नयनिधि निज परमे, प्रगटे परमोदारी ।

तीन लोह नाग्राज्य नपटा, टामी बने पिचारीरे ।९।

धाम स्थानक पिधि तिन आगम, गुरु गमने नरनारी ।

आराधे साधे निज विद्धि, अजगमर पद धारीरे ।१०।

सुन्दरानर मगरान महोदय, जिन हरि पूजिन स्वामी ।

वीम स्थानक गुणीगुण गावु, नादर नद्रा नमामिरे ।११।

## ॥ गौतम विलाप का स्तवन ॥

आशुं सुज्युं रे प्रभु आपने ।

महावीर आपज गौतम केरा अमुल्य आधार ।

देवशर्माने प्रतिबोधवा मोकली मने दुर कर्योशुं प्रभुजी प्राणाधार ।

मुक्यो अटुलो मने आखरे ।

गौतम गौतम अमृत वाणे करशे कोण पोकार ॥२॥

कोणे भदंत कहीने वंदु ।

तारा विना प्रश्न करुं क्या, शंकाना हरनार ॥३॥

शिष्यो घणा तारे मुज समा ।

मारा अंतरे तारा प्रेमनो संधायो छे तार ॥४॥

स्वार्थी थया मोक्ष पामवा ।

पारख्युं ना मैं आपनुं हैयुं तुच्छ मारो अवतार ॥५॥

मिथ्यात्वी घुवड समा गर्जसे ।

अज्ञान मांहे डुबेलाने काढशे कोण बहार ॥६॥

भानुसमा तमे तेजमां ।

भारत शोभा नष्ट थई छे, आपज सबलो सार ॥७॥

चरणे डस्यो चंडकोशियो ।

समता आपी आपे उगार्यो, मोकल्यो स्वर्ग मोभार ॥८॥

चदन बालानी तोडी वेडीयो ।

अडदगाकुला स्वीकारीने, मुक्ति दीधा निग्धार ॥६॥

मोक्षे जता न लीधो माथमा ।

आंछु अमा थात शु आपनु , भुली गया सह्यु प्यार ॥७॥

छेल्ली पले निरख्या नहीं ।

अर्हाया आगी जोवु त्यारे लागे बधे अधकार ॥११॥

आशु वु ममता भयु ।

तु नितरागीने हूँ छु रागी समज्यो नहीं लगार ॥१२॥

नितराग ऋयु चित्तने जपऋथेणी आरोहीने ।

पाम्या पूर्ण प्रकाश ॥१३॥

जीणमोही गौतम थया ।

प्रातः काले फेरल ज्ञाने प्रकाश्या अपार ॥१४॥

इन्द्रे स्थाप्या प्रभु प्यानमा ।

अमृत जेनी राणी जेनी मोध पाम्या, नर नार ॥१५॥

गौतम समरे प्रमातमा ।

होशयी पामे मीठा मेरा थावे पछी भनपार ॥१६॥

अजित ज्ञानी गौतम ।

मुनि हेमेन्द्र मजे शुभ भावे, खोलो अंतर द्वार ॥१७॥

ॐ

## एक महान् समय

(तर्जः- तेरे पूजन को)

समय वह था धन एक महान्, हुये जय बद्धमान सावान् । स्था ।

प्रकाश जात ने पाया, आनन्द विश्व में छाया ।

मिला था दिव्य सुदर्शन दान ॥हुये०॥१॥

अहिंसा पावन धर्म बताया, हिंसा महा अधर्म मिटाया ।

पिला कर बोध सुधा का पान ॥हुये०॥२॥

सत्र को साम्यभाव सिखलाया, जीवन का सत्र खेद हटाया ।

दिखाया शासन सुखद विधान ॥हुये०॥३॥

सुखसिन्धु को सहज बनाया, अपना पद वह आप हि पाया ।

अपुनर्भव भागी निरवान ॥हुये०॥४॥

कार्तिक अमावस तम छाया, देव दिवाली उत्सव मनाया ।

पाये 'कवीन्द्र' गौतम ज्ञान ॥हुए० ॥५॥



॥ पौषध स्तवन ॥

॥ दोहा ॥

जेशलमेर नगर मलो, जिहाँ श्री पार्श्व जिनन्द,  
 प्रह उठीने प्रणमता, आपे परमानन्द ॥१॥  
 तामु चरण प्रणमी करी, पौषध विधि विस्तार ।  
 पमणिम श्रावक हितमणी, आगमने अनुमार ॥२॥  
 पौषध पौषध मङ्करे, पौषध करे महुकोय ।  
 पण पौषण विधि नामलो, जिम निस्तारे होय ॥३॥

★●★

॥ ढाल ॥

प्रभु प्रणु र पार्श्व जिनेश्वर स्वम्भणो (देगी)

पहिले दिनरे माऊ ममय उपकरण महु,  
 षटिलेहिरे, म्ठीपरं रागे चहु ।  
 पात्रलि रातेरे, सापु ममीप श्रापी करी ।  
 गटं प्रायन्त्रित्तरे, प्रथम करे, मन मंजरी ।  
 उझालो मरणि श्रावक करे,  
 पौषध षट प्रहारि गुन्मुणे ।



ऊचरे दंडक तीनवेला सामायिक पण तिगारुवे ।  
 पछे करे प्रतिक्रमणो आंतरणी, साधु वंदे तिहांकरो,  
 कर्मभूमी अट्टावयं, मंगलिक कुलक भणे ॥४॥  
 प्रतिलेखनारे, अंग ओही सगली करे ।  
 उपाश्रयरे पुँजी काजो उद्धरे ।  
 ईरियावहीरे, स्थापना आगे पडिकमे ।  
 करे स्वाध्यायरे, साधु सहुने पायनमे ॥चा॥  
 पायनमे सगला साधुकेरा, सुणे सुगुरु वखाणए ,  
 ध्यान करे अथवा गुणे प्रकरण, कहे अर्थ सुजाणए ।  
 पूण प्रहर पडिलेहण करिने, मात दियोपडि लेहए,  
 जलघडा लोटा वाटका, पडिलेहवा वलि तेहए ॥५॥  
 गुरु साथेरे, चैत्य प्रवाडी करे खरी,  
 देव वन्दे रे शक्र स्तव पांचे करी ।  
 उपाश्रयरे आवी ईरियावहि पडिकमे,  
 आगमणोरे, आलोही नीचानमे । चाल ।  
 नीचानमें बेसणे बेसे, मिच्छामि दुक्कडं देइने,  
 तिबिहार होतो पाणिहारे, मुहपत्ति पडिलेहिने ।  
 नत्रंकार गुणतां पाठ भणतां प्रहर तीजे दिन रहे ।  
 पडिकमी इरियावही पहली बेउ प्रतिलेखना करे ॥६॥

धर्मशालारे, पूँजी इरियावहि पडिकमे,  
 थे पालोरे स्थापना पडिलेहे समे ।  
 मुहपत्तिरे पडिलेही उभोथई,  
 करे गुरु मुखरे पचखाण मनगह गई ।  
 गहगही आठे देड खमासण, वस्त्र सघला आपणा,  
 पडिलेहवा मात्रा, तिणपरी, चरवले पूजण तणा ।  
 देहनी चिंता काज जातों, करे भगवन् आग्रस्सही ।  
 मारगे इरिया समिति शोधे, आवतो ऋहे निम्सही ॥७॥



## ॥ ढाल ॥

वेकर जोडी विनवु जी सुण खाभी शुभ वीसण (देशी)  
 हिन भणियण तुमे मामलोजी, गुरुने नमानो शीस ।  
 मामायिक पौषध तणाजी, दूपण ढालो वत्रीश ॥चाल॥  
 वत्रीश दूपण, वार तनुना, मार बेसे पालडी,  
 अति अथिर आमन, दृष्टि चचल, करे काया एरुडी,  
 करे काम सायध, लेउगणा, आलस, करकडा मोडए,  
 खणेसाज, वीमामण करावे, अधकरे, मलछोडए,



## ॥ ढाल ॥

वचन तणां दूषण दशे जी जाणो इणं प्रकार,  
 कुवचन बोले लोकनेजी दे दूषण सहसात कार  
 सहसात कूड कलंक दे वलि आपछंदे बोलए  
 संक्षेप सुत्र करे आलावो कलह करे नीटोलए  
 उपहास करिने करे विकथा मांडी न राखे पड् संपदा  
 आवो वेठो उठो एहवि कहे भापा सर्वदा



## ॥ ढाल ॥

दश दूषण हिव मनतणा जी, सांभलजो मन एक ।  
 न्यून अधिक न लहे क्रिया जी मनमे नहीं विवेक  
 चाल सुविवेक जग, धन लाभ, वांछि करे पौषध वीहतो  
 पौषध करीने करे नियाणो, पुत्र प्रमुखने ईहतो  
 अभिमान रीसे करे पौषध, धरे फल संदेहए  
 वली विनय विवेक, लगार न करे, मन दूषण दश एहए



॥ ढाल ॥

काया रचन मन तणाजी, दूपण एह वरीश ।  
 टाले दूपण तेहनाजी पाँपध विश्वावीम ॥चाल॥  
 विश्वावीस बोले नहि बलि उवाडे मृत्यु आपणे ।  
 छुटा गृहीमु रात न करे, पांच दूपण परिहरे ॥  
 उपवास करीने दिवस पाँपध, कीधो नहीं तो निशि करे ।  
 एक पत्र छोडे नहीं, उत्तराध्ययन अनुसरे ॥

★

॥ टाल ॥

चउपखी पाँपध रुगोजी, मुत्र मिद्धात विचार ।  
 दृग्भिद्र सुरि विरगे रुगोजी, चारीम महर्षी सार ।  
 चारीम महर्षी गार बोले दिवस प्रति करवां नहीं ।  
 पाँपध अनिर्या संनिमाग, रनि पर्य दीवस करवा नही ।  
 उरिष्ट गन्त तगों अर्थे शीलाना चारिज करे ।  
 पाँपध पगृपग पर्य रुग्यागक निधी परेण आदरे ॥१०॥

★

## ॥ ढाल ॥

उपधाने पौषध कह्योजी, महानिशीथ प्रमाण ।  
 तिविहार चउविहार जीमणोजी, एक विगय घृत जाण ॥  
 घृत जाण आचरणा परंपरा पूर्वाचार्ये एक ही ।  
 भगवंत भाष्यो सत्य तेहिज खेंचाताण करवी नही ॥  
 तिविहार पौषध चार प्रहरी अष्ट प्रहरी सीमाकरी ।  
 तीन गच्छ तशी आचरणा, त्रेविधी तेपिण आदरी ॥१३॥



## ढाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति उजलोरे (देशी)

सांज समय स्थंडिला करेरे, वार वार मांहि बहार ।  
 ईरीयावही इम पडिक्कमेरे, जयति हुअण करे सार ॥१४॥  
 संवेगी श्रावक साचो पौषध एह, एतो भगवंत भाष्यो तेह ।  
 त्रिकरण शुद्ध करो तुमेरे, जिम पामो भवछेह ॥१५॥  
 अर्ध चिंव रवि आथमेरे, सुत्र कहो लुविचार ।  
 स्तवन कहे तिण हीज समयरे, तारा दीसे दो चार ॥१६॥  
 कालवेला इम पडीक्कमेरे, लांबी क्षमासमण देइ ।  
 शुद्ध क्रियानी खप करेरे, मन संवेग धरेइ ॥१७॥

जिनदत्त कुशल काउस्सग करे रे, प्रतिक्रमणाने छेह ।  
 प्रतिक्रमण पुरो धयोरे, सरतरनी विधि एह ॥साज ॥१८॥  
 मजुर स्त्रे राते करेरे, प्रहर सीम सभाय ।  
 गीस गावे वैरागनारे, पातरू दूर पलाय ॥सांज ॥१९॥



## ढाल ॥ ४ ॥

भारग देशरू मोक्षनोरे (वेशी)

बहुपडि पुत्रा पारेसीरे, वादे देव उल्लाम ।  
 सथारा गाथा मणोरे, रामे जीवनी रासीरे ॥२०॥  
 ते नरनारिया, सरुल करे अत्रतारो रे ।  
 निशी पीपय करे, भावे भावना धारो रे ॥ ते० ॥२१॥  
 पाप अठारे परीहरे रे चित्त धरे मरणा चार ।  
 डाम मंथारो मथरे रे, ध्यान धरे मुनिचारो रे ॥२२॥  
 धर्म जागरिया, जागतो रे, करे मनोग्य एह ।  
 गंयम लेई जिन दिने रे, धन्य दिवस मुज तेहो रे ॥२३॥  
 गरा श्रावक पीपय कर्यो रे, वीर बसाणयोरे तेह ।  
 निग पणि तुमे पीपय करोरें, जिम पामो शिव गेहोरे ॥२४॥  
 प्रीत भय पाटगनो धग्गी रे, नामे उदायन राय ।

तिण राते पौषध कीयोरे, वीरवंदन चित्त लायरे ॥२५॥  
 तुंगीया नगरी तणारे, श्रावक शुद्ध अनेक ।  
 जिण विधि ते पौषध क्रियोरे तिम करज्यो सुविवेक रे ॥२६॥  
 वलि श्रावक पौषध क्रियोरे, आनन्द ने कामदेव ।  
 वलि दृष्टान्त सुवाहनोरे, मन धरज्यो नित मेवोरे ॥२७॥

## ढाल ॥ ५ ॥

महामुनीश्वर नित नमुंजी (देशी)

पाछलि राते उठिने हो श्रावक होय सावधान ।  
 राई प्रायश्चित्त काउस्सग करे हो, देव वांदे सुविधान ॥२८॥  
 सवेगी श्रावक, पौषधनी विधि एह ।  
 मिलती सुत्र सिद्धां तने हो, मति मन करज्यो संदेह ॥२९॥  
 उच्च स्वर बोले नहीं हो, दोष कह्या भगवंत ।  
 वलि सामायिक लेइने हो, प्रतिक्रमण करे तंत ॥३०॥  
 प्रतिलेखन क्रिया करे हो, सघली पूरवरीत ।  
 सहु सज्जाय किया पछे हो सुगुरु वंदे धरि प्रीत ॥३१॥  
 पहली पौषध पारिने हो, सामाइक पण पार ।  
 प्रतिलाभे अणगार ने हो, अतिथि संविभाग विचार ॥३२॥

विधि सेती पौषध करे हो, बहु फलदायक होय ।  
 अविधि सघाते कीजता हो, काज सरे नहीं कोय ॥३३॥  
 पण विविनी रूप कीजता हो, अविधि हुवे जे काय ।  
 मिच्छामि दुक्कड दीजता हो, छुटक वारो थाय । ॥३४॥  
 पौषध औषध कर्मनो हो, टाले दुर्गति दुःख ।  
 अशुभ कर्म महु चय करे हो, आपे शास्त्रत सुख ॥३५॥  
 उत्कृष्ट पौषध तणी हो, यह विधि कही विस्तार ।  
 जेशलमेरी सघने हो, याग्रह करि सुविचार ॥३६॥  
 नोले से सिडसठ समय हो, नगर मरोट मभार ।  
 मिगशिर सुदि एक्रम दिने हो, शुभ दिन सुर गुरुवार ॥३७॥  
 श्री जिनचद्र खरीश्वर हो, श्री जिनसिंह खरीश ।  
 मरुल चद सुपसायले हो, समय सु दर भणे शीस ॥३८॥



## अट्टाईस लब्धि का स्तवन

॥ दोहा ॥

प्रणमं प्रथम जिनेसरु, शुद्ध मनं सुखकार ।  
 लब्धि अट्टाईस जिन कही, यागमने अधिकार ॥१॥  
 प्रदन व्याकरणं प्रगट, भगवती सूत्र मभार ।  
 पन्नपणा आवश्यक, वारु लब्धि विचार ॥२॥



आंघ्रिल तप कर ऊपजे, लब्ध्यां अट्टावीस ।  
तेहिज परभट अरथसुँ, सांमलजो सुजगीस ॥३॥



टाल ॥ १ ॥

सफल संसार (देशी)

अनुक्रमे हिव अधिकार गाथा तणें ।

लब्धिना नाम परिणाम सरिखा भणें ॥

रोग सहु जांय जसु, अंग फरस्यां सही ।

प्रथम ते लब्धि छे, नाम आमोसही ।४।

जासु मल मूत्र, औषध समा जाणिये ।

वीय विप्पोसही लब्धि वखाणीये ॥

श्लेष्म औषधि सारिखो जेहनो ।

तीजी खेलो सही नाम छे तेहनो ॥५॥

देहना मेलथी कोट दूरे हुवे ।

चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवे ॥

केश नम्र रोम सहु अंग फरसे सही ।

रहे नहीं रोग सबोसही ते कही ॥६॥

एक इन्द्रिय करी पाच इन्द्रिय तणा ।  
 भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा ॥  
 वस्तु रूपी सह जाणियें जिणकरी ।  
 सातमी लब्धि ते अवधि ज्ञाने करी ॥७॥



टाल ॥ २ ॥

आव्यो तिहा नर हर (देगी)

हिच आगुल अटीये ऊणो मानुष क्षेत्र ।  
 संजी पचेद्री तिहा जे वमय विचित्र ॥  
 तसु मननो चितित जाणें थूल प्रकार ।  
 ते रुजुमति नामे आठमी लब्धि विचार ॥८॥  
 सपूरण मानुष क्षेत्रे मजावंत ।  
 पचेन्द्रिय जे छे तसु मन वाता तंत ॥  
 सुखम परजायें जाणे महू परिणाम ।  
 ए नवमी रुहीये त्रिपुलमती सुभनाम ॥९॥  
 जिण लब्धि प्रभावे उडी जाय आकाश ।  
 ते जंधा त्रिधाचारण लब्धि प्रकाश ॥  
 जसु वचन सराने खिण मे खेरु थाय ।  
 ए लब्धि इग्यारमी आसी निप रुहाय ॥१०॥

सह सूक्ष्म वादर देखे लोकालोक ।  
 ते केवल लब्धि वारमिये सहुथोक ॥  
 गणवर पद लहिये तेरमी लब्धि प्रमाण ।  
 चवदम लब्धे करी चवदे पूरव जाण ॥११॥  
 तीर्थकर पदवी पामें पनरमी लब्धि ।  
 सोलम सुखदाई चक्रवर्ति पद रिद्धि ॥  
 बलदेव तणो पद लहिये सत्तरमी सार ।  
 अठ्ठारमी आखी वासुदेव विस्तार ॥१२॥  
 मिसरी घृत खीर मेळ्यां जेहं सर्वाद ।  
 एहवी लहे वाणी उगणीसमी परसाद ॥  
 भणीयो नवि भूले सूत्र अरथसु विचार ।  
 ते कुष्टिक बुद्धि वीशमी लब्धि विचार ॥१३॥  
 एक पद भणीने आवे पद लख कोड ।  
 इकवीशमी लब्धि पायाणु सारणी जोड ॥  
 एक अरथे करी उपजे अरथ अनेक ।  
 बावीसमी कहीये वीज बुद्धि सुविवेक ॥१४॥

दाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति ऊजलोरे (देंगी)

मोलह देश तणी सहीरे, दाहक सगति वखाण ।  
 तेह लब्धि तेवीसमीरे, तेजो लेश्या जाण ॥१५॥  
 चतुर नर सुणज्यो एसु विचार ।  
 आगमनें अविचार वारु लब्धि विचार ॥चतु०॥  
 चनदह पूरव धर मुनि वरुरे, उपजता सदेह ।  
 रूप नगो रचि मोरुलेरे, लब्धि आहारक एह ॥१६॥  
 तेजो लेश्या अग्निनेरे, उपशमना जलधारणी  
 मोटी लब्धि पचवीसमीरे, शीतो लेश्या जाण ॥१७॥  
 जेण सगत्तिसुं विकुरवेरे विविध प्रकारे रूप ।  
 सदगुरु कहे छत्रवीसमीरे, वैक्रिय लब्धि अनूप ॥१८॥  
 एरुण पात्रे आदमीरे, जीमावे केई लाख ।  
 तेह अक्षीण महाणसीरे सत्तावीसमी साण ॥१९॥  
 चूरे सेना चक्रसीसनीरे, संघादिकने काज ।  
 तेह पुलाक लब्धि कहीरे अट्टापीशमी साज ॥२०॥  
 तेज शीत लेश्या विट्टेरे तेम पुलाक विचार ।  
 मगपती स्रव में भावियोरै, ए विट्टेनो अविचार ॥२१॥

चक्रवर्ती बलदेवनीरे, वासुदेव त्रण एह ।  
 आवश्यक सूत्रे अछे रे नहिं इहां संदेह ॥२२॥  
 पन्नवणा आहारनीरे कल्पसूत्र गणधार ।  
 तीन तीन इक इक मिलीरे, वारू आठ विचार ॥२३॥  
 प्रण व्याकरणों कहीरे, वाकी लवध्यां वीस ।  
 सांभलतां सुख ऊपजेरे, दोलत हुवे निशदिश ॥२४॥

★

॥ कलश ॥

वत्त सत्तरसैं छवीसे मेरू तेरस दिन भले ।  
 श्री नगर सुखकर लूण करणसर आदि जिन सुपसाउले ॥  
 वाचना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरख विलासए ।  
 श्री धर्मवद्धन स्तवन भणतां प्रगट ज्ञान प्रकाशए ॥२५॥

★

दश पच्चखाण का स्तवन

॥ दोहा ॥

सिद्धारथ नंदन नमू । महावीर भगवंत ।  
 त्रिगडे बेठा जिनवरू, परपद वार मिलंत ॥१॥  
 गणधर गौतम तिण समे, पूछे श्री जिनराय ।  
 दश पच्चखाण किसा कहा क्रियां कवण फल थाय ॥२॥

टाल ॥ १ ॥

सीमवर करज्यो मया (देशी)

श्री जिनवर इम उपदिशे, सामल गोयम स्वाम ।  
दश पचक्खाण क्रिया थका, लहिये अविचल ठाम ॥३॥  
ननकारसी बीजी पोरसी, साढ पोरसी पुरिमुड्ट ।  
एकासख नीवी कही, एकलठाण देवडिढ ॥४॥  
दात आत्रिल उपवासही, एहीज दश पचक्खाण ।  
एहना फल सुण गीयमा । जूजूवा करू वखाण ॥५॥  
रतनप्रभा शर्कराप्रभा वालुका तीजी जाण ।  
परुप्रभा तिम धूमप्रभा, तमप्रभा तम तम ठाम ॥६॥  
नरक सात कहीए सही, करम कठिन कर जोर ।  
जीव करम वस ते सही, उपजे तिण हीज ठोर ॥७॥  
छेदन भेदन ताडना भूए ठूपा बलि त्रास ।  
रोम रोम पीडा करे, परमाहम्मी तास ॥८॥  
रात दिवम क्षेत्र वेदना, तिल भर जिहां नहीं सुम्ब ।  
क्रिया करम जे भोगवे, पामे जीव बहु दुवस ॥९॥  
एक दिनरी ननकारमी, जे करे भाव विशुद्ध ।  
मो वरम नरकनो आउखो, दूर करे ज्ञान बुद्धि ॥१०॥  
नित्य करे ननकारसी, ते नर नरक न जाय ।  
न रहे पाप बलि पाछला, निग्मल होवेजी काय ॥११॥

## ढाल ॥ २ ॥

श्री विमलाचल सिरतिलो (देशी)

सुण गौतम पोरसी कियों महामोटो फल होय ।  
 भावसुं जे पोरसी करे, दुरगति छेदे सोय ॥१२॥  
 नरक मांहे जे नारकी, वर्षे एक हजार ।  
 करम खपावें नरक में, करता बहुत पुकार ॥१३॥  
 एक दिवसनी पोरसी, जीवकरे इक तार ।  
 करम हणें सहस एकना, निश्चयसुं गणधार ॥१४॥  
 दुरगति मांहे नारकी दश हजार प्रमाण ।  
 नरक आयु खिण एक में, साढ पोरसी करे हांण ॥१५॥  
 पुरमड्ढ करे नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ।  
 लाख वर्ष करमने दहे, पुरमड्ढ करम खपाय ॥१६॥  
 लाख वर्ष दश नारकी, पामें दुःख अनंत ।  
 इतरा करम एकासणे, दूर करे मन खंत ॥१७॥  
 एक कोडी वर्षां लगे, करम खपावे जीव ।  
 नीवीय करतां भावसुं, दुरगति हणें सदैव ॥१८॥  
 दश कोडी वर्ष नरक में, जितरो करे कर्म दूर ।  
 तितरो एकल ठाणीय, करे सही चकचूर ॥१९॥  
 दात करंतो प्राणीयो, सो कोडी परमाण ।  
 इतरा वर्ष दुरगति तणा, छेदे चतुर सुजाण ॥२०॥

थापिल नो फल ऋषो, कोडी एक हजार ।  
 ऋम सषावे षण परे, भाव थापिल अधिकार ॥२१॥  
 कोडि सहस्र दण वरस ही, सहे दुःख नरक मन्तार ।  
 उपवास करे एक भावसु, तो पामे मुक्ति मन्तार ॥२२॥



टाल ॥ ३ ॥

वेवेड वर लावो (देखी)

लाव कोडी वरमा लगे, नरके ऋता रीप रे ।  
 गौतम गणधारी छठ तप करता थका,  
 सही नरक निगारे जीव रे ॥२३॥  
 नरके वरप कोड लाख ही, जीव लहे तिहा दुःख रे ।  
 ते दुःख अट्टम तप हुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥२४॥  
 देदन मेदन नारकी, कोटा कोटि वरमांड रे ।  
 इगति बुमतिने पण्डितो, दशमं एतो फल होड रे ॥२५॥  
 नितफाय जल पीरता, कोटा कोटी वरपनो पाप रे ।  
 दूर करे गिण एक मं, निन्ने होय निःपाप रे ॥२६॥  
 बलि य विशेषे फल ऋषो, पांचम करे उपवास रे ।  
 पामे ज्ञान पांचे मन्ता, वन्ता विभुवन परजाम रे ॥२७॥



चवदश तप विधिसुं करे, चवदह पूरव होइ धाररे ।  
 इम अनेक फल तप तणा कहेतां वलि नावे धार रे ॥२८॥  
 मन वचने काया करी, तप करे जे नर नार रे ।  
 इग्यारे वरष एकादशी करतां लहे भवपार रे ॥२९॥  
 आठम तप आराधतां, जीव न फिरे संसार रे ।  
 अनंत भवानां पाथी, छूटे जीव निरधार रे ॥३०॥  
 तप हुंती पापी तर्था निसतरीयो अरजुन माली रे ।  
 तप हुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज सुकुमाल रे ॥३१॥  
 तपना फल सूत्ते कक्षां पच्चकखाण तणा दश भेद रे ।  
 अवर भेद पिण छे घणा, करता छेदे त्रय वेद रे ॥३२॥



॥ कलश ॥

पच्चकखाण दशविध फल प्ररुप्या, महावीर जिण देव ए ।  
 जे करे भवियण तप अखंडित तासु सुर पय सेव ए ॥  
 संवत निधि गुण अश्वराशि वलि पोष सुद दशमी दिने ।  
 पद्म रंग वाचक सीस गणिवर रामचंद्र तप विधि भणें ॥३३॥



उपधान तप स्तवन

श्री महावीर धरम परकाशे, वेठी परपदा वारजी ।  
 अमृत वचन सुणी अति मीठा, पामें हरष अपारजी ॥१॥

सुणो रे श्रावक उपधान वद्यां पिन, किम सक्के नयकारजी ।  
 उत्तराध्ययन बहु श्रुत ग्रध्ययनें एह भएयो अविकारजी ॥२॥  
 महाभिशीथ सिद्धात मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी ।  
 अनुक्रम सुद्ध परपर दीसे, सुविहित गच्छ आचारजी ॥३॥  
 तप उपधान वद्या पिन किरिया, तुच्छ अल्प फल जाणजी ।  
 जे उपधान वद्या नरनारी तेहनो जनम प्रमाणजी ॥४॥  
 तप उपधान ऋहो सिद्धाते, जो नवि माने जेहजी ।  
 अरिहत देवनी आण विराधे, ममस्ये मत्र मत्र तेहजी ॥५॥  
 यपल्या घाट समा नरनारी, पिण उपधाने होयजी ।  
 किरिया करतां आदेश निरदेश, काम सरे नदीं कोयजी ॥६॥  
 इरु घेवरने वलि खाडे भरियो, अति घणो मीठो थायजी ।  
 एरु श्रावक उपधान वहेतो, धन धनते कहेनायजी ॥७॥

✽

टाल ॥ २ ॥

नयकार तणो तप पहिलो वीसड जाण ।  
 इरियामहीनो तप वीजो वीमड आण ।  
 इण विट्ट उपधाने निरचे नाण मडाण ।  
 वारे उपनामे गुरुमुग्ग वे वे पाणि ॥८॥

पेंत्रीसड त्रीजो नमोत्थुणं उपधान ।  
 त्रिण वायण ओगणीस तप उपवास प्रधान ।  
 अरिहंत चेई तप चोथो चोकड एह ।  
 उपवास अढाई वायण एक गुणगेह ॥६॥  
 पांचमो लोगस्स तप अट्टात्रीसड नाम ।  
 साढा पनरह उपवासे वायण त्रिण ठाम ।  
 पुक्खर वरदी तप छट्ठो छक्कड सार ।  
 साढा त्रण उपवासे वायण एक सुविचार ॥१०॥  
 सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल ।  
 उपवास करे इक चौविहार ततकाल ।  
 एक वायण करे वलि गुरुमुख सरस रसाल ।  
 गच्छ नायक पासे पहिरे माल विशाल ॥११॥  
 माल पहिरण अवसर आणी मन उछरंग ।  
 घर सांरू वारू खरचे धन बहु रंग ।  
 अति उच्छ्रव कीजे राती जोगो दिला खोल ।  
 गीतगान गवावे पावे अति रंगरोल ॥१२॥

ढाल ॥ ३ ॥

ए साते उपधान, त्रिधि से जे वहे,  
 ते सूधी किरिया करे ए ।  
 लिण न करे प्रमाद, जीव जतन करे,  
 पु जी पु जी पगला भरे ए ॥१३॥  
 न करे क्रोध-रूपाय हड हड हसे नहीं,  
 मरम केहने नवि कहे ए ।  
 नारों धरनो मोह, उत्कृष्टी करणी करे,  
 साधु तणी रहणी रहे ए ॥१४॥  
 पट्टर सीम सज्जाय करे पोरसी भणी,  
 उचे स्वर बोले नहीं ए ।  
 मन माहे भावे एम, धन धन ए दिन,  
 नरमन माहि सफल सही ए ॥१५॥  
 जे साते उपधान, त्रिधि सेती जहे,  
 पहिरे माल सोहायणी ए ।  
 तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फलदायक,  
 करम निरजरा अतिवणी ए ॥१६॥  
 परमन पामे रिद्ध देवतणा सुख,  
 नवीश बद्ध नाटक पडे ए ।

लाभे लीलविलास, अनुक्रम शिवसुख,

चढती पदवी जे चढैए ॥१७॥



॥ कलश ॥

इम वीर जिणवर भुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो ।

उपधानना फल लहे उत्तम भविय जण आणंदणो ॥

जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकलचंद मुणीसरो ।

तसु शीश वाचक समयहुंदर भणें वंछित सुखकरो ॥१८॥



१४ पूर्व का स्तवन

॥ ढाल ॥

बेकर जोडीताम (देशी)

जिनवर श्री वर्धमान,

चरम तीर्थकर ग्रह उठी प्रणमुं मुदा ए ।

श्रुतधर श्री गणधार,

सूरि शिरोमणि, नमतां नवविध संपदा ए ॥१॥

चवदे पूरव नाम, सूत्रे जूजुवा,

वीर जिणंदे भाखिया ए ।

तेहिउ सुगुरु पमाय, वरण वस्तुं इहां,  
 आगम में जिम उपदिश्या ए ॥२॥  
 पहिलो पूरव उत्पाद, दजो आग्रायणी,  
 वीर्य प्रवाद तीजो नमूं ए ।  
 अन्ति नाम्ति प्रवाद सत्ता जाणीये,  
 नाणप्रवाद पंचम गिणु ए ॥३॥  
 अड्डो मत्य प्रवाद, सत्तम आतम,  
 कर्म प्रवाद अड्डम गिणो ए ।  
 प्रणारयान प्रवाद, नामे नवम,  
 पित्ता प्रवाद दशमो कह्यो ए ॥४॥  
 इग्यारम नाम अरन्ध्य प्राणायाम वारमो,  
 क्रिया विशाल तेरम मणो ए,  
 विदुमार इण नाम, चउदे ए कह्या,  
 शास्त्र थकी में सग्रह्या ए ॥५॥



ताल ॥ २ ॥

श्री विमलाचल मिर तिलो (दिगी)

उत्पाद पूर सोहाभणो, कोटी पद परमाण ।  
 षट्मावे प्रगट छे, ते विहा, त्रिपदी भाव विणाय ॥१॥

सर्व द्रव्य पर्याय तणो, जीव विशेष प्रमाण ।  
 दूजो पूर्व आंग्रायणी, छिन्नू लख पद जाण ॥२॥  
 पद लख सित्तर जेहनी, संख्या परगट एह ।  
 वीर्य प्रवलता जीवनी, भाखी तीजे तेह ॥३॥  
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ।  
 पद संख्या साठ लाखनी, सप्त भंगी स्याद्वाद ॥४॥  
 ज्ञान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोड ।  
 मत्यादिक पण भेदशुं, पद संख्या इक कोड ॥५॥  
 सत्य प्रवाद छेट्टो कहुं, भाखुं सत्य स्वरूप ।  
 संख्या पद इक कोडनी, भाखी अगम अनूप ॥६॥  
 नित्या नित्य पणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ।  
 छव्वीस पद कोड जेहना, सूत्रे आणया भाव ॥७॥  
 कर्म प्रवाद तणो हिवे, प्रगटपणे अधिकार ।  
 लाख असी पद जेहना, कोडी इग निरधार ॥८॥  
 नवमो पूर्व कहुं हवे, नामे प्रत्याख्यान ।  
 लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित्त आन ॥९॥  
 अतिसय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान ।  
 विद्या अनुपम सातसे, कोडी दस लख जान ॥१०॥  
 अचन्ध्य कल्याण नाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण ।  
 ज्योतिः शास्त्र विचारणा, चौविह देव कल्याण ॥११॥

प्राणायाम पद चारमो, छप्पन्न लक्ष इग कोड ।  
 प्राण निरोधन ते क्रिया, शास्त्रे आययो जोड ॥१२॥  
 कायिकयादिक जे क्रिया, छद क्रिया सुविशाल ।  
 पद संख्या नव कोडनी, तेरमो किरिया विशाल ॥१३॥  
 लोकसार विंदु चन्द्रमो, नामे अरथ निहाल ।  
 पद संख्या इक कोडनी, लाख पच्चीश समाल ॥१४॥  
 लोक प्रत्यय देखण मणी, संख्या गज परिमाण ।  
 सोल सहस अरु तीनशे, अरु तेंयामी जाण ॥१५॥  
 पूरन संख्या एक ही, गुण मालायी देख ।  
 आगे बुधजन सोध जो, वाकी देश विशेष ॥१६॥

●  
ताल ॥ ३ ॥

वीर जिनेसर इम उपदिशे (दिशी)

सूत्रे गृथे गणधारा, अरथे श्री अरिहत भाखे रे ।  
 ते श्रुत ज्ञान नमुं सदा, पापतिमिर जिम नाशे रे ॥१॥  
 वाणीरे वीरजिणदनी, सुणज्यो चित्त हित आयी रे ।  
 तत्त रमणता अनुसरे, संपूरण गुण खाणी रे ॥२॥  
 पिपय रूपाय तजी करी, ज्ञान भगति उर धारी रे ।  
 विधि मयुत्त जिन मदिरे, प्रभु गुण पाप जुहारी रे ॥३॥



तप जप संयम आदरी, श्री श्रुत ज्ञान निधानो रे ।  
 सदगुरु चरण नमी करी, संवर जोग प्रधानो रे ॥४॥  
 अक्षत लेई ऊजला, गुंहली सुंदर कीजे रे ।  
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ॥५॥  
 चवद पूर्व व्रत इण परे, सुगुरु संजोग लेई रे ।  
 विधिसुं पुस्तक पूजीये, चित्त अति आदर देई रे ॥६॥  
 इम तप संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजे रे ।  
 धर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लीजे रे ॥७॥  
 पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ।  
 नवकर वाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥८॥  
 देहरे देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ।  
 सनात्र पूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥९॥  
 इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदे रे ।  
 चवदह रज्जु सिरोमणि, जीव अक्षय गति वेदे रे ॥१०॥  
 तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोई रे ।  
 भवियण पिण तुमे आदरो, ज्यूं भव भ्रमण न होई रे ॥११॥



॥ फलश ॥

इम मयल सुखकर गच्छ सरतर तपे रवि जिम कांत ए ।  
 सोमाग्ग सूरि मुण्डिद इण पर कखो पूर्व वृतात ए ॥  
 सत्त अठारे वरश छिन्नु नयर श्री बालूचरे ।  
 ए स्तवन भणता श्रवण सुणता सयल मन वाञ्छित फले ॥१२॥



पैंतालीस आगम का स्तवन

॥ दोहा ॥

चोत्रीशे श्री तीर्थपति, नमू देव अरिहत ।  
 अर्थ प्रकाशे गणधरपुरे, द्वादश अग महत ॥१॥  
 त्रिपदी लही गणधर रचे, सत्र अर्थ सजोग ।  
 अचर रूपे शारदा, प्रणाम् त्रिकरणयोग ॥२॥  
 टीका कर्ता जगत गुरु, सत्र करे गणधार ।  
 पचासी युत त्रिस्तरे, नय निक्षेप पिचार ॥३॥  
 दृपम काल दुर्भिक्षमें, भूले नारम अंग ।  
 रुठ पाठमें लिखतकर, रचना रची अमग ॥४॥  
 प्कदिल अरु देवद्विगणि, आचारज सय पंच ।  
 चोगशी आगम लिप्ते, कोटि ग्रथ तज संच ॥५॥

काल दोष से अब मिले, आगम पेंतालीस ।  
ताको मुनि विवरण करे, मानो त्रिसत्रावीस ॥६॥



ढाल ॥ १ ॥

जगत गुरु त्रिशला नंदन जी (देशी)

आचारांग पहिलो कह्योजी, मुनि आचार विचार ।  
सुयगडांग दूजो अछे जी, पाखंडी निरधार ।  
जगतगुरु भाखे वीर जिनंद ॥१॥  
दश ठाणा ठाणांग मेंजी, समवायांग संख्यात ।  
सहस छत्तीस भला प्रश्ननोजी भगवई अंग विख्यात ॥२॥  
धर्म कथा ज्ञाता भणीजी दश श्रावक व्रतधार ।  
दशा उपासक दशा सातमोजी, अंग कह्यो निरधार ॥३॥  
अंतगड केवली जे थयाजी, वरणन अष्टम अंग ।  
पंचानुत्तर जे गयाजी, अष्टुत्तरो वाई चंग ॥४॥  
अंगुष्ठादिक प्रश्ननोजी, प्रश्न व्याकरण नाम ।  
सुख दुखना फल भाषियाजी, सूत्र त्रिपाके ताम ॥५॥  
अटार सहस आचारांग मेंजी, पद संख्या परिमाण ।  
वर्ण संख्याते पद हुवेजी, ठाण दुगुण सब जाण ॥६॥

उग्रार्ड उपांगमेजी, कोणिक अवडरूप ।  
 वर्णन नगरी आदि देजी, साभल मविजन चूंप ॥७॥  
 स्वरियाभ पूजा करीजी, जिन प्रतिमा नवरग ।  
 द्रव्य भाव निहुं भेदसु जी, राय प्रशनीय चित्त चग ॥८॥  
 जीवतणो अभिगम सहीजी, विजय देव प्रस्तान ।  
 जीनाभिगमे तीजो कह्यो जी, सुरकृत बहुविध भाव ॥९॥  
 पन्नप्रणा मे जाणज्योजी, जीवाजीव विचार ।  
 जवुद्वीपनी वर्णनाजी, नाम थकी गुणधार ॥१०॥  
 सूरचद्र विग्रह गतीजी, पन्नती निहुं जाण ।  
 रुप्पिया कप्पवडिसियाजी, पुप्फिया नामे वसाण ॥११॥  
 पुप्फचुलिया जाणीयेजी, वन्दिदशा इण नाम ।  
 नामथी ग्रर्थ पिछाण ज्योजी, साभलता सुसधाम ॥१२॥

●  
 ढाल ॥ २ ॥

ग्याली लाल अणपट रग लागो (दिशी)

छेदतणा प्रायश्चित्तनाजी, छेद छए एजाण ।  
 वृहत्कल्प व्यग्रहारमेंजी, भाख्यो भगवत जान ।

सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो ।  
 राचो रांचोरे भविक दिल् धार ।  
 इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञानी ॥१३॥  
 महानिशीथे माखियोजी, जिन पूजा विहुं भेद ।  
 श्रावक द्रव्य भावसुंजी, मुनिवर भाव उमेद ॥१४॥  
 जीतकल्प वलि निशीथ छेजी, और दशा श्रुतस्कंध ।  
 दश पयन्ना जाणियेजी, चौसरण संथार प्रबंध ॥१५॥  
 तंदुल वेयाली चंदा विज्जायजी, गणिविज्जा अभिधान ॥१६॥  
 ज्योतिष करंड महापचखाणजी, चार सूत्र छे मूल ।  
 आवश्यक दश वैकालिकजी, उत्तराध्ययन अमूल ॥१७॥  
 चारे अनुयोगे करीजी, रचना सूत्रे जाण ।  
 तेह नय निक्षेपथीजी, अनुयोग द्वार प्रधान ॥१८॥  
 द्रव्यानुयोग छए द्रव्यनीजी, चर्चा विधि विस्तार ।  
 चरण करण अनुयोग में जी, मुनि श्रावक आचार ॥१९॥  
 गणितानुयोग गणनाकरीजी, पृथ्वी नग विमाण ।  
 वर्ग मूल धन मूलथी जी, जाणो चतुर सुजाण ॥२०॥  
 धर्मकथा अनुयोग में जी, धर्मकथा दृष्टांत ।  
 ए चारों विस्तारियाजी, पेंतालीस सिद्धांत ॥२१॥



ढाल ॥ ३ ॥

सागानेर विराजे (देशी)

सुण, सुण गौतम वाणी, इम वीर वदे गुण खाणी रे ।  
 भप्रिया आगमसु मन लावो, मन कल्पित वात मा गावो रे ॥२२॥  
 नदी सूत्र चिरनदो, यामें पच ज्ञानने वढो रे ।  
 ज्ञानना भेद वखाएया, मति अठावीसे आएया रे ॥२३॥  
 श्रुत चवढे वीसां भेदे, ए मिथ्या मतने छेदे रे ।  
 अग्रधि छ असरय प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥२४॥  
 केवल एक प्रकारे, ए सप्त विधि नदी भासे रे ।  
 ए तो महु आगमनी नूढ, स्यादवाद गंगनी नूढ रे ॥२५॥  
 अग उपागनी टीका, कर्ताने नमूं निरभीका रे ।  
 प्रथम हरिभद्र शीलाकाचारी, श्री अभय देव बलिहारी रे ॥२६॥  
 मलयगिरी गुरु स्वामी इत्यादिकने शिरनामी रे ।  
 नामान्य विशेषे भाखी निश्चय व्यग्रहार छे, साखी रे ॥२७॥  
 उत्सर्ग वचन छे, केउ, अपवाद वचन ने लेउ रे ।  
 इरु मनसु आरावो, मनप्राछित सगला साधो रे ॥

## दाल ॥ ४ ॥

मंगल कमला कंदए (देशी)

पैतालीश आगम तणी ए, हिव तपविधि सुराजो हित भणी ए ।  
 दूज पांचम एकादशी ए, ज्ञान तिथि तपथी कर्म जाय खसी ए ।२६।  
 शक्ति छते उपवास ए, आंघिल निवीथी उल्लास ए ।  
 एकासण अथवा करे ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए ॥३०॥  
 जाप करे दो हजार ए, देव वंदन पूजन सार ए ।  
 प्रतिक्रमण करे दोनुँ टंक ए, आगम सुरो अर्थ निसंक ए ॥३१॥  
 ऊजमणो हित चित करे ए, गुरुभक्ति चित्तसुं आदरे ए ।  
 भक्ति करे साहमी तणी ए, जे पढे पढावे ते भणी ए ॥३२॥  
 अन्न वस्त्र पुस्तक करे दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ।  
 ते पामे श्रुत ज्ञान ए, क्रमथी लहे पद निर्वाण ए ॥३३॥



## ॥ कलश ॥

शुभ नंद शर निधि चंद्र वरषे, माघ सुदि पंचम दिने ।  
 वर नयर बिकानेर सुन्दर बृहत् खरतर गण घणे ।  
 गणधार कीर्ति सरिंद पाठक रामगणि रुद्धि सार ए ।  
 इम करिय स्तवना सुय महोदय सदा जय जय कार ए ॥३४॥

## इरियावही का स्तवन

प्रमु प्रणमु रे पास जिणोसर वभणो (देणी)

पढ पऊज रे प्रणमी वीर जिनदना ।

त्रिकरण सुधरे करि मुनि वर पय वदना ॥

अइमत्तेरे पडिकमी जिम इरीयावही ।

श्री वीरनी रे वाणी तहत करि सरदही ॥

उल्लालो सरदही नाणी मन सुहाणी चित्त आणी ते वली ।

मिच्छामि दुकड तणी सख्या कहिसुं जिम कही केवली ॥

भू दग जलण तिम वाउ वणसइ विगल पण इद्री तणी ।

करता विराहण ऊरम वध्या दू ते ऊरना भणी ॥

✱

ढाल ॥ १ ॥

पुट्टी दगरं तेऊ वाऊ वणस्सई ।

पण थापर रे नादर सुद्धम दसे थई ॥

प्रत्येऊजरे वणस्सई इग्यारे थया ।

वाणीस रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥३॥

पज्जत्त अपज्जत्तग वराणया विगल तिय छह भाल ए ।

जल थल खेचर भुयग दुट पण इद्रिय तिरि अडियाल ए ॥



धम्मादि माते नरक पुट्टी नारकी जिहां सान ए ।  
ते चवद भेदे करी जाणो पञ्चनय अपञ्चन ए ॥२॥

॥ ढाल ॥

पनरह विधरे सुरगण परमाहम्मिया ।  
किल विपियारे त्रिविध करम ते निम्मिया ।

जंभिय दस रे नव लोकांतिक जाणिये ।  
सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणिये ॥३॥

वखाणिये दस विध भुवन पतिना तार रवि शशि रिखगहा ।  
चर थिर दसे विध जोइसी सुर ब्रह्माण्या जिणवीर जिहां ॥  
वारह वैमानिक पण अणुत्तर नव ग्रंवेके नव भण्या ।  
पञ्चत अपञ्चतग अठाणुं अधिक सत संख्या गण्या ॥

✽

॥ ढाल ॥ २

मेव आमम सही ए (देशी)

पंच भरत वलि ए रवत पंच ए, पंच विदेह वर भूमिका ए ।  
खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणिए असिकसि मसिहि आजीविका ए ॥  
हेमवंत क्षेत्र वलि हरिवर्ष, रम्यक एरण्यवत सही ए ।

मेरु पिण पाखती चार चार क्षेत्र ए दशकुरु अरुमरु भूमि कहीए । ४।  
हिमगिरि शिगराय दाट चिहुं आरिअ लवण समुद्र मांहि विस्तरीए  
मात सात अतर दोय पासे द्वीप छप्पन अतर धरी ए ।  
दोइसे भेद दुई आगला जाणिये मणुय पञ्जत्त अपञ्जत्तया ए ।  
एरुमो एरु समुच्छिम भेद ए तीनसे तीन मणुया थया ए ॥५॥

✱

टाल ॥ ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र हुवो जयनार ए (देशी)

पणमय तेसठत्रिध जीव सह छे एह,

अभिहय आदिकु ढस गुणित करीजे तेह ।

पण सहस छसे बलि तीस अधिकते जाण ।

ते रागे दोसे दुगुणा करी पखाण ॥६॥

दुई सहस डग्यारह दुइ मय साठ प्रमाण ।

ए प्रपचन वाणी जाणी हित उर आण ।

मन वच काया करि त्रिगुणा करि ते अरु

तेतीस सहस मत सात अमी निःमरु । ७।

बलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा कीध ।

डरु लभ्य मङ्गल उग तिसय चालीस प्रमिद्ध ।

अतीत अनागत वर्तमान बलि काल ।  
 जे थई विराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥२॥  
 तीन लाख सहस चार वीस अधिक ते थाय ।  
 अरिहंत प्रमुख छह साखे छ गुणा भाय ।  
 इम लाख अठारह बलि सहस चउवीस ।  
 इकसो वीसोत्तर हुई संख्या निसदीस ॥६॥



दाल ॥ ४ ॥

चोपाईनी (देशी)

इणपरि मिछामि दुक्कडं देई, भविक तरया भवजल निधि केई ।  
 तरे अछे बलि आगल तरसी, निरमल केवल लक्ष्मी वरसी ।१०।  
 इरियावही धरम गंगाजल, स्नान करि आतम करे निरमल ।  
 स्वमुख भाषे वीर जिनेसर, सूत्र करि गूँथे ते श्रुतधर ।११।  
 इम पडिकमी मुनिवर अइमत्तो, वीर सीस केवल पद पत्तो ।  
 त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जे, मानव जन्म सकल इम कीजे ।१२।



॥ कलश ॥

इम वीर जिणवर ज्ञान दिणयर सयल लोय सुहंकरो ।  
 तिय लोय सामी सिद्धि गामी सुद्ध धरम धुरंधरो ।

उवज्झाय लक्ष्मी कीर्ति सीसे जैन वाणी मन धरी ।  
गणि लच्छि बल्लभ स्तवन भणे इम संजुणयो भावे करी ॥१३॥



## चौद गुणठाणा का स्तवन

थभण पुर श्री पास जिणदो (देशी)

गुमति निणद रुमति दावार, वंदु मन सुव वारवार ।  
आणी भाव अपार, चौदे गुण स्थानक सुविचार ।  
रुहिम्यु सत्र अरथ मन धार, पामे जिम भवपार ॥ १ ॥  
प्रथम मिथ्यात्प कथो गुणठाणो, बीजो सास्पादन मन आणो ।  
तीजो मिश्र वसाणुं, चौथो अनिरति नाम रुहाणो ।  
देश विरति पंचम परमाणो, छट्टो प्रमत्त पिछाणुं ॥ २ ॥  
अप्रमत्त मनम लहीजे, अट्टम मपूर्व करण रुहीजे ।  
अनिवृत्ति नाम नवम्म, सूजम लोम दमम सुविचार ।  
उपयाव मोह नाम इग्यार, सीण मोह पारम्म ॥ ३ ॥  
तेरम मयोगी गुण धाम, चउदम थयो अयोगी नाम ।  
पग्गु प्रथम विचार, उगुरु कुदेव कुम्म पसाणें ।  
एह लवण मिथ्या गुणठाणे, तेहना पच प्रकार ॥ ४ ॥



दाल ॥ २ ॥

सकल संसारनी (देशी)

जेह एकांत नय पक्ष थापी रहें ।

प्रथम एकांत मिथ्यामति ते कहे ।

ग्रंथ उत्थापि थापे कुमति आपणी,

कहे विपरीत मिथ्यामती ते भणी ॥५॥

जैन शिव देव गुरु सहु नमे सारिखा ।

तृतीय ते विनय मिथ्यामति पारिखा ।

सूत्र नवि सरदहे रहे विकलपधरें,

संसई नाम मिथ्यात चोथो भणे ॥६॥

समझ नहीं कांई निज धंध रातो रहे ।

एह अज्ञान मिथ्यात्व पंचम कहे ।

एह अनादि अनंत अभव्यने ।

करिय अनादि तिथि अंत सुभव्यने ॥७॥

जेम नर खीर घृत खंड जीमने वमे ।

सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ।

चोथ पंचम छड्डे ठाण चटिने पड़े ।

किणहि कपाय वसि आय पहिले अडे ॥८॥

रहे विच एक समयादि पट आवलि ।

गहीय सासादने स्थिति इसी सांभली ।

हिव अहीं मिश्र गुणठाण व्रीजो कहे,  
जेम उत्कृष्ट अंतर महुरत लहे ॥६॥



टाल ॥ ३ ॥

वेकर जोडी ताम (देशी)

- पहिला चार कषाय शम करि समकृती केतो सादि मिथ्यामती ए ।  
ए वेहिज लहे मिश्र, सत्य अमत्य जिहां सरदहणा वेउ छती ए ।१०।  
मिश्रगुणा लय माहि मरण लहे नहीं आउ बंध न पडे नवो ए ।  
केतो लहे मिथ्यात के समकृत लहे मति सरसी गति परभवे ए ।११।  
चार अप्रत्याख्यान उदय करी लहे मति त्रिण किहां समकृत पणो ए ।  
ते अप्रगति गुणठाण तेत्तीम मागर साधिक तिथि एहनी भणो ए ।१२।  
दया उपशम सवेग निर्वेद आमता समकृत गुण पाचे धरे ए ।  
महु जिन वचन प्रमाण जिन शामन तणी अधिक २ उन्नति करे ए ।१३।  
केटक समकृत पाय पुदगल अरधताईं उत्कृष्टा भवमे रहे ए ।  
केटक भेदि गठी अतर महुरते चढते गुण शिषपद लहे ए ।१४।  
चार कषाय प्रथम त्रिण बलि मोहनी मिथ्या मिश्र सभ्यक्त्तनी ए ।  
गाते प्रकृति जास पगढी उपशमे ते उपशम समकृत धणी ए ।१५।  
जिण माते जय कीप्र ते नर चायकी तिणहीज मय शिष अनुमरे ए ।  
धामल माण्यो आउ ताते तिहा थकी तीजे चोत्रे भव तरे ए ।१६।

## ढाल ॥ ४ ॥

इण पुर कंवल कोइ न लेसी (देशी)

पंचम देशविरति गुणठाण, प्रगटे चौकडी प्रत्याख्यान ।  
 जेण तजे बावीश अभक्त, पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥१७॥  
 गुण इकवीश तिके पण धारे, साचा वारे व्रत संभाले ।  
 पूजादिक पट्कारक साधे, इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥१८॥  
 आर्त रौद्र ध्यान हुवे मंद, आयो मध्य धरम आनंद ।  
 आठ वरस ऊणी पुव्वकोड, पंचम गुणठाणे थिति जोड ॥१९॥  
 हिव आगे साते गुणठाण, इक इक अंतर महुरत मान ।  
 पंच प्रमाद वसे जिण ठाम, तेण प्रमत्त छट्टो गुण धाम ॥२०॥  
 धविर कल्प जिन कल्प आचार, साधे षट् आवश्यक सार ।  
 उद्यत चौथा चार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥२१॥  
 सूधो राखे चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधे ।  
 जिहां प्रमाद क्रिया विध नाशे, अप्रमत्त सत्तम गुणभासे ॥२२॥

## ढाल ॥ ४ ॥

श्री शंखिसर पास जिनेसर भेटिये (देशी)

पहिले असे अट्टम गुणठाणा तणे ।

आरंभे दीय श्रेणी संक्षेपे ते गिणे ।

उपशम श्रेणि चढे जे नर हुवे उपशमी ।

क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दश क्षय गमी ॥२३॥

तिहा चटना परिणाम अपूरव गुण लहे ।

अड्डम नाम अपूरव करण तिणे कहे ।

शुक्ल ध्याननो पहिलो पायो आदरे ।

निरमल मन परिणाम अडिग ध्याने धरे ॥२४॥

हिय अनिवृत्ति करण नमो गुण जाणिये ।

जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न आणिये ।

क्रोध मान ने माया सजल ना हयें ।

उदे नहीं जिहा वेद अवेद पणो तिणे ॥२५॥

जिहा रहे सुक्षम लोभ काडक शिव अभिलखे ।

ते सुक्षम संपराय दशम पडित देखे ।

शान्त मोह इण नाम इग्यारम गुण ऋहे ।

मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपशम लहे ॥२६॥

श्रेणि चढ्यो जो काल करे किणही परे ।

तो थावे अहमिद्र अवर गति नादरे ।

चार वार सम श्रेणि लहे संसार में ।

एक भवे दोय श्रेणि अधिक न ह्ये किं ॥२७॥



चदि इग्यारम सीम समी पहिले पडे ।

मोह उदे उत्कृष्ट अरध पुदगल रडे ।

क्षपक श्रेणी इग्यारम गुणठाणो नहीं ।

दशम थकी वारम चढे ध्याने रही ॥२८॥



ढाल ॥ ६ ॥

एक दिन कोई मगध आयो पुरंदर पास ए (देशी)

खीणमोह नामे गुणठाणो वारम जाण ।

मोह खपायो नेडो आयो केवल नाण ।

प्रगटपणे जिहां चारित्त अमल यथा आख्यात ।

हिव आगे तेरम गुणठाणा तणी कहे वात ॥२९॥

घातिय चौकडी क्षय गई रहीय अवातिय एम ।

प्रकृति पच्यसी जेहने जूना काषड जेम ।

दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित्त पंच अनंत ।

केवल ज्ञान परगट थयो विचरे श्री भगवंत ॥३०॥

देखे लोक अलोकनी छानी परगट वात ।

महिमावंत अटारे दूषण रहित विख्यात ।

आठे वरसे ऊणी कही इक पूरव कोडी ।

उत्कृष्टि तेरम गुणठाणे ए थिति जोडि ॥३१॥

कर शैलेसी करण निरू ध्या मन वच फाय ।  
 तेह अयोगी अंतममे सहु प्रकृति खपाय ।  
 पाचै लघु अक्षर उचरता जेहनो मान ।  
 पचम गति पामे शिषपद चउदम गुणथान ॥३२॥  
 ग्रीजे वारमे तेरमे मांहे न मरे कोय ।  
 पहिलो वीजो चोथो परभव साथे होय ।  
 नारक देवनी गति मांहे लाभे पहिला चार ।  
 धुरला पाच तिरि मांहे मणुए सर्व विचार ॥३३॥

★

॥ कलश ॥

इम नगर वाहडमेरु मदन सुमति जिन सुपसाउले ।  
 गुणठाण चौद विचार वरणयो भेद आगमने वले ॥  
 सवत्त सत्तरसे छत्तीसे श्रावण वदि एकादशी ।  
 वाचक विजय श्रीहरप सानिध कहे मुनि इम धर्ममी ।३४।

●

२४ ढुंडक का स्तवन

हाल ॥ १ ॥

आदर जीव क्षमा गुण आदर ए (दिशी)

पूर मनोरथ पाम जिनेसर, एह करु अरदामजी ।  
 तारण तरण निरुद्ध तुम्ह नामली, आयो ह धरि यासजी ।१।

इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी ।  
 गिलगिचिया जिम आयो गिडतो, साहिव हाथे साहीजी ।२।  
 तुं ज्ञानी तो पिण तुभ आगे, वीतक कहिये वातजी ।  
 चौबीस दंडक मांहू भमियो, वरणुं तेह विख्यातजी ।३।  
 साते नरक तणो इक दंडक असुरादिक दस जाणजी ।  
 पांच थावर ने तीन विकलेन्द्रि उगणिस गिणती आणजी ।४।  
 पंचेन्द्रि तिर्यचने मानव, एह थया इकवीसजी ।  
 व्यंतर ज्योतिषने वैमानिक इम दंडक चौबीसजी ॥५॥  
 पंचेन्द्रि तिर्यच अनेनर, पर्याप्ता जे होयजी ।  
 ए चौविह देवां मा उपजे, इम देवा गति दौयजी ॥६॥  
 असंख्याते आउखे नर तिरि, निश्चे देवज थायजी ।  
 निज आउखे समके ओछे, पिण अधि के नवि जायजी ॥७॥  
 भवनपती के व्यंतर तांडू, समृच्छिस तिर्यचजी ।  
 सरग आठमे तांई पहुंचे, गर्भज सुकृत संचजी ॥८॥  
 आऊ संख्याते जे गर्भज, नर तिर्यच विवेकजी ।  
 वादर पृथ्वी ने वलि पाणी, वनस्पति प्रत्येकजी ॥९॥  
 पर्याप्ता इण पांचे ठामे, आवी उपजे देवजी ।  
 इण पांच मांहे पिण आगे अधिकारि कहुं हेवजी ॥१०॥

तीजा सरग थकी माडी सुर, एकेन्द्री नरि थायजी ।  
 अद्रुमथी उपरला सगला, मानव माहे जायजी ॥११॥

✱

दाल ॥ २ ॥

आज निहेज्योरे दीसे नाहलो (देशी)

नरक तणी गति आगति इण परे, जीन भमे ससार ।  
 दोग गतिने दोग आगति जाणियें, बलिय त्रिशेष विचार ॥१२॥  
 मख्याते आऊ पर्याप्ता, पचेन्द्री तिर्यच ।  
 तिमहिज मनुष्य एहिज वे नरक में, जाये पाप प्रपच ॥१३॥  
 प्रथम नरक लगि जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम वीय ।  
 गृध प्रमुस परी त्रीजी लगे, सिंह प्रमुस चौथीय ॥१४॥  
 पचमी नरके सीमा सॉपनी, छट्टी लगे स्त्री जाय ।  
 मातमिये माणस के माहलो, उपजे गर्भज आय ॥१५॥  
 नरक थकी आवे त्रिहुं दड के, तिर्यच के नर थाय ।  
 ते पण गर्भजने पर्याप्ता, सख्याती जमु आय ॥१६॥  
 नारकियाने नरकथी निसरया, जे फल प्राप्ती होय ।  
 उत्कृष्टे मागो करि ते ऋहु, पिण निश्चे नहीं कोय ॥१७॥  
 प्रथम नरकथी चरि चरुर्ता हुवे, वीजी हरि बलदेव ।  
 तीजी लगि तीर्थकर पद लहे, चौथी केवल हेन ॥१८॥

पंचमी नारकीनो सर्व विरति लहे, छट्टी देश विरत्त ।  
सातमी नरकनो समकित ही लहे, न हुवे अधिक निमित्त ।१६।

●  
ढाल ॥ ३ ॥

करम परीक्षा करण कुसर चल्थोरे (देशी)

मानव गति विण मुगति हुवे नहीं रे, एहनो इम अधिकार ।  
आऊ संख्याते नर सहु दंडकेरे, आवी लहे अवतार ॥२०॥  
तेऊ वाऊ दंडक बे तजीरे, बीजा जे बावीस ।  
तिहांथी आया थाये मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥२१॥  
नर तिर्यच असंख्य आउखेरे, सातमी नरकना तेम ।  
तिहांथी मरिने मनुष्य हुवे नहीं रे, अरिहंत भाख्यो एम ।२२।  
वासुदेव बलदेव तथा बली रे, चक्रवर्ती ने अरिहंत ।  
सरग नरकना आया ए हुवे रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥२३॥  
चौविह देव थकी चवि ऊपजेरे, चक्रवर्ति बलदेव ।  
वासुदेव तीर्थकर एवे हुवे रे, वैमानिक थकी बेव ॥२४॥

★

ढाल ॥ ४ ॥

नाभि अने मरुदेवा (देशी)

हिव तिर्यच तणी गति आगति कहिये अशेष ।  
जीव भमे इण परभव माहे करम विशेष ॥

आउ मंख्याती, जे नर तिर्यंच पिचार ।  
 ते मगला तिर्यंच माहे लहे अतार ॥२५॥  
 जिण तिर्यंचा माहे आवे नारक देव ।  
 ते ऋष्या पहिली तिण कारण न कहूं हेव ॥  
 पचेन्त्री तिर्यंच सख्याते आऊखे जेह ।  
 ते मरी चिहंगतिमा जावे द्वा नहीं संदेह ॥२६॥  
 यापर पाच तीने विकलेन्त्री आठे कहावे ।  
 तिहांयी आऊ मख्याता नर तिर्यंच में आवे ॥  
 विकल चवी लहे सर्ग प्रिरति पिण युक्ति न पावे ।  
 तेऊ वाऊधी आयो तेहने समकित नावे ॥२७॥  
 नारक वरजीने मगला ही जीव संमार ।  
 पृथ्वी आऊ उनम्पती माहे लहे अतार ॥  
 ए तीने द्वायी चरि आवे दसे ठामे ।  
 यापर विकल तिरि नर माहे उत्पत्ति पामे ॥२८॥  
 पृथ्वीकाय आदि देई दग दटके ण्ह ।  
 तेऊ वाऊ मां आरी उपजे तेह ॥  
 मनुष्य पिना नर माहे तेऊ वाऊ वे जाये ।  
 तिरचेन्त्री ते दग मांदि जाये पृथ्वी आवे ॥२९॥

एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत ।  
 वनस्पती मांहे तिहां रहीयो काल अनंत ॥  
 पुढवी पाणी अग्नि अने चोथो वलि वाय ।  
 काल चक्र असंख्याता ताईं जीव रहाय ॥३०॥  
 वेइंद्री तेइंद्रि अने चौरिन्द्री मभारे ।  
 संख्याता वरसां लगे भमियो कर्म प्रकारे ॥  
 सात आठ भव लगतां नर तिरयंच में रहियो ।  
 हिव मानव भव लहिने साधु ने वेप में रहियो ॥३१॥  
 राग द्वेष छूटे नहीं किम होवे छूटकवार ।  
 पिण्ण छे माहरे मन सुधता हरो एक आधार ॥  
 तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो ।  
 हिव संसार वणो भमियो तो पुद्गल आधो ॥३२॥  
 तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सामी ।  
 ताहरी सेव लहीतो में नवनिध सिध पामी ॥  
 अवर न कांइ इच्छूं इण भव तुहीज देव ।  
 सुधे मन एक होय जो भव भव ताहरी सेव ॥३३॥

॥ क्लश ॥

इम सयल सुखरु नगर जेशलमेर महिमा दिन दिने ।  
 मंवत्त सत्तरे उगणतीसे दिवस दीवाली तणे ॥  
 गुण विमल चद्र समान वाचरु विजय हरप मुमीस ए ।  
 श्री पासना गुण एम गावे धरममी मुजगीम ए ॥३४॥

★

मुहपत्ती पडिलेण का स्तवन

फपूर हुवे श्रति उजलोरे (देशी)

वरधमान जिनर तणाजी, चरण नमू चित्त लाय ।  
 ज्ञान क्रिया जिण उपदिसेजी, शिवसुख तणो उपाय ॥१॥  
 भविकजन धर श्री जिन उपदेश, छूटे कर्म किलेस ।  
 पडिलेहण मुहपत्ति तयीजी, भारी छे पचवीस ॥  
 तिहा ए माय विचारिये जी, इम भारे जगदीग ॥२॥  
 प्रथम बे पाम विलोकियेजी, यूर श्रयनी दृष्टि ।  
 ए पडिलेहण दृष्टिनीजी, करे धर्मनी पुष्टि ॥३॥  
 ममन्ति मित्र्या मित्रनीनी, मोहनी तीननो न्याग ।  
 रामराग म्नेहग ने जी, नन रानि निम दृष्टि ग ॥४॥



सीपवधृटक गुरु थकीजी, वाम हाथ करनाउ ।  
 नव अखोडा आदरोजी, नव पखोडा गमाउ ॥५॥  
 देवतत्व गुरुतत्व सुंजी, धर्मतत्व गृहीसार ।  
 कुगुरु कुदेव कुधर्मनोजी, तीन तणो परिहार ॥६॥  
 ज्ञान दरसण चारित्रनाजी, संग्रह तीन आचार ।  
 तजो विराधना तीन एजी, एह अर्थ अवधार ॥७॥  
 मन वचन कायानी सदाजी गुप्ती ग्रही जे शुद्ध ।  
 परिहरीये वलि जाणनेजी, तीने दंड विसुद्ध ॥८॥  
 पडिलेहण पचवीस एजी, मुहपत्तीनी सार ।  
 हिव पडिलेहण अंगनीजी, ते पिण चतुर सुविचार ॥९॥  
 हास्य रति अरति तीननेजी, सुद्ध करो वाम बांह ।  
 तजि भय शोक दुगंछनाजी, दक्षिण पिण करे साह ॥१०॥  
 धुग्ली लेश्या तीन एजी, ते शिरथी करि दूर ।  
 रिद्धि रस शाता गाखोजी, करि मुखथी चक्रचूर ॥११॥  
 काह सल्य तीन उर थकीजी, माया नियाण मिथ्यात ।  
 चार कपाय वे वगलथीजी क्रोधादिक करि घात ॥१२॥  
 तज पट्काय विराधना जी, चरण वेहुं शुद्ध होय ।  
 ए पडिलेहण अंगनीजी पचवीसे तूं जोय ॥१३॥

मम पडिलेहण जे करेजी, धर मन ज्ञान विवेक ।  
सकल कर्म दूरे करेजी, पापे सुख अनेक ॥१४॥



मली ।

रली ॥

नग्रही ।

ही ॥१५॥

॥१॥

॥२॥

॥३॥

अथ प्रथमे एक गज, ग्रही अयय एक ।  
पट्टिन नरे दृगज, अयय मिती अनेक ॥४॥

संयुत सकल नये करी, जुगत जुगत सुधवोध ।  
धन जिन शासन जग जयो, तिहां नहीं कोई विरोध ।५।



ढाल ॥ १ ॥

असाउरी (देशी)

श्री जिन शासन जग जयकारी, स्याद्वाद शुद्ध स्वरूप रे ।  
नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अमंग अनूप रे ॥६॥  
कोई कहे ए काल तणे वश, सकल जगत गत होय रे ।  
काले उपजे विणसे काले, अवर न कारण कोय रे ॥७॥  
काले गर्भ धरे जग वनिता, काले जनमे पूत रे ।  
काले बोले काले चाले, काले भाले घर सूत रे ॥८॥  
काले दूध थकी दही थाये, काले फल परिपाक रे ।  
विविध पदारथ काल उपाये, अंतकरे वेवाक रे ॥९॥  
जिन चउवीसे वारे चक्की, वासुदेव बलदेव रे ।  
काले कवलित कोई न दीसे, जसु करता सुरसेव रे ॥१०॥  
उत्सर्पिणि अवसर्पिणि आरा, छ छ जूजुय भांत रे ।  
पट ऋतु काल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न दिन रात रे ॥११॥  
काले वाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ।  
बुढापणे हुय बलि बलि दुर्वल, शक्ति नहीं लवलेश रे ॥१२॥

टाल ॥ २ ॥

गिरुआ गुण श्री वीरजी ए (देशी)

तत्र स्वभाव वादी वदेजी, काल किसुं करे रक ।  
 वस्तु स्वभावे नीपजेजी, विणसे तेमज निसक ॥१३॥  
 विवेकी जुओ जुओ वस्तु स्वभाव ।  
 छते योग जोपन वतीजी, वाभणी न जणे घाल ॥  
 मूछ नहीं महिला मुखेजी, कर तल उगे न घाल ॥१४॥  
 विण स्वभाव नवि सपजेजी, किमही पदारथ कोय ।  
 अ व न लागे नींढे जी, वाग वसते जोय ॥१५॥  
 मोग पीछ कुण चीतरे न जी, कुण करे सध्या रग ।  
 अंग विप्रिध सवि जीपनाजी, सु दर नयन कुरंग ॥१६॥  
 कांटा बोर वंजूलनाजी, कुणे अणियाला कीध ।  
 रूप रग गुण जूज्याजी, तस फल फूल प्रमिद्व ॥१७॥  
 विमहर मस्तके नित वसेजी, मणि हरे निख त्काल ।  
 परत विर चल वायरोजी, उरव अगननी भाल ॥१८॥  
 मच्छ तु व जलमां तरेजी, वूडे काग पाहाण ।  
 पंगी जाति गयणे फिरेजी, इण परे महिज विनाण ॥१९॥  
 गाय गृथी उपममेजी, हगडे करं विरेच ।  
 गोकुं नही रुग कोरदुजी, मकल प्रभाव अनेक ॥२०॥

देश विदेश काठनोजी, भुयमां थाये पाखाण ।  
 संख अस्थिनो नीपजेजी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण ॥२१॥  
 रवि तातो शशि सीयलोजी, भव्यादिक बहुभाव ।  
 छए द्रव्य आप आपणाजी, न तजे कोई स्वभाव ॥२२॥



दाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति ऊजलो रे (देशी)

काल किसु करे वापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज ।  
 जो न होइ भवितव्यताजी, तो किम सीफे कज रे ॥२३॥  
 प्राणी म करो मन जंजाल, एतो भावी भाव निहाल रे ।  
 जलधि तरे जंगल फिरेजी, कोडि यतन करे-कोय ॥  
 अण भावी होवे नहीं जी, भावि होयते होय रे ॥२४॥  
 आंवे मोर वसंतमांजी, डाले कोइ लाख ।  
 कर्या केई खांखटीजी, केई आंवा केई साख रे ॥२५॥  
 वांउल जिम भवितव्याजी, जिण जिण दिशे जाय ।  
 परवस मन भाणस तणोजी, तृण जिम पूटे धाय रे ॥२६॥  
 नियत वसे विण चिंतव्यूँजी, आवी मले तत्काल ।  
 वरसां सोनु चिंतव्योजी, नियम करे विसराल रे ॥२७॥  
 आठमो चक्री सुभूम ते जी, समुद्र पव्यो विकराल ।

ब्रह्मदत्त चक्री तण्डाजी, नयन हरे गोवाल रे ॥२८॥  
 शंभुहा जोयल करेजी, किम रागीमरे प्राण ।  
 श्राद्धेडी शर नाखियोजी, उपर ममे मिचाण रे । ॥२९॥  
 श्राद्धेडी नाने टम्बोजी, वाण लग्यो मीचाण रे ।  
 शंभुडो उटी गयोजी, जोयो नियति परमाण रे ॥३०॥  
 नदध दृष्टया नग्राममाजी, रान पट्ट्या जीवन ।  
 नदिर माटे मानरीजी, गरया ही न गहत रे ॥३१॥

✽

टाल ॥ ४ ॥

शास्त्री मनोहरजी (देगी)

शान धरनार नियति मनि कृती, परम करे ते थाय ।  
 परमे नम्य विगिय नर मुक्ति, जीव भया नरे थाय ॥३२॥  
 परम धरयो रे परम न लुटे रोष ।  
 परमे राम रम्या धराने मीन पामी ज्ञान ॥

कर्म वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ।  
 कर्म जिननें जोत्रो गमारे, खीला ठोप्यां कन्न ॥३५॥  
 कर्म एक सुखपाल वेसे, सेवक सेवे पाय ।  
 एक हय गय चढ्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ।३६।  
 उद्यममानी अंधतणी परि, जग हीडे हा हुतो ।  
 कर्म वली ते लहे सफल फल, सुख भर सेजे सुतो ॥३७॥  
 ऊँ दर एके कीधो उद्यम, करंडियो कर कोले ।  
 मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो डम डोले ॥३८॥  
 विवर करी मूपक तसु मुखमां, दीये आंपणुं देह ।  
 मार्ग लहि वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जोवो एह ।३९।



ढाल ॥ ५ ॥

तो चढियो घण माण गजे (देशी)

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए चारे असमत्थतो ।  
 सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थतो ॥४०॥  
 उद्यम करतां मानवीए, स्युं नवि सीम्हे काजतो ।  
 रामें रयणायर तरीए, लीयो लंका राजतो ॥४१॥  
 करम नियतिने अनुसरे ए, जेहमां सत्व न होयतो ।  
 देवल वाध सुख पंखियाएं, पियु पेसंता जोयतो ॥४२॥

पिण उद्यम किम निरुले ए, तिल माहेथी तेलतो ।  
 उद्यमथी उचो चढे ए, जोवो एकेन्द्रिय वेलतो ॥४३॥  
 उद्यम करता डक समेए, जेह न सीम्हे काजतो ।  
 तो फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाक्क तो ॥४४॥  
 उद्यम करि उर्यो विनाए, नवि रघाये अन्न तो ।  
 आनी न पडे कोलियोए, मुखमां खेपे जतन्नतो ॥४५॥  
 कर्म पूत उद्यम पिताए, उद्यम कीधा कर्मतो ।  
 उद्यमथी दूरे टलेए, जोयो कर्मनो मर्मतो ॥४६॥  
 दृट प्रहारी हत्या करीए, कीधा पाप अनततो ।  
 उद्यमथी पट्मास माए, आप थया अरिहत तो ॥४७॥  
 टीपे टीपे सरवर मरे ए, काँकरे काँकरे पालतो ।  
 गिरि जेहयागढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहालतो ॥४८॥  
 उद्यमथी जल विंदु ओए, करे पाहणमा ठामतो ।  
 उद्यमथी विद्या मणे ए, उद्यम जोडे दामतो ॥४९॥

✱

टाल ॥ ६ ॥

ए टिटी किछा राखी (देशी)

ए पाचे ही चाढ करता, श्री जिन चरणे आवे ।  
 अमियरसे जिन प्रयण सुणीने, आगढ अग न मावे रे ।७०।



समकित मति मन आणो रे,

नय एकांत म ताणो रे, ते मिथ्या मत जाणो रे ॥

ए पांचो समुदाय मिल्यां विण, कोई कारज न सीके रे ।

अंगुली जोगे कवल तणी परे, जे वूके ते रीकेरे ॥५१॥

आग्रह आणी कोई एकनें, एहमां दिये वडाई ।

पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥५२॥

तंतु सभावे पट उपजावे, कालक्रमे वणाई ।

भवितव्यतां होय ते नीपजे, नहीं तो विघन घणाई रे ॥५३॥

तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी ।

ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्पत्तु जेवो विचारी रे ॥५४॥

नयति वसे हलु कर्म थईने, निगोद थकी नीकलियो ।

पुण्ये मनुज भवादिक पामी सदगुरु ने जई मिलियो रे ॥५५॥

भवथितिनो परिपाक थयो तव, पंडित वीर्य उलसियो ।

भव्य स्वभावे शिवगति गामी, शिवपुर जईने वसियो ॥५६॥

वर्धमान जिन इण परि वीनवो, शासन नायक गावो ।

संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्यादवाद् रस पावो रे ॥५७॥

॥ कलश ॥

इम धर्म नायक मुगति दायक वीर जिनवर सद्गुण्यो ।  
 मय सत्तर सत्रत्त बन्दि लोचन वर्ष हर्ष धरी घणो ॥  
 श्री विजय देव सूरिद पटघर विजय प्रभु मुण्दि ए ।  
 कीर्ति विजय वाचक सीम इण परि विनय कहे प्राणद ए ।५८॥



### चौबीस तीर्थंकर का स्तवन

नयनों मे आकर बसना पारस बेकरार है (देशी)

मेरा एक ध्यान है, श्री चौबीसो भगवानों का ही एक ध्यान है।

श्री ऋषभ अजित जिन नामी ।

सभत्र अभिनन्दन स्वामी ॥

सुमति पदम सुपास है, चंडा प्रभुदो भावे मेरा एक ध्यान है ।१।

सुविधि शीतल श्रेयासा ।

वासुपूज्य विमल अवतंमा ॥

अनन्त धर्म नाथ है, शांति ॐ शांति शांति मेरा एक ध्यान है ।२।

कुन्धु अर मल्लीनाथा ।

मुनि मुत्रत शिवपुर साथा ॥

नर्मा परिष्ट नेम है, पारस पावन रंगफारी मेरा एक ध्यान है ।३।

शासन पति गुण गंभीरा ।  
 श्री वद्धमान महावीरा ॥  
 प्राणाधार सार हैं तीर्थकर तारणहार ॥ मेरा० ॥४॥  
 वृष गज घोडा कपि जानो ।  
 है कौंच कमल परमाणो ॥  
 स्वस्तिक स्वस्तिकार हैं, आगम के अनुसार ॥ मेरा० ॥५॥  
 है चन्द्र मकर श्रीवत्सा ।  
 खड्गी महिष प्रशस्ता ॥  
 वराह स्येन वज्र है, मृग छाग नन्द्यावर्त ॥ मेरा० ॥६॥  
 घट कूर्म नीलकज शंखा ।  
 फणि सिंह सुलांछन चंगा ॥  
 इनसे भान होत है गुरु गम से यह सद्य जाना ॥ मेरा० ॥७॥  
 अरिहंत सिद्ध पदधारी ।  
 गम अगम रूप अवतारी ॥  
 मूर्त अमूर्त भाव हैं, प्रभु के पावन चरणों में ॥ मेरा० ॥८॥  
 दो श्वेत रक्त हैं ।  
 दोनों दो नील है काले दोनों ॥  
 कंचन वर्ण सोल हैं वीसस्थानक तप से होते ॥ मेरा० ॥९॥

हैं सुखसागर भगवाना ।

हरि-पूजित गुण परधाना ॥

गुण बार आठ हैं गुण और अनन्ते उनमे मेरा एक ध्यान है। १०।

सुकवीन्द्र कीरति गावे-

आत्म परमात्म भावें ॥

जय जय कार पार हैं, है भयसागर से दूर मेरा एक ध्यान है। ११।



## श्री पुण्य प्रकाशनुं स्तवन

॥ दोहा ॥

मकल मिद्धि दायक सदा, चोरीसे जिनराय ।

सद् गुरु स्वामिनी सरस्वती ग्रमे प्रणष्टुं पाय ॥१॥

त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नदन गुण गमीर ।

शामन नायक जग जयो, वर्धमान बडवीर ॥२॥

एक दिन वीर जिणदने, चरणे करी प्रणाम ।

भक्ति जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥

सृक्ति मार्ग आराधिए, कही किण परे अरिहत ।

सुधा सरस तय रचन रस, माखे श्री भगवंत ॥४॥

अतिचार आलोडिए, त्रत बरीए गुरु साख ।

जीव सुमायो सयल जे, योनि चोराशि लाख ॥५॥

विधिषुं वली वोसिराविए, पापस्थानक अढार ।  
 चार शरण नित्य अनुसरो निंदो दुरिताचार ॥६॥  
 शुभ करणी अनुमोदिए, भाव भलो मन आण ।  
 अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥  
 शुभ गति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ।  
 चित्त आणीने आदरो, जिम पावो भव पार ॥८॥



ढाल ॥ १ ॥

ए छिंडी कीहां राखी (देशी)

ज्ञान दरिशाण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ।  
 एह तणा इह भव परभवना आलोइअे अतिचार रे ।  
 प्राणी ज्ञान भणो गुण खाणी, वीर वदे एम वाणी रे ॥१॥  
 गुरु ओलवीए नहि गुरु विनये, काले धरी बहुमान ।  
 सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीए वही उपधान रे ॥२॥  
 ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नवक रवाली ।  
 तेह तणी क्रीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥३॥  
 इत्यादिक विपरीत पणार्थी, ज्ञान विराध्युं जेह ।  
 आमव परभव वली रे भवो भव, मिच्छामि दुक्कडं तेह ।  
 रे प्राणी, समकित ल्यो शुद्ध जाणी वीर वदे एम वाणी रे ॥४॥

जिनप्रचने शंका नरि कीजे, नरि परमत अभिलाप ।  
 माधु तणी निंदा परिहरजो फल संदेह म राख रे ॥५॥  
 मूटपणु छडो परशमा, गुणवत ने आदरी ए ।  
 माहम्मी ने धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे ॥६॥  
 मद्य चैत्य प्रासाद तणो जे, अवरुणवाद मन लेख्यो ।  
 द्रव्य देवको जे विणमाड्यो, विणसता उवेख्यो रे । ॥७॥  
 इत्यादिक विपरीत पणार्थी, समकित सडयु जेह ।  
 आभय. मिच्छा. प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥८॥  
 पाच समिति त्रण गुप्त विराधी, आठे प्रवचन माय ।  
 माधु तणे धर्मे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥  
 श्रावकने धर्मे मामायिक, पोसहमा मन वाली ।  
 जे जयणा पूर्णक ए आठे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥  
 इत्यादिक विपरीत पणार्थी, चारित्र डोन्व्यु जेह आभय मि. ॥११॥  
 गर भेदे तप नवि कीधो, छते योगे निज शक्ते ।  
 वर्मेमन वच काया वीरज, नरि फोरवीड भगते रे ॥१२॥  
 नप वीरज आचार एणी पेरे, त्रिविध विराध्यां जेह ॥१३॥  
 तलीय विणेपे चारित्र केग, अतिचार आलोड्ये ।  
 नीर जिनेश्वर वयण सुणीने, पाप मैल नरि धोड्येरे ॥१४॥

ढाल ॥ २ ॥

पामी सुगुरु पसाय (देशी)

पृथ्वी पाणी तेउ वायु वनस्पति ।

ए पांचे थावर कहां ए ॥१॥

करी करसण आरंभ, क्षेत्र जे खेडीया ।

कुवा तलाव खणावीया ए ॥२॥

घर आरंभ अनेक, टांका भोयरां,

मेडी माल चणावीआ ए ॥३॥

लीपण गुंपण काज, एणी परे परे परे ।

पृथ्वीकाय विराधीया ए ॥४॥

धोवण नाहण पाणी भीलण अपकाया ,

छोति धोति करि दुहव्याए ॥५॥

माठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा ।

भाड भुंजा लिहालागरा ए ॥६॥

तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण ।

रंगण रांधण रसवती ए ॥७॥

एणी परे कर्मादान, परे परे केलवी ।

तेउ वाउ विराधियाए ॥८॥

वाडी वन आराम रात्रि वनस्पति ।

पान फल फल चूटीयां ए ॥६॥

पु ख पापडी शाक, शेक्या सूक्या ।

छेद्या छुद्या आथीया ए ॥१०॥

अलशीने एरड घाणी घालीने ।

घणा तिलादिक पीलिया ए ॥११॥

घाली कोलु माहे, पीली शेलडी ।

कदमूल फल वेचिया ए ॥१२॥

एम एकेन्द्रीय जीव हण्या हणानिया ।

हणता जे अनुमोदिया ए ॥१३॥

आभव परमज जेह, वली रे भगोभवे ।

ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥१४॥

कृमी करमीया क्रीडा, गाडर गडोला ।

इयल पूरा अलसिया ए ॥१५॥

वाला जलो चुडेल विचलित रस तणा ।

वली अथाणा प्रमृसना ए ॥१६॥

एम वेदद्रिय जीव, जे मे दुहव्या ।

ते मुज मिच्छामि दुक्कट ए ॥१७॥

उदेही ज् लीए, मारुट मकोडा ।

चाचड क्रीडी कु वृथा ए ॥१८॥



गधरिआं घीमेल कान खजुरडा ।

गीगोंडा धनेरीयां ए ॥१६॥

एम तेइंद्रिय जीव जे में दृहव्या ।

ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२०॥

मांखी मछर डांस, मसा पतगीया ।

कंसारी कोलियावडा ए ॥२१॥

दांकण विछु तीड, भमरा भमरीया ।

कोतां वग खडमांकडी ए ॥२२॥

एम चौरिद्रिय जीव जेमे दुहव्या ।

ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२३॥

जलमां नाखी जाल, जलचर दुहव्या ।

वनमां मृग संतापिया ए ॥२४॥

पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां ।

पोपट घाल्या पांजरे ए ॥२५॥

एम पंचेन्द्रिय जीव जेमे दुहव्या ।

ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२६॥



दाल ॥ ३ ॥

बाणी बाणी हितकारीजी (देशी)

क्रोध लोभ भय हास्ययी, बोल्या वचन असत्य ।  
 कूड करी घन पारकाजी, लीघां जेह अदत्तरे ।  
 जिनजी मिच्छामि दुक्कड आज, तुज साखे महाराज रे ।  
 जिनजी देड सारु काज रे जिनजी ॥१॥  
 देव मनुज तिर्यचनाजी मैशुन सेव्या जेह ।  
 निपपारस लपटपणेजी, घणु विडंब्यो देहरे जिनजी ।२।  
 परिग्रहनी ममता करीजी, भव भव मेली आय ।  
 जे जिहानी ते तिहा रही जी, कोड न आवे माथरे जि० ।३।  
 रयणी भोजन जे कर्याजी, झीघा भज अमज ।  
 रमना रमनी लालचेजी, पाप कर्या प्रत्यक्ष रे ॥४॥  
 प्रव लेट विमारियाजी, उली माग्या पन्चखाण ।  
 रूपट हेतु किरिया करीजी, झीघा आप घग्गाण रे ॥५॥  
 प्रग दाल थाटे दुहेजी, थालोया अतिचार ।  
 जिव गति आगधन तगोजी, एपहेलो अधिकार रे ॥६॥

ढाल ॥ ४ ॥

साहेलडीनी (देशी)

पंच महाव्रत आदरो साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत चारतो ।  
 यथाशक्ति व्रत आदरो साहेलडी ए, पालो निरतिचार तो ।१।  
 व्रत लीधा संभारीए सा. हैडे धरिय विचारतो ।  
 शिवगति आराधन तणो सा० ए वीजो अधिकारतो ।२।  
 जीव सर्व खमावीये, सा. योनि चोराशी लाख तो ।  
 मन शुद्धे करी खांमणां, सा. कोई शुं रोश न राखतो ॥३॥  
 सर्वे मित्र करी चिंतवो, सा. कोइ न जाणो शत्रु तो ।  
 राग-द्वेष एम परिहरो सा. कीजे जन्म पवित्र तो ॥४॥  
 साहमी संघ खमाविए, सा. जे उपनी अप्रीतितो ।  
 सज्जन कुंहुंब करी खामणां सां. ए जिनशासननी रीततो ।५।  
 खमिए ने खमावीए सा. एहज धर्मनो सारतो ।  
 शिव भति आराधन तणो सा. ए वीजो अधिकारतो ॥६॥  
 मृषावाद हिंसा चोरी, सा. धनमूर्छा मैथुन तो ।  
 क्रोध मान माया तृष्णा, सा. प्रेम द्वेष वैशुन्यतो ॥७॥  
 निदा कलह न कीजिए सा. कूडां न दीजे आलतो ।  
 रति अरति मिथ्या तजो सा. माया मोह जंजाल तो ॥८॥

त्रिविध त्रिविध बोसरानिये सा. पापस्थानक अढारतो ।  
शिमगति आराधन तणो, सा. ए चोथो अधिकारतो ॥६॥

ढाल ॥ ५ ॥

ढवे निसुणो डहा आवीया (देशी)

जनम जरा मरणे करीए, ए ससार असारतो ।  
कर्या कर्म महु अनुभवे ए कोड न राखणहारतो ।  
शरण एरु अरिहत नु ए, शरण सिद्ध भगवत तो ।  
शरण धर्म श्री जैननो ए साधु शरण गुणवंततो ॥२॥  
अपर मोह सनि परिहरि ए चार शरण चित्त धारतो ।  
शिमगति आराधन तणोए ए पाचमो अधिकारतो ॥३॥  
आमन परमन जे कर्याए, पाप कर्म केड लाखतो ।  
आतम मारे ते निंदीए ए, पडिक्कामिए गुरु सासतो ।४।  
मिथ्या मति वर्तापिया, जे मारया उत्सृज तो ।  
वृषति रुदाग्रह ने वजे ए, जे उथाप्यां सूत्र तो ॥५॥  
पट्यां घडाज्या जे घणाए, घरटी हल हथीयारतो ।  
मन मन मेली एकियाण, करता जीव सहार तो ॥६॥  
पाप करीने पोपियाण, जनम जनम परिजारतो ।  
जनमान्य पर्हात्यां पट्टीए, कोडए न कीधी सारतो ॥७॥

आभव परभव जे कर्या ए, एम अधिकरण अनेक तो ।  
 त्रिविधे त्रिविधे वोसराविए ए, आणी हृदय विवेकतो ।८।  
 दुष्कृत निंदा एम करीए, पाप करो परिहार तो ।  
 शिवगति आराधन तणोए ए छट्टो अधिकार तो ॥९॥



ढाल ॥ ६ ॥

आदि तुं जोइने आपणी (देशी

धन धन ते दिन माहरो, जीहां कीधो धर्म ।  
 दान शियल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥१॥  
 शेत्रुंजादिक तीर्थनी जे कीधी जात्र ।  
 जुगते जिनवर पूजिया, वली पोष्यां पात्र ॥२॥  
 पुस्तक ज्ञान लखावियां, जिनघर जिन चैत्य ।  
 संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥३॥  
 पडिक्कमणां सुपरे कर्या, अनुकंपा दान ।  
 साधु स्वरि उवज्झायने, दीधां बहु मान ॥४॥  
 धर्मकांज अनुमोदिए, एम वारोवार ।  
 शिवगति आराधन तणो, सातमो अधिकार ॥५॥  
 भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ।  
 समता भावे भावीए, ए, आतमराम ॥६॥

सुख दुख कारण जीवने, कोड अमर न होय ।  
 कर्म आप जे आचर्या, भोगनिये सोय ॥७॥  
 समता विण जे अनुसरे प्राणी पुन्य काम ।  
 छार उपर ते लीखणुं भांखर चित्राम ॥८॥  
 भाव भली परे भाविए, ए धर्मनो सार ।  
 शिखरगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥९॥



टाल ॥ ७ ॥

रैवतगिरि उपरे (देशी)

हवे अमर जाणी, करीए सलेखणा सार ।  
 अणसण आदरीए, पचवखी चारे आहार ॥  
 लुलुतां सनि मूकी, छाडी ममता अग ।  
 ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥१॥  
 गति चारे कीधा आहार, अनंत निशरु ।  
 पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचिओ रंक ॥  
 दुलहो ए वली वली अणसणनो परिणाम ।  
 एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥  
 धन्य धन्ना गालिमद्र, खधो मेघकुमार ।  
 अणसण आराधी पाम्या भवनो पार ॥

शिवमंदिरे जाशे करी एक अवतार ।  
 आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥३॥  
 दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ।  
 मनथी नवि मूको, शिव सुख फल सहकार ॥  
 ए जपतां जाये, दुर्गति दोष विकार ।  
 सुपरे ए समरो चौद पूरवनो सार ॥४॥  
 जनमांतर जातां जे पामे नवकार ।  
 तो पातक ग पामे सुर अवतार ।  
 ए नवपद सरिखो, मंत्र न कोइ सार ।  
 इह भवने परभवे, सुख संपत्ति दातार ॥५॥  
 जुवो भील भीलडी, राजा राणी थाय ।  
 नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥  
 राणी रत्नवती बेहु, पाम्यां छे सुरभोग ।  
 एक भव पछी लेशे, शिववधु संजोग ॥६॥  
 श्रीमती ने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल ।  
 फणीधर फीटीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥  
 शिवकुमरे जोगी, सोवन पुरिषो कीध ।  
 एम एणे मंत्रे, काज घणानां सिद्ध ॥७॥

ए दश अधिकारे, वीर जिनेश्वर भाख्यो ।  
 आराधन केरो विधि जेणे चित्तमा राख्यो ॥  
 तेणे पाप पगाली, भव भय दूरे नाख्यो ।  
 जिन विनय करता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥८॥

★

ताल ॥ ८ ॥

नमो भवि भावशु (देशी)

मिद्वारथ राय कुल तिलोए, त्रिशला मात मन्हारतो ।  
 अवनितले तमे अग्रतर्याए, करवा अम उपकार ॥१॥  
 जयो जिन वीरजी ए  
 मे अपराध कर्या घणाए, कहता न लहुं पारतो ।  
 तुम चरणे आव्या भणीए जो तारे तो तार ॥ जयो. ॥२॥  
 आश करीने अविद्योए, तुम चरणे महाराज तो ।  
 आव्याने उवेसशोए, तो केम रहेशे लाज ॥ जयो. ॥३॥  
 मरम अलुजण आकराए, जनम मरण जजाल तो ।  
 हुं हूं एहथी उभग्यो ए, छोडावो देव दयाल । जयो. ॥४॥  
 आज मनोरथ मुज फल्याए, नाठा दुस ढदोल तो ।  
 तुट्यो जिन चोविशमोए, प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥५॥  
 भव भव विनय तुमारटोए, मान भक्ति तुम पायतो ।  
 देव दया करी दीजिए ण, नोधि नीज सुपमाय ॥ जयो ॥६॥



## ॥ कलश ॥

इम तरण तारण सुगति कारण, दुख निवारण जग जयो ।  
 श्री वीर जिणवीर चरण धुणतां, अधिक मन ऊलट थयो ॥१॥  
 श्री विजयदेव सूरीद पटधर तीरथ जंगम एणी जगे ।  
 तपगच्छ पति श्री विजयप्रभ सूरि, सूरि तेजे भगमगे ॥२॥  
 श्री हीर विजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्ति विजय सुरगुरु समो ।  
 तस शिष्य वाचक विनय विजये, धुणयो जिन चोविशमो ।३।  
 सय सत्तर संवत्त ओगणत्रीशे, रही रांदेर चोमासए ।  
 विजय दशमी विजय कारणे, कियो गुण अभ्यासए ॥४॥  
 नर भव आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील विलासए ।  
 निर्जरा हेते, स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाशए ॥५॥



## ॥ पद्मावति ॥

हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ।  
 जाणपणो जग दोहि लो, इण वेला आवे ।  
 ते मुभ मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥  
 अरिहंत नी साख जेमे जीव विराधिया, चोराशीलाख ।२।  
 सात लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय ।  
 सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ।३।

दम प्रत्येक वनस्पति, चन्दे लाख माधारण ।  
 विति चउरिंठी जीवना, वे वे लाख विचारण ॥४॥  
 देवता तिर्यंच नारकी, चार चार लाख प्रकाशी ।  
 चन्दे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥५॥  
 इण भन परभव सेविया, जे पाप अटार ।  
 त्रिविध त्रिविध कर वोसरू, दुरगति दातार ॥६॥  
 हिंसा कीधी जीवनी, वोल्या मृपागद ।  
 दोष अटत्त टांनना, मैथुन उनमाद ॥७॥  
 परिग्रह मेल्यो कारमो, कीयो कोव विशेष ।  
 मान माया लोभ में कीया, बलि राग ने द्वेष ॥८॥  
 कलह करि जीव दूहव्या, दीधा कृडा कलक ।  
 निंदा कीधी पारकी, रति अरति निस्संकरू ॥९॥  
 चाडी कीधी चोतरे, कीधी थापण मोसो ।  
 कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, मलो आणयो भरोमो ॥१०॥  
 खाटकीने भन जे कीया, जीवना चत्र घात ।  
 चिडीमार भन चिडकला, मार्या दिनने रात ॥११॥  
 माछीने भन माछला, भाल्या जलनाम ।  
 धीवर मील कोली भवे, मृग मार्या पास ॥१२॥

काजी सुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ।  
 जीव अनेक जवे क्रीया, कीधा पाप अघोर ॥१३॥  
 कोटवाल भव में क्रीया, आकरा कर दंड ।  
 बंदीवान मरात्रिया, कोरडा छडी दंड ॥१४॥  
 परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख ।  
 छेदन भेदन वेदना ताडना अति तिःख ॥१५॥  
 कुंभार ने भव में क्रीया निवाह पचाया ।  
 तेली भव तिल पिलिया, पापे पेट भराया ॥१६॥  
 हालीने भव हल खेडिया, फाड्या पृथ्वी पेट ।  
 खड निदान क्रीया घणा, दीधा वलद चपेट ॥१७॥  
 मालीने भव रोपिया, नाना विध वृक्ष ।  
 मूल पत्र फल फूलनां, लागं पाप ते लक्ष ॥१८॥  
 अधोवाईयाने भवे, मर्या अधिका भार ।  
 पोठी पूठे क्रीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥१९॥  
 छीपाने भवे छेतरया, कीधां रंगण प.स ।  
 अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥२०॥  
 शूरपणे रण जूझता, मार्यां माणस वृंद ।  
 मदिरा मांस माखण मख्यां खाधां मूल ने कंद ॥२१॥

खाण खणात्री वातुनी, पाणी उलेच्या ।  
 आरम कीधा अति घणा, पोते पापज संच्यां ॥२२॥  
 कर्म अगारा कीया वली, दरमें द्व दीधा ।  
 सम खाधा वीतरागना कृडा कोसज कीधा ॥२३॥  
 विल्ली भवे उदर लीया, गिरोली हत्यारी ।  
 मूढ गमार तणे भवे, में जू लीस मारी ॥२४॥  
 भाड भुजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव ।  
 जवारी चणा गहं शेक्रिया, पाडता रीव ॥२५॥  
 खाडण पीमण गारना आरम अनेक ।  
 राधण ड घण अग्निना कीधा पाप उद्रेक ॥२६॥  
 विकथा चार कीधी वली, सेव्या पाच प्रमाद ।  
 इष्ट नियोग पमाडिया रुदन विषवाद ॥२७॥  
 माधु अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भाग्या ।  
 मूल अने उत्तर तणा, मुक्त दूपण लाग्या ॥२८॥  
 माप विच्छु मिह चीतरा, सिकराने समली ।  
 हिमक जीव तणे भवे, हिसा कीधी मनली ॥२९॥  
 घनाउडे दूपण पणा, नलि गरम गलाया ।  
 नीपाणी टोच्या घणा, शील व्रत भजाया ॥३०॥

भव अनंत भमतां थकां, कीया कुंडुं व संबंध ।  
 त्रिविध त्रिविध करि वोसरुं तिणसुं प्रतिबंध ॥३१॥  
 इण भव परभव इणिपरे, कीधा पाप अखत्र ।  
 त्रिविध करि वोसरुं, करुं जनम पवित्र ॥३२॥  
 राग बेराडी जे सुणे, ए तीजी ढाल ।  
 समय सुंदर कहे पापथी, छुटे तत्काल ॥३३॥



### अथ पाप आलोचना स्तवन

बेकर जोडी विनवुंजी, सुण स्वामि सुविदित ।  
 कूड कपट मूकी करीजी बात कहुं आप वीत ॥१॥  
 कृपानाथ मुझ विनति अवधार ।  
 तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी, मुझनें दुत्तर तार ॥२॥  
 भव सायर भमतां थकांजी, दीठा दुख अनंत ।  
 भाग्य संयोगे भेटियोजी, भय भंजन भगवंत ॥३॥  
 जे दुख भांजे आपणोजी-तेहने कहिये दुख ।  
 परदुख भंजण तूं सुण्योजी, सेवकने धो सुख ॥४॥  
 आलोचना लीधां पखेजी, जीव रुले संसार ।  
 रूपी लक्ष्मणा महासतीजी, एह सुण्यो अधिकार ॥५॥

दूपम काले दोहिलोजी, सद्यो गुरु सयोग ।  
 परमारथ प्रीछे नहिंजी, गडर प्रवाही लोक ॥६॥  
 तिण तुम आगल आपणाजी, पाप आलोऊ आज ।  
 माय वाप आगल बोलताजी, वाजक केही लाज ॥७॥  
 जिन धर्म जिन धर्म सह रुहेजी, थापे आपणी वात ।  
 ममाचार जूई जूईजी, ससय पड्यो मिथ्यात ॥८॥  
 जाण अजाण पणें करीजी, बोल्या उत्सुत्र बोल ।  
 रतने काग उडावतांजी, हार्यो जनम निटोल ॥९॥  
 भगवत भाष्यो ते क्रिहाजी, क्रिहा मुक्त करणी एह ।  
 गज पाखर खर क्रिम सहेजी, सबल विमासण तेह ॥१०॥  
 आप प्ररुप्यो आरुजी, जाणे लोक महत ।  
 पिण न करू परमाढीयोजी, मामाहम दृष्टान्त ॥११॥  
 काल अनन्ते मे लह्याजी, तीन रतन श्रीकार ।  
 पिण परमाढे पाडियाजी, क्रिहा जई करू पुकार ॥१२॥  
 जाणु उत्कृष्ठी करुजी, उग्रत करुरे विहार ।  
 धीरज जीव धरे नहिंजी, पोते बहु ससार ॥१३॥  
 महज पड्यो मुक्त आरुजी, न गमे रुडी रात ।  
 पर निंदा करता थकाजी जावे दिनने रात ॥१४॥

किरिया करतां दोहिलोजी, आलस आणे जीव ।  
 धर्म पखे धंधे पड्योजी, नरके करसे रीव ॥१५॥  
 अणहुंता गुण को कहेजी, तो हरखुं निशदिस ।  
 कोई हित शीचा भलि कहेजी, तो मन आणुं रीश ॥१६॥  
 वाद भणी विद्या भणीजी, पर रंजन उपदेश ।  
 मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ॥१७॥  
 सूत्र सिद्धान्त वखाणतांजी, रुणतां करम विपाक ।  
 खिण एक मनमांहि ऊपजेजी, मुक्त मरकट वैराग ॥१८॥  
 त्रिविध त्रिविध करी ऊचरुंजी, भगवंत तुम्ह हजूर ।  
 वार वार भांजू वलीजी, छुटक वारो दूर ॥१९॥  
 आप काज सुख राचतांजी, कीधा आरंभ कोड ।  
 जयणा न करी जीवनीजी, देव दया पर छोड ॥२०॥  
 वचन दोष व्यापक कहाजी, दाख्या अनरथ दंड ।  
 कूड कपट बहु केलवीजी, व्रत लीधा शत खंड ॥२१॥  
 अण दीधो लीजे तिणोजी, तोही अदत्तादान ।  
 ते दुष्टण लागा घणांजी, गिणतां नावे ज्ञान ॥२२॥  
 चंचल जीव रहे नहींजी, राचे रमणी रूप ।  
 काम विटंबण सी कहंजी, तेतुं जाणे सरूप ॥२३॥

माया ममता में पञ्चोजी, कीधो अधिको लोम ।  
 परिग्रह मेव्यो कारमोजी, न चढी सयम शोम ॥२४॥  
 लागा मुक्कने लालचेजी रात्री मोजन दोष ।  
 में मन मूक्यो माहरोजी, न धर्यो धरम सतोष ॥२५॥  
 इण भव परमव दृहव्याजी जीव चौराशी लाख ।  
 ते मुक्क मिच्छामि दुक्कडजी, भगवत तोरी साख ॥२६॥  
 करमादान पनरे कहाजी प्रकट अटारे पाप ।  
 जे में कीधा ते सहृजी, वगरा २ भाई वाप ॥२७॥  
 मुक्क आधार छे एंटलोजी, सरदहिणा छे शुद्र ।  
 जिन धर्म मीठो जगतमेंजी, जिम साकरने दूध ॥२८॥  
 ऋपमदेव तुं राजियोजी शत्रुंजय सिण्णगार ।  
 पाप आलोया आपणाजी, कर प्रभु मोरी सार ॥२९॥  
 मर्म एह जिन धर्मनोजी, पाप आलोया जाय ।  
 मनमु मिच्छामि दुक्कडजी, देता दुरित पुलाय ॥३०॥  
 तुं गति तु मति तु धणीजी, तु माहिन तुं देव ।  
 आण धरुं गिर ताहरीजी, मत्र भव ताहरी सेत्र ॥३१॥



## ॥ कलश ॥

इम चडीय शेत्रुँज चरण भेट्या, नाभिनंदन जिण तणा ।  
 कर जौडि आदि जिणंद आगे, पाप आलोया आपणा ॥  
 श्री पूज्य जिनचंद खरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस वणें ।  
 गणि सकलचंद सुसीस वाचक, समय सुंदर गणि भणे ॥३१॥



## आलोचना का स्तवन

ए धन शासन वीर जिनवर तणो ।  
 जास प्रसाद उपगार थाये वणो ।  
 सूत्र सिद्धान्त गुरु मुख थकी सांभली ।  
 लहिये समकित अने विरति लहिये वली ॥१॥  
 धर्मनो ध्यान धर, तप जप खप करे ।  
 जिण थकी जीव संसार सागर तिरे ।  
 दोष लागे तिके, गुरुमुख आलोइये ।  
 जीव निर्मल हुवे, वस्त्र जिम धोइए ॥२॥  
 दोष लागे तिके चार प्रकारना ।  
 धूर थकी नामने अर्थ ते धाग्ना ।  
 किण ही कारण वशे पाप जे कीजिये ।  
 प्रथम ते नाम संकल्प कहीजिये ॥३॥

कीर्जिये जेह कंदर्प प्रमुखकरी ।

दोष ते वीय प्रमाद सजा धरी ॥

कूढता गर्भता होय हिंसा जिहा ।

दर्प इण नाम करी दोष तीजो तिहा ॥४॥

प्रिणमता जीव जीवने नही गिनर करे जिको ।

चोथो आकुट्टिया दोष उपजे तिको ।

अनुक्रमे चार ए अधिक इक एकथी ।

दोष धर प्रायश्चित लहे प्रिवेरुथी ॥५॥



टाल ॥ २ ॥

पाटी पोथी फरली नमकार वाली जोय ।

ज्ञानना उपगरण तणी आशातना किधी होय ॥

जपन्ययी पुगीमट एकामणो आरिल उपनाम ।

अनुक्रमे एह आलोयण सुगुरु बताई ताम ॥१॥

ए जो म्बडित थाय अथवा किहांडे गमाय ।

नो बली नमा रुगया टोष सहू मिट जाय ॥

थापगा अग पटिलेहिया पुरिमट नो तपघार ।

गिरता एकामणोने गमता चोथ विचार ॥२॥

दर्शनना अति चार तिहां पुरिमुठ जघन्य ।  
एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदे मन्न ॥  
आसातना गुरुदेवनी साहमीसुं अप्रीती ।  
जघन्य एकासणी आलोयण चढती रीत ॥३॥  
अनंतकाय आरंभ विनास्या चौथ प्रसिद्ध ।  
विति चौरिन्द्नी नसाया, एकासणी वृद्ध ॥  
बहु वीती चौरिन्द्नी हएया, वीती चौ उपवास ।  
संकल्पादि चिहुंविध, दुगुणा दुगुण प्रकाश ॥४॥  
ऊदेही कुलिया बडा कीडी नगरा भंग ।  
बहुत जलोया मुक्या दश उपवास प्रसंग ॥  
वमन विरेचन क्रीमी पातन आंबिल इक एक ।  
जीवाणी ढोलतां दोय उपवास विवेक ॥५॥  
संकल्पादिक एक पंचेंद्रिय उपद्रव होई ।  
दोय तीन आठ दशै उपवासै आलोयण जोई ॥  
बहु पंचेंद्रिय उपद्रव छठ अठमे दश वीश ।  
चिहुं प्रकारे चढती आलोयण सुणले सीस ॥६॥  
पंचेंद्रियने लकड़ी प्रमुखै कीध प्रहार ।  
एकासण आंबिल उपवासने छठ विचार ॥  
साधु समचे लोक समचे राज समक्ष ।  
कूडा आल दिया होई चौथ अरु प्रत्यक्ष ॥७॥

उपवास दश दडाय़ा तेम मराया वीश ।  
 एरू लख असी सहस नवकार गुणो तजी रीस ॥  
 पक्ष चौमास वर्ष लग एक त्रय दश उपवास ।  
 अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहीं तास ॥८॥  
 सुवानडना दोष क्रिया गुरु उपर रोष ।  
 जीव निराधन कीधा बहु असतीना पोष ।  
 करीये दुवालस नार हजार गुणो नवकार ॥  
 मिच्छामि दुक्कडं देई आलोनो चारोवार ॥९॥

दाल ॥ ३ ॥

विण कीधा पच्चराण विण दीधा,  
 चांदणा पडिकमणा विधी पातरे ए ।  
 अणो भाणे असज्भाय तिहा अविधे भएया,  
 एरू एक आविल आचरे ए ॥१॥  
 गंठसी एकामन निवि आविल,  
 भागै आलोयण डमे ए ।  
 एरू पाच पट आठ नवकार वालिय,  
 गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥२॥

उपवास भंग उपवास, आंघ्रिल उपरां,  
 अधिको दंड वखाणिये ए ।  
 पांचम आठम आदि भंग कियां वली,  
 फिर ग्रही पातक हणीयै ॥३॥  
 उखल मुशल आग चुलो घरटीयै,  
 दीधै अठम तप करीयै ए ।  
 मांगी सूई दीध कतरणी छुरी,  
 आंघ्रिल चढतां आदरे ए ॥४॥  
 जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन,  
 जल तीरणो खेलन जूओ ए ।  
 पापतणा उपदेश, परद्रोह चिंतव्यां,  
 उपवास एक एक जुजुओ ए ॥५॥  
 पनरै कर्मादान, नियमकरी भंग,  
 मद्य मांस माखण भख्या ए ।  
 आलोयण उपवास संकल्पादिक,  
 चिहुं भेदे चढतां लिख्याए ॥६॥  
 बोल्या मृषावाद अदत्तादान,  
 जघन्य एकासण जाणीयै ए ।  
 अति उत्कृष्टि एण, जाण आलोयण,  
 उपवास दश दश आणीयै ए ॥७॥



ताल ॥ ४ ॥

चौथे व्रत भागै अतिचार जघन्य छठ आलोयण धार ।  
 मध्यम दश-उपवास सुविचार उत्कृष्टा गुण लख नवकार ।१।  
 परिग्रह विरमण दोष प्रमग तिन गुण व्रत माही भंग चार ।  
 गिजा व्रतने अतिचारै आविल व्रण प्रत्येके धारै ॥२॥  
 शील तणी नरवाद कहाय—तिहां जो लागो दोष जणाय ।  
 स्त्री ने स्पर्श हुना अविवेके, एरु आविल कीजे प्रत्येके ॥३॥  
 साधु अने श्रावक पौषध, एकेंद्रि चित्त मंघट कीध ।  
 प्रिसर भोलै सचित्त जल पीध, दंड एकासण आविल दीध ।४।  
 प्रिन धोया प्रिन लुया पात्रै एकासण तिम पुरमुठ मात्रै ।  
 गई मुहपत्ति आविल सारो तिम अठम ओधो अवधारो ॥५॥  
 चार आगार छ छिंडी राखै व्रत पचसाण करे पट साखे ।  
 दोषे मिच्छामि दुक्कडं दाखै आलोयण ले तो अभिलापे ॥६॥  
 आलोयणनो अति विस्तारं पुरो कहेता नावे पार ।  
 तो पण सचेपै तंतमार निर्मल मन करता विस्तार ॥७॥  
 धन श्री वीर जिनेश्वर म्नामी जसु आगम वचने विधि पामी ।  
 जीत कल्पटाण अ गै याटि वली परंपर गुरु सुप्रमाढ ॥८॥

## ॥ कलश ॥

इम जेह धर्मी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइने ।  
 एकान्त पुछै गुरु बतावै, शक्ति वय तसु जोइने ॥  
 विधि एह करसी तेह तरसी धर्मवन्त तणे धुरै ।  
 एह स्तवनं धर्मसिंह कीधो चौपने फलवर्द्धि पुरै ॥६॥



## ॥ गर्भोत्पत्ती सजाय ॥

उतपति जोय जीव आपणी, मन मांहि विमास ।  
 गर्भावासे जीवडो, वसीयो नवमास ॥१॥  
 नारतणी नाभीतले, जिनवचने जोय ।  
 फूल तणी जिम नालिका, तिम नाडी छे द्योय ॥२॥  
 तसुतल जोनि कही जिये, वर फूल समान ।  
 आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥३॥  
 रुधिर श्रवे तिहां मांसथी, रितुकाल सदीव ।  
 रुधिर शुक्र जोगे करी, तिहां उपजे जीव ॥४॥  
 जे अपावन पवने करी, वासित दुर्गंध ।  
 तिण थानक तुँ ऊपनो हिव हुवो अंध मंध ॥५॥

नाडी वासतणी घणु , मरीये रु घाल ।  
तातीलोह सिलाऊ ते, जाले तत्काल ॥६॥  
तिम महिलानी योनी में, छे नव लाख जीव ।  
पुरुष प्रमगे ते सहु, मरि जाय सदीव ॥७॥  
ऊपजे नरनारी मिल्या, पंचेंद्रि जेह ।  
तेह तणी मख्या नहीं, तजो कारज एह ॥८॥  
नव लाख जीव तिहां, उत्कृष्टि वार ।  
जीव जघन्य पणे टिके, एक दीय त्रण चार ॥९॥  
जीव जघन्य तिहा रहे, महुरत परिमाण ।  
बार वरसनी स्थिति तिहा, उत्कृष्टि जाण ॥१०॥  
तिहा गर्भे कोई जीवडो, जपे जगदीस ।  
फिर नर आवतो रहे, सवत्सर चौशीश ॥११॥  
महिला वर्ष पिचावने, रुहीये निर मीज ।  
पिचहत्तर वरसां पछे, थाय पुरुष अमीज ॥१२॥  
जीमणी कुन्वे नर वसे, तिहा वामे नारी ।  
धीचे नपुंसक जाणीए जिन वचन विचारी ॥१३॥  
द्वि सामान्य पणे द्वाहा, आयो गर्भावास ।  
मात दिन उपरी रहे, नर गत नत्र मास ॥१४॥



आठ वरस तिर्यच रहै, उत्कृष्टे काल ।  
 गर्भावासे भोगव्यां, इम बहु जंजाल ॥१५॥  
 कारमण काये करी लियो, पहिलो आहार ।  
 शुक्र अने शोणित तणो, नहीं भूठ लगार ॥१६॥  
 परजापति पूरी नहीं तिहां विसत्रा वीश ।  
 तिण आहारे तुं थयो, उदारक मीस ॥१७॥  
 पवन अछेरे उदरे, तिको उपजावे अंग ।  
 अग्नी करे थिर तेहने, जल सरस सुरंग ॥१८॥  
 कठिन पणे पृथ्वी रचे, अवगाह आकाश ।  
 पांच भूत शरीर में, इम करे प्रकाश ॥१९॥  
 बारे महुरत पीछे, विलसे नर नारी ।  
 गर्भ तणी उतपती तिहां, नहीं अवर प्रकाश ॥२०॥  
 कलल हुवे दिन सात में, अरबुद दिन सात ।  
 अरबुदथी पेसी बधे, वन मांस कहात ॥२१॥  
 मांस तणी बोटी हुवे, अडतालीस टंक ।  
 प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥२२॥  
 सुथीर मांस बीजे हुवे, हिवे तीजे मास ।  
 कर्म तणे वसे उपजे माता मन आस ॥२३॥

चोथे मासे मातना, प्ररिणमे महु अ ग ।  
 हाथ अने पग पाचमें, तिम सुतको मग ॥२४॥  
 पित्त रुधिर छठे पडे, सात में डण सच ।  
 नत्र धमणी नश सात सैं, पेंसी सय पंच ॥२५॥  
 रोमगाय पिण सात मे, माढी तीन क्रोड ।  
 उपजे उणे केटले, इम आगम जोय ॥२६॥  
 आठ में मासे नीपनो, इम सकल शरीर ।  
 ऊचे शिर वेदन सहे जपे जिन नीर ॥२७॥  
 शोणित शुक्र श्लेपमा, लघु ने वडी मीत ।  
 चात पित्त रुफ गर्भथी थाये नर नीत ॥२८॥  
 मात तणी सूंटी लगे, बालकनो नाल ।  
 रम आहार करे तिहा आचे ततकाल ॥२९॥  
 जननी ले आहारते, जाये नाटो नाड ।  
 रोम इन्ट्री नस चस्र वधे, तिम मींजीने हाड ॥३०॥  
 मयहु अगे उलसे, मयगि आहार ।  
 कवल आहार करे नही, गर्मे सुविचार ॥३१॥  
 माम बीजे कोई जीवने थाये ज्ञान प्रिमग ।  
 अयसा अयाधि इही जीये, तिण ज्ञान प्रमंग ॥३२॥

कटक करे वैक्रीय पणे, भूंभी नरके जाय ।  
 को जिन वचन सुणी करी मरीं सुर पिण थाय ॥३३॥  
 ऊं धे मुख गोडा हिये, सहितो बहु पीड ।  
 दृष्टि आगल वेहुं हाथ सुं, रहे मुठी भीड ॥३४॥  
 नर विना वस्त्र जलादिके, उपजे आधान ।  
 अथवा वेहु नारी मिल्यां कञ्चुं गर्भ विधान ॥३५॥  
 कोई उत्तम चितवे, देखी दुखवास ।  
 पुण्य करी तिम निकलूं, नाऊं गर्भावास ॥३६॥  
 ऊंठं कोडी चांपे सुई, कोई समकाल ।  
 तिणथी गर्भे अठ गुणी सहे बेदना बाल ॥३७॥  
 माता भुखी भुखीयो, सुखणी सुख थाय ।  
 माता सुती ते सुवे, परवस दिन जाय ॥३८॥  
 गर्भ थकी दुख लख गुणो, जनमें जिण वार ।  
 जन्म थयां दुख विसरे, धिग मोह विकार ॥३९॥  
 डपज्यां अशुची पणे, जिहां मल मूत्र कलेश ।  
 पींड अशुची करि पूरियो किहां शुची लवलेश ॥४०॥  
 तुरत रुदन करतो थको, जनमें जिणवार ।  
 माता पयोधर मुख ठवे, पीये दूध - तिवार ॥४१॥

दिन दिन दीसे दीपतो, करे रग अपार ।  
 लाड कोड मात पिता, पूरे सुविचार ॥४२॥  
 स्रोत डग्यारे नारीने, नव नरनं जाण ।  
 रात दिवस वहेता रहै, चेतो चतुर सुजाण ॥४३॥  
 सात धातु साते त्रचा, छे सात से नाड ।  
 नवसे नाडी पिड मे, तिम तीनसे हाड ॥४४॥  
 सधी एरुसो साठ छे, सत्तोतर सो मरम ।  
 तीन दोष पेसी पाच से, ढाकी छे चरम ॥४५॥  
 रुधिर सेर दश देह मे, पेसाव सरिख ।  
 सेर पाच चरनी तिहा, दोय सेर पुरीष ॥४६॥  
 पित्त टाक चोसठ अछे, वीरज बत्तीस ।  
 टाक बत्तीस श्लेष्मा, जाणे जगदीश ॥४७॥  
 इण परमाण थकी यदा, ओछो अधिको थाय ।  
 व्यापे रोग शरीर मे, नवी चाले काय ॥४८॥  
 पहृतो पहले दाशके, इम धधियो अग ।  
 खान पान भूषण भला, करे नव नव अग ॥४९॥  
 हिव बीजे दशके मण्यो, त्रिधा त्रिविध प्रकार ।  
 तीजे दशके तेहने, जाग्यो काम त्रिकार ॥५०॥

भोग संजोग तजी सहु थया जे अणगार ।  
 धन धन सु मात पिता धन धन अवतार ॥६६॥  
 सुरतरु सुरमणि सारिखो सेवो जिन धर्म ।  
 जिणथी सुख संपत्ति वधे कीजे तेहज कर्म ॥७०॥  
 तंदुलवेयाली ए अछे, एहनो अधिकार ।  
 तिणथी उद्वरीने कखो, नहीं भूठ लगार ॥७१॥



॥ कलश ॥

इह जैन धर्म विचार सांभली, लिये संयमभार ए ।  
 सिंहनी परे सदा पाले, नेम निरतिचार ए ॥  
 संसारना सुख सकल भोगवी ते लहे भवपार ए ।  
 श्री जिन हर्ष सुशिष्य रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥७२॥



रिषभदेव जी का बारहमासा

॥ आषाढ ॥

हे जी मरुदेवाजी, सोच करत हैं मन में ।  
 मेरा रिषभ गया क्यों बन में ॥

प्रथम महीनाजी लगा आसाढ चीमामा ।  
 इन्दर वरसन की आमा ॥  
 मरुदेवीजी मन मे भई उदासा ।  
 प्रभु अपम गये वन वासा ॥

॥ दोहा ॥

अपम प्रभु वन को गये, जगत सुधारन काज ।  
 भरतादिक सो पुत्र को गट दिया सत्र राज ॥  
 पुत्र तुम सगहीजी, मगन होय रहे धन में ॥१॥

॥ सावन ॥

सावन महीनाजी रिमक्तिम मेहला वरसे,  
 मेरा पुत्र विना जी तरसे ।  
 मरतादिक सो पुत्रनके डरसे,  
 मेरा नन्द निकला गया घरसे ॥

॥ टीहा ॥

नगर अयोध्या यूँ भुरे, रुहौं गये महाराज ।  
 देत ओलमा भरतकी, मेरा पुत्र मिलावो आज ॥  
 अजी तो मेरे सुत विना जी, प्राण निकलसी छिनमें ।  
 मेरा अपम गया क्यों वन मे ॥२॥

जिण थानक तुं उपन्यो, तिणमें मन जाय ।  
 चौथे दशके धन तणो, करे कोडी उपाय ॥५१॥  
 पहुतो दशके पांचमें, मनमें सस्नेह ।  
 वेटा वेटी पोतरा - परणावे तेह ॥५२॥  
 छठे दशके प्राणीयो, वली परवश थाय ।  
 जरा आवी जौवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥५३॥  
 आवे दशकें सातमें, हिव प्राणी तेह ।  
 बल भागो बुढो थयो, नारी न धरे स्नेह ॥५४॥  
 आठमे दसके डोसलो, खुलीया सहु दांत ।  
 कर कंपावे शिर धुणे, करे फोगट वात ॥५५॥  
 नवमे दशके प्राणीयो, तन सूकत जाय ।  
 साले वचन बहुवां तणां, दिन भूरतां जाय ॥५६॥  
 खाट पड्यो खुं खुं करे, सहु गाली देह ।  
 हाल हुकम हाले नहीं, दिया परजन छेह ॥५७॥  
 आंख गले बे पुड मिले, पडे मुं डे लाल ।  
 वेटा वेटीने बहु न करे संभाल ॥५८॥  
 दशमे दशके आवियो, तब पुरी आय ।  
 पुण्य पाप फल भोगवी, प्राणी परभव जाय ॥५९॥

दश दृष्टाते दोहिलो, लखो नरमवे सार ।  
 श्री जिन धर्म समाचरो, पामो जिम भव पार ॥६०॥  
 चरण घरे ले तप तपे, पाले निर्मल शील ।  
 ते ससार तरी करी, लहे अविचल लील ॥६१॥  
 कोडी रतन कोडी साटे, काई गमावेरे गमार ।  
 धर्म परे जिण जीवने, नहीं कोई आधार ॥६२॥  
 काया माया कारमी, कारमो परिवार ।  
 तन धन जोवन कारमो, साचो धर्म समार ॥६३॥  
 चण्डे राज प्रमाण ए, छे लोक महंत ।  
 जन्म मरण करी फरमीयो, तेवार अनत ॥६४॥  
 आप स्मारयिया सहु, नहीं केहनो कोय ।  
 जिण प्यागथ अण पुच्छता, सुत पिण वैरी होय ॥६५॥  
 जरा न आवे जहा, लग मवल शरीर ।  
 धर्म करो जीवता लगे, होई साहम धीर ॥६६॥  
 आरज देश लघो हवे, लाघो गुरु मयोग ।  
 अंग वरी आलम तजो, करो मुकृत मयोग ॥६७॥  
 भी नमिगय तगी परे, चेतो चित्त माहि ।  
 प्यागथना महुको नगा, कोई सिंगरो नाही ॥६८॥



॥ भादों ॥

भादों महीना जी तज धन दौलत माया ।  
अजी तो वो गये अफेली काया ।  
भरतादिक तो मन में हरपाया राज ये विना कमाया पाया ।

॥ दोहा ॥

नित नव नाटक होत हैं, कर रहे भोग विलास ।  
सब माय ये ऋषभ की वो छोड गया वनवास ॥  
हे जी जगतारन जी दुखी हो गया तन में ।  
मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥३॥

॥ आसोज ॥

आसोज महीना जी सूरत की छवि लागी ।  
पुत्र तो होय गये वैरागी, धनके लोभीजी उससे भये निरागी ।  
कभी खबर न ले बड़ भागी ॥

॥ दोहा ॥

भरत कहे सुन मातजी, मत कर वृथा विलाप ।  
तीन लोक तारन तरन आवेंगे प्रभु आप ॥  
इन्द्र पद सेवेंजी, नहीं रहें विघन में ।  
मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥४॥



॥ कार्तिक ॥

कार्तिक महीना जी कब वो ऋषभ घर आवे ।  
 मोहे सुरत आन बतावे, नहीं कागज भी मुझको पुत्र पठावे ।  
 मेरा जीव बहुत दुख पावे ॥

॥ दोहा ॥

श्रुती निश दिन पुत्रको, रो रो खोई आख ।  
 उहकर मिलती ऋषमसे, जो देत विधाता पाख ॥  
 मोर पपैया जी मगन जो रहते वन में ।  
 मेरा ऋषभ गया क्यों वन मे ॥१॥

॥ मार्गसिर ॥

मार्गसिर महीना जी भरत बाहुवल भाई ।  
 आपस में करे लडाई ।  
 भरत यूँ कहता जी मानो मेरी दुहाई ।  
 सब सेना चढ कर आई ॥

॥ दोहा ॥

बारा बरम लडते हुवे, इन्द्र रहे समझाय ।  
 चक्रवर्ति चिन्ता गहै, मये चन्द्र जमराय ॥  
 जीत कारग जी खडे बाहुवल रन में ।  
 मेरा ऋषभ गया क्यों वन मे ॥२॥

॥ पौस ॥

पूस का महीना जी पड़े ठंड का पाला ।

ऋतु आया कठिन सियाला ॥

कहां वह होगा ऋषभ जगत प्रतिपाला ।

मैं रटूँ रिषभ की माला ।

॥ दोहा ॥

क्या कोई परवत की ओट में होगा मेरा नन्द ।

ठंड तापकी विपत्ति से, सहे बहुत दुख वृन्द ।

भरत मेरे सुतका जी, नहीं फिकर तेरे मन में ।

मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥७॥

॥ माघ ॥

माघ का महीना जी किससे कहूँ दुख मेरा,

सब पुत्र विना अधेरा ।

पुत्र घर आवो जी मैं देखूँ मुख तेरा ।

कोई देवे ऋषभ का बेरा ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रादिक जाको नमें, रहे सदा कर जोड़ ।

राज रमन की संपदा, वो गया छिनक में छोड़ ॥

ऐसा निरमोही जी पटका विरह दहन में ।

मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥८॥

॥ फागुन ॥

फागुण महीना जी नीर नयन में भरती,  
 मैं छूने मन से फिरती ।  
 भरत यूँ कहता जी सौच फिर क्योँ करती,  
 रहे निश दिन मुझसे लडती ॥

॥ दोहा ॥

भगत विविध तर भाति से कहता रात बनायें ।  
 वन पालक उद्योग के, देई बधाई आय ।  
 प्रभु पधारे जी, सेवत है मुनी जन मे,  
 मेरा ऋपम गया क्योँ वन में ॥७॥

॥ चैत ॥

चैत का महीना जी हय गज रथ सत्र त्यारी ।  
 शिणगारी सेना भारी ॥  
 भरत कर जोडी जी मरुदेरी मनोहारी ।  
 चलो देखो पुत्र सुखकारी ।

॥ दोहा ॥

इन्द्रधजा आगे चले, मामडल रहे लार ।  
 चौमठ सुरपति चवग करे दु दुमी गगन मझार ॥  
 सुत तेरा जी विजसे सुख घरीगन में ।  
 मेरा ऋपम गया क्योँ वन में ॥१०॥

॥ वैशाख ॥

वैशाख महीना जी मरुदेवी मन हरपे ।

जव ऋषभ प्रभु मुख निरखे ॥

नैन पट उघाडे जी वीतराग पद सरखे,

चढे शुक्ल ध्यान कूं परखे ॥

॥ दोहा ॥

गज ऊपर मुक्ति गई श्री मरुदेवी मात ।

पहिले शिवजननी दिया, ऐसे ऋषभ सुजात ।

जगसुखकारनजी विचरे प्रभु मगन में ।

मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥११॥

॥ जेठ ॥

जेठ का महीना जी ऋतु गरमी की आई,

मैं ऋषभ चरण लय लाई ।

दरश नित तेरा जी मुझ कुं है सुखदाई,

सेवा प्रेम सदा मन भाई ॥

॥ दोहा ॥

धरम शील आधार से, कुशल सदा आनन्द ।

रिद्धि-सार जिन नामसे, रहे दुरती दुख दन्द ॥

हे जी मन सुधर जी, राखो जिन चरननमे ।  
मेरा ऋषम गया क्यों बन मे ॥१२॥



## गोडी पार्श्व जिन वृद्ध स्तवन

॥ दौहा ॥

बाणी ब्रह्मादिनी, जागे जग विख्यात ।  
पाम तणा गुण गावता, मुज मुख वसज्यो मात ॥१॥  
नारगे अणहिल पुरे, अहमदागडे पास ।  
गोडीनो घणी जागतो, सहनी पूरे आस ॥२॥  
शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ।  
प्रतिमा ते इह पावनी धई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥



॥ दाल ॥

गुणहि विशाला मंगलिक माला, यामानो मुत माचोजी ।  
धग कग रुंचग मणि माणक दे, गोटीनो घणी जाचोजी ।४।  
अगटिनपुर पाटग माहे प्रतिमा, तुरक तरो घर हुंतीजी ।  
अश्वनी भूमि अश्वनी पीटा, अश्वनी चान विगुतीजी ॥५॥

जागंतो यत्तु जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपेजी ।  
 पास जिणोसर केरी प्रतिमा, सेवक तुम्ह संतापेजी ॥६॥  
 प्रह उठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजेजी ।  
 अधिको म लेजे ओछो मलेजे टक्का पांचशे लेजेजी ॥७॥  
 नहिं आपीस तो मारीश मुरडीश मोर बंध बंधास्येजी ।  
 पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुम्ह लच्छी घणी घर जास्येजी ॥८॥  
 मारगे पहिलो तुम्हने मिलस्ये, सारथवाह जे गोठीजी ।  
 निलवट टीलो चोखा चैब्यां वस्तु वहे तसु पोठीजी ॥९॥

॥ दोहा ॥

मनसुं बीहनो तुरकडो, माने वचन प्रमाण ।  
 बीबीने सुहणा तणो संभलावे सहिनाण ॥१०॥  
 बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय ।  
 अब सताव परगट करो नहीं तर मारे सोय ॥११॥  
 पाछली रात परोडिये पहिली बांधे पाज ।  
 सुहणा मांहे सेठने संभलावे जदराज ॥१२॥



॥ ढाल ॥

एम कही जत्तु आयो राते, सारथवाहने सुहणेजी ।  
 पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणेजी ॥१३॥

पाच से टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिम वारु जी ।  
 जतन करी पहुंचाडे थानक प्रतिमा गुण मभारु जी ॥१४॥  
 तुम्हने होमी बहु फल दायक, भाई गोठी ? सुणजे जी ।  
 पूजीश प्रणमीश तेहना पाय, प्रह उठीने सुणजे जी ॥१५॥  
 मुहणी देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंचतो जी ।  
 पाटण माहे सारथराह हींडे तुरकने जोतो जी ॥१६॥  
 तुरके जाता दीठो गोठी, चोसा तिलक लिलाडे जी ।  
 सकेत पहुंचतो माचो जाणी गोलावे बहु लाडे जी ॥१७॥  
 मुक्त धर प्रतिमा तुम्हने आपु, पास जिणेपर केगीजी ।  
 पाच से टक्का जो मुक्त आपे, मोल न मागु फेरीजी ॥१८॥  
 नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंचतो रगे जी ।  
 केसर चंदन मृगमद घोली, विधि सु पुजा रगे जी ॥१९॥  
 गादी रुडी रुनी फीधी, ते माहि प्रतिमा राखे जी ।  
 अनुक्रमे थाच्या परिकर माहं, श्री मध ने सुर साखे जी ॥२०॥  
 उच्छ्रय दिन दिन अधिको थाये, सत्तर मंद सनात्रो जी ।  
 टाम टामना दरसण करजा थाये लोक प्रमातो जी ॥२१॥



## ॥ दोहा ॥

इक दिन देखे अवधि सुं, परिकर पुरनो भंग ।  
 जतन करुं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥२२॥  
 सुहणो आपे शेठने, थल अटवी उज्जाड ।  
 सहिमा थासे अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥२३॥  
 कुशल खेम तिहां अछे, तुझने मुझने जाणी ।  
 शंका छोडी काम कर, करतो म करि संकाणि ॥२४॥



## ॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषभ जोतरे ।  
 परिकरथी परियाणो करे एक थल चढि बीजो उतरे ॥२५॥  
 धारे कोस आठ्या जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ।  
 गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावुं सही ॥२६॥  
 आ अटवी किम करुं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण ।  
 देवल पास जिणेसर तणो, मंडावुं किम गरथे विणो ॥२७॥  
 जल विण श्री संघ रहिस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ।  
 चितातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥

गहुली उपर नाणो जिहॉ, गरथ वणो जाणीजे तिहा ।  
 स्पस्तिक मोपारिने ठाणि, पाहाण तणी उलटस्ये खाणि ॥२६॥  
 श्री फल सजल तिहा किल जुयो, अमृत जल नीमरमी कुयो ।  
 खाग कुना तणो इह महिनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥३०॥  
 सिलावटो सिरोही वसे, कोढ पराभवियो किममिसे ।  
 तिहा थकी तु इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥  
 गोठीनो मन थिर थापियो, मिलावट ने सुहणो दियो ।  
 रोग गमीने पूरुं आम, पास तणो मडे आवास ॥३२॥  
 सुपन माहे मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाव्यो नेण ।  
 गोठी मनह मनोरथ हुना, मिलावट ने गया तेडना ॥३३॥  
 सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीर खाड घृत चूरमो ।  
 घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥  
 थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ।  
 रंग मडप रलियामणी रसे, जोता मानवनो मन वसे ॥३५॥  
 नीपायो पूरो ग्रामाद, स्वर्ग समोमडे थावाम ।  
 दिवम विचारी इडो घट्यो, ततस्त्रिण देवल उपर चट्यो ॥३६॥  
 शुभ लगन शुभ वेलापाम, पन्नामण वेठा श्रीपाम ।  
 मणिमा मोटी मेरु यमान, ण फल मिल वागडे गंघे धान ॥३७॥

वात पुराणी में सांभली, स्तवन मांहि सृधि सांकली ।  
गोठी तणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परणे पछे ॥३८॥

★

॥ दोहा ॥

विघन विडारन यत्त जगि, तेहनो अकल सरूप ।  
प्रीत करे श्री संघने, देखाडे निज रूप ॥३९॥  
गिरुओ गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार ।  
सानिध करे श्री संघने, आशा पूरण हार ॥४०॥  
नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार ।  
मारग चूका मानत्री, वाट दिखावण हार ॥४१॥

★

॥ दोहा ॥

वरण अद्वार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ।  
पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले मघलां पाप संताप ॥४२॥  
निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुर्त्रायाने पुत्र ।  
कायरने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥४३॥  
दुर्मागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पाग ।  
ठाम नहीं तेहने धे ठाम, मन वंछित पूरे अभिराम ॥४४॥

निराधार ने घे आधार, भयमायर उतारे पार ।  
 आरतीयानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥४५॥  
 समयी सहाय दिये यक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज ।  
 बुद्धिहीणने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने घे वचन विलास ॥४६॥  
 दुखिया ने सुखनो दातार, भय भक्षण रक्षण अगतार ।  
 बधन तुटे वेडी तणा, श्री पार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥४७॥

●  
 ॥ दोहा ॥

श्री पार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ।  
 हस्ति यूथ दूरे टले दुर्घर सिंह मियाल ॥४८॥  
 चोर तणा मय चूरुवे, त्रिप अमृत उडकार ।  
 विषधरनो त्रिप उत्तरे, मग्रामे जय जयकार ॥४९॥  
 रोग सोग दारिद्र दुख, दोहग दूर पलाय ।  
 परमेश्वर श्री पार्श्वनो, महिमा मत्र जपाय ॥५०॥

●  
 ॥ ढाल ॥

ऋतुवानी चाल

उ जितु उ जितुं उज उपशम धरी ।

ॐ ह्रीं श्री श्री पार्श्व अक्षर जपते ।

भूतने प्रेत भौटिंग व्यंतर सुरा ।

उपशमे वार इक्कीस गुणंते ॥५१॥

दुधर्घरां रोग सोगा, जरा जंतुने ।

ताव एकांतरा दुत्तपंते ।

गर्भ बंधन व्रणं सर्प विच्छू विपं ।

चालिकां वाल मेवा भखंते ॥५२॥

साइणी डाइणी रोहणी रंकणी ।

छोटका मोटका दोष हुंते ॥

दाढ उंदर तणी कोल नोला तणी ।

श्वान सीयाल विकराल दंते ॥५३॥

धरणेंद्र पन्नावती समर शोभावती ।

चाट आघाट अटवी अटंते ।

लखमी लोंदु मिले सुजस बेला उले ।

सयल आशा फले मन हसंते ॥५४॥

अष्ट महाभय हरे कान पीडा टले ।

ऊतरे खल सीसग मणंते ।

चदत वर प्रीतिशुं प्रीतिविमल प्रभु ।

श्री पास जिण नाम अभिराम मंते ॥



॥ कलश ॥

तपगच्छ नायक सुखदाया श्री विजय सेन खरीरररो ।  
 तमपाट उदयाचले उदयो विजयदेव सुहकरो ॥  
 हम धुणयो गोडी पास जिनरर प्रीतिरिमल जयकरो ।  
 भणे गणे मरिक्क शुद्ध भावे तम घर मंगल जयकरो ॥५६॥

जिन विव स्थापन का स्तवन

भरतादिके उद्धारज , कीधो, शत्रु जय मोक्षर ।  
 मोनातणा जेणे देहरा करगव्या, रत्न तणा विव स्थाप्या ।  
 हो कमति का जिन प्रतिमा उथापी ए जिन वचने थापी ॥१॥  
 चीर पछी वंसे नेवु वरसे, मप्रतिराय सुजाण ।  
 मरा लास प्रमाद कराव्या, सत्रा क्रोड विव स्थाप्या जाणी ।२॥  
 द्रौपदीए जिन प्रतिमा पुजी खत्रमा माख टहराणी ।  
 उठे अगे तेरी रे भाख्यु , गणधर पुरे माखी, हो कुमति ॥३॥  
 पत्र नरसे त्राणु वरसे, विमल मत्रीररर जेह ।  
 आयु तगा जेणे देहरा करगव्या, छ हजार विव स्थाप्या तेह ।४॥  
 मरत अगिअर नत्राणु धरसे, राजा कुमारपाल ।  
 पांच हजार प्रामाद करगव्या, मान हजार विव स्थाप्या ॥५॥

संवत् वार पंचाणुं वरसे, वस्तुपाल तेजपाल ।  
 पांच हजार प्रासाद कराव्यां, अगिआर हजार विंव स्थाप्या ।६।  
 संवत् वार व्होंतेर वरसे, संघवी धन्नो जेह ।  
 राणकपुर जेणे देहरा कराव्या, क्रोड नवाणुं द्रव्य खरच्या ॥७॥  
 संवत् वार एकोतेर वरसे, समरोशा रंग शेठ ।  
 उद्धार पंदरमो शेत्रुं जय कीधो, अगिआर लाख द्रव्य खरच्यो ।८।  
 संवत् पनर सत्यासी वरशे, दादशाह ने वारे ।  
 उद्धार सोलमो शेत्रुं जे कीधो करमा शाहे जस लीधो ॥९॥  
 ए जिन प्रतिमा जिनवर सरखी, पुजो त्रिविध तुमे प्राणी ।  
 जिन प्रतिमामां संदेह न राखो, वाचक जसनी वाणी ।  
 हो कुमति कां जिन प्रतिमा उथापी ए जिन वचने थापी ।१०।



## सिद्धाचल जी का स्तवन

शेत्रुंजा गढना वासी रे, मुजरो मानजोरे ।  
 सेवकनी सुणी वातो रे, दिल्लमां धारजो रे ॥  
 प्रभु में दीठो तुम देदार ।  
 आज मुने उपन्यो हरख अपार ॥  
 साहिवानी सेवा रे, भवदुख भांजशे रे ।  
 साहिवानी सेवा रे, शिवसुख आपशे रे ॥१॥

एरु अरज अमारी रे दिल मा धारजो रे ।  
 चोराणी लास फेरा रे, दूर निवारजो रे ॥  
 प्रभु मने दुर्गति पडतो रास ।  
 प्रभु मने दरिशण वहेलु दास ॥२॥  
 दोलत सवाई रे सोरठ देशनी रे ।  
 बलिहारी हुं जाउ रे प्रभु तारा वेशनी रे ।  
 प्रभु तारु रुहु दीटुं रूप ।  
 मोह्या सुर नर वृट्ने भूप ॥सा० ॥३॥  
 तीरथ कोड नहिं रे, जेत्रु जा सारसुं रे ।  
 प्रमचन पेखीरे कीपुं में तो पारसुं रे ॥  
 ऋपमने जोड जोड हरसे जेह ।  
 त्रिभुवन लीला पामे तेह, साहिवा ॥४॥  
 मनोमन मागु रे, प्रभु तारी सेवना रे ।  
 भापठ मागी रे जगमा जीवना रे ॥  
 प्रभु मारा पुरो मनना कोड ।  
 इम कहे उदय रतन कर जोड ॥५॥





## सामान्य स्तवन

जीव जीवन प्रभु म्हारा, अबोलडां शानां लीधा छे राज ।  
 तमे अमारा असे तमारा, वास निगोद मां रहेता ॥  
 काल अनंत स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करता ।  
 वादर स्थावरमां वेहु आपण, काल असंख्य निर्गमता ॥१॥  
 विकलोन्द्रिमाँ काल संख्याता, विसर्या नवि विसरता ।  
 नरक स्थाने रखा बहु साथे, तिहां पण वेहु दुख सहता ॥२॥  
 परमाधामी सनमुख आपण, टग टग नजरे जोता ।  
 देवना भवमां एक विमाने, देवना सुख अनुभवता ॥३॥  
 एकण पासे देव शय्यामां, थेइ थेइ नाटक सुणता ।  
 तिहां पण तमे अने असे वेहु साथे, जिन जन्म महंतसव करता ॥४॥  
 तिर्यच गतिमा सुख दुख अनुभवता, तिहां पण संग चलंता ।  
 एक दिन समवसरण मां आपण, जिनगुण अमृत पीता ॥५॥  
 एक दिन तमे अने असे वेहु साथे, वेलडी ए वलगीने फरता ।  
 एक दिन बालपणामाँ आपण, गेडी दडे नित्य रमता ॥६॥  
 तमे असे वेहु सिद्ध स्वरूपी, एवी कथा नित्य करता ।  
 एक कुल गोत्र एक ठेकाणे, एकज थालीमा जमता ॥७॥  
 एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर सेवा मारी करता ।  
 आज तो आप थया जगठाकोर, सिद्धि बधू ना पनोत ॥८॥

काल अनंतनो स्नेह विमारी, काम कीधा मन गमता ।  
 हवे अतर क्रिम भीधु प्रभुजी, चौदराज जड पहोता ॥६॥  
 दीप विजय कविराज प्रभुजी, जगतारण जग नेता ।  
 निज सेरक ने यशपद दीजे, अन्नत गुण गुणवता ॥१०॥



## महावीर का स्तवन

विश्लाना जाया रे, महावीर सहाये आवजो जी ।  
 नहीं आवो तो थासे सेरकना वेहाल ॥१॥  
 दैत्य महा मोहरे व्हाला लाग्यो पीडवा रे ।  
 दीघां दुख रुहेतां न आवे पार ॥२॥  
 कामने अज्ञाने रे, मत्ता निज वापरी जी ।  
 बाले क्रोध वडी घडी क्षण माहि ॥३॥  
 पन्य पासड जाले रे वींटायो छु वेगथी रे ।  
 निरार निप धरनी लागी रे चोट ॥४॥  
 पचम काल पूरो रे, जम जेघो वेसीयो जी ।  
 सूजे नहिं धर्मभारगनी रे रीत ॥५॥  
 गाडो वेलो तारो रे, सेरक व्हाला मानी नेजी ।  
 तागे तारो भवमागरनी रे तीर ॥६॥

टलवलतो तारो व्हाला रे, सेवक हाथ भालीनेजी ।  
 नहीं तारो तो जाशे तमारी रे लाज ।७।  
 तुहिं तुहिं समरुं रे दुखीना वेली आवजो जी ।  
 शरणुं एक बुद्धिसागर ने छे तुज ।८।



## महावीर स्वामी का स्तवन

मारी नाड तमारे हाथे प्रभु संभालजो रे ।  
 प्यारा पोतानो जाणी ने प्रभु पद आपजो रे ॥  
 पथ्या पथ्य नहीं समजातुं दुःख सदैव रहे उभरातुं ।  
 मन हशे शुं थयुं नाथ निहालजो रे ॥१॥  
 अनादि वैद्य तमे छो साचा, कोई उपाय विषे नहीं काचा ।  
 दिवस रखा छे आछा वहेला आवजो रे ॥२॥  
 सिद्ध प्रभुजी हवे शुं थाशे, चेतन रायनो गढ़ घेरासे ।  
 लाज तमारी जाशे प्रभुजी निहालजो रे ॥३॥  
 वीर प्रभुजी हजु शुं विचारो, बाजी हाथ छतां हुं हार्यो ।  
 महा मुकारो नदवर मारो टालजो रे ॥४॥  
 शो अपराध थयो छे स्वामी पूछु छुं प्रभुजी शिरनामी ।

अन्तरयामी अति अन्तर उमराय छे ।  
 हठ लई वेठा छो जिनराज हवे हृद थाय छे रे ॥५॥  
 परम प्रभु जन्म मलेलो मागे निष्फल जाय छे रे ।  
 छे भगवान मने भत्र भारे, आप पिना नहीं कोई उगारे ।  
 आ ससारनी अध वच ब्रह्माण तणाय छे रे ॥६॥  
 घणा घणानी वारे धाया आसेरुना टाणे संताया ।  
 प्रभुजी न करशो माग नयन उमराय छे रे ॥७॥  
 चमावन्त बहु कठिन न थाशो, दयावन्त बहु दूर न जाशो ।  
 करुणामृत पामो जीवन जाय छे रे ॥८॥  
 शान्त दान्त बली अतिय कृपालु ।  
 न्याय वृद्धि गुरु कपूर दयालु ॥  
 परम गुंचेला पुन्यने पार उतारशो रे ॥९॥



## ॥ स्तवन ॥

नामलजो मुनि सयम रागे उपगम श्रेणी चढियारे ।  
 मातावेदनी बध करीने, श्रेणी थकी ते पढियारे ॥मां. ॥८॥  
 माउं भगवई छट तप चाकी, मात लगायु ओछे रे ।  
 मरारिय गिद्धे मुनि पहोना, पूर्णावृ नमि ओछे रे ॥मां. ॥१॥

शय्यामां पोढ्या नित्य रहेवे, शिव मारग विसामो रे ।  
 निर्मल अवधि नाणे जाणे, केवलि मन परिणामो रे ॥सां. ॥२॥  
 ते शय्या उपर चंद्रवे, भूमखडे छे मोती रे ।  
 विचलुं मोती चोसठ मणनुं, भगमग जालिम ज्योति रे ॥सां॥३॥  
 वत्रीश मणना चउ पाखलिये शोल मणां अड सुणियारे ।  
 आठ मणा सोलश मुक्ता फल, तिम वत्रीश चउ मणियारे ॥सां. ॥४॥  
 दो मण केरा चोसठ मोती, इगसय अडवीश मणियां रे ।  
 दो सयणे वलि त्रेपन मोती, सर्व थईने मलियां रे ॥सां. ॥५॥  
 ए सचला विचलां मोतीशुं, आमले वायु योगे रे ।  
 राग-रागिणी नाटक प्रगटे, लवसत्तम सुर भोगे रे ॥सां. ॥६॥  
 भूख तरस छीपे रस लीना, सुर सागर तेत्रीशुरे ।  
 साता लहेरमां क्षण २ समरे वीर विजय जगदीश रे ॥सां. ॥७॥



## ॥ अष्टमी का स्तवन ॥

आठम जिन वन्दन करिये, आठम तप विधि आदरिये ।  
 निज आठ परम गुण वरिये, आठम तप विधि आदरिये ॥टेर॥  
 आठ कर्म कलङ्क निवारे, आठ मङ्गल घर विस्तारे ।  
 आठ सिद्धि अनुपम भरिये, आठम तप ॥ १ ॥

शठ आठ महा मद टारी अध्यात्म रूप विचारी ।  
 पूजा आठ प्रकार से करिये, आठम ॥ २ ॥  
 तप आत्मबल उपजावे, मोहराजका ताप मिटावे ।  
 तप उपशम युत चित धरिये, आठम तप ॥ ३ ॥  
 शुभ योग अचक्र धारी निज आत्म कर अत्रिकारी ।  
 जिन आज्ञाको अनुसरिये, आठम तप ॥ ४ ॥  
 धर्म शुभल सुध्यान के आठ, भेद ध्यावो सदा होय ठाठ ।  
 आर्त रौद्र कुध्यान न करिये, आठम तप ॥ ५ ॥  
 देवदत्त गुण मम्मारा, प्रतिक्रमण निना अतिचारा ।  
 शिव साधन पन्थ विहरिये, आठम तप ॥ ६ ॥  
 पट साखे कर पचपाणा चढिये क्रमशः गुणठाणा ।  
 ब्रह्मचय सुगुण आचरिये, आठम तप ॥ ७ ॥  
 आठ मास करो आठ वर्ष, शुध भाव सहित तप हर्ष ।  
 सुन्दर शिव रमणी करिये, आठम तप ॥ ८ ॥  
 पूरण तप पुण्य विलामा चटते चित अति उल्लासा ।  
 उद्यापन उत्सव करियें ॥ आठम तप ॥ ९ ॥  
 सुग मागर श्री भगवाना, हारिपूज्य सु पुण्य प्रधाना ।  
 पद पर नहीं मोह से डरिये, ॥ आठम तप ॥ १० ॥

तप निर्मलता गुण हेतु, भवसागर तारक सेतु ।  
कीरति सुकवीन्द्र उचरियें, आठम तप ॥११॥



### अष्टापद तीर्थ स्तवन

तीरथ अष्टापद नित्य नमिये, जिहाँ जिनवर चौबीस जी ।  
मणिमय बिम्ब भराव्या भरते, ते वन्दू निशदीश जी ॥  
निज निज देह प्रमाणे मूर्ति, दीठे मनडूँ मोहे जी ।  
चत्तारि अड्ड दस दौय इणिपरे, जिन चौबीसे सोहे जी ॥१॥  
धत्तीश कोशनो पर्वत उँचो, आठ तिहां पावडीया जी ।  
एके को चऊ कोश प्रमाणे, नवि जाये कोई चढिया जी ॥२॥  
गौतम स्वामी चढियां लब्धे, वान्द्या जिन चौबीश जी ।  
जग चिंतामणी स्तवन त्यां कीधूँ पूरी मननी जगीश जी ।३॥  
तद्भव मोक्षगामी जे मानव, ए तीरथ ने वान्दे जी ।  
जंघा विद्या चारण वान्दे, ते तो लब्धि प्रसादे जी ॥४॥  
साठ सहस सुत सागर चक्रिना, ए तीरथ सेवंता जी ।  
वारमा देवल्लोके ते पहुंता, लहेशे सुकख अनन्ता जी ॥५॥  
कञ्चनमय प्रसाद इहां छे, वन्दन करवा जोग जी ।  
ए अधिकार छे आवश्यक सूत्रे, जो जो देई उपयोग जी ।६॥

जिहों आदेश्वरजी मुक्ते पोहोता, अविचल तीरथ एह जी ।  
जगवन्त सागर शिष्य पयपे, जिनेन्द्र बधते नेह जी ॥७॥



### पर्युपण पर्व की सभाय

पर्व पञ्चपण आनियारे लाल, कीजे धणो धर्म ध्यान रे ।  
भक्ति जन आरम सकल निवारिये रे लाल ॥  
जीयों ने दीजे अभयदान रे, भक्ति पर्व ॥ टेर ॥  
सबला मामा माही सिरे रे लाल, भादरवो माम सुमासरे ।  
तिण माहे आठ दिन रुवडा रे, कीजे मुकृत उल्लाम रे ॥१॥  
खाडण पीसण गारना रे, न्हाणण घोणण जेह रे ।  
एहना आरंभ टालिये रे, वाञ्छो सुख अछे हरे ॥२॥  
पुस्तक वामी न राखिये रे, उच्छ्रय करिये अनेक रे ।  
घर मारु तित्त वारो रे, हियडे आँणी तिवेक रे ॥३॥  
पूजी अरुची आखीये रे, श्री सदगुरु जीनी पाम रे ।  
दोल दमामा नफेरिये रे, मंगलिक गानो माम रे ॥४॥  
श्रीकल मगर मोपारियां रे, दीजे माहमी हाथ रे ।  
नाम अनन्तो बतावियो रे, श्रीमुख त्रिभुवन नाथ रे ॥५॥



नव वाचना कल्पसूत्रनी रे, सांभलो सूधे भाव रे ।  
 साहमी वच्छल कीजिये रे, भव जल तरवा नाव रे ॥६॥  
 चित्त कर चैत्य जुहारिये रे, पूजा सत्तर प्रकार रे ।  
 अंग पूजा सदगुरू तणी रे, कीजे हर्ष अपार रे ॥७॥  
 जीवों ने अमर पलाविये रे, तिण्ठी शिव सुख होय रे ।  
 दान संवत्सरी दीजिये रे, इण समो पर्व न कोय रे ॥८॥  
 काउस्सग करीने सांभलो रे, आगम आपणे कान रे ।  
 छठ अट्टम तपस्या करो रे, कीजे उज्वल ध्यान रे ॥९॥  
 इण विध जे आराधस्ये रे, ते लहेसे शिव सुख कोड रे ।  
 मुक्ति मंदिर में मालसे रे, मति हंस नमें कर जोड़ रे ॥१०॥

★

## पार्श्वनाथ का स्तवन

समेत शिखर मुझने वाहलुं लागे छे ।

प्रगट वसे छे वहालो पार्श्व जिनन्द सखी ।१।

आटलो संदेशो जइने प्रभुजी ने केजे ।

भवरूपी दरियामांथी क्यारे जालशो हाथ सखी ।२।

क्रोध अगनिनी ज्वाला मुजने बाले छे ।

कृपा करिने क्यारे करशो वरसाद सखी ।३।

काम स्वरूपी हस्ति रुचटी नाखे छे ।

शठता रूपी मिह करे छे साठ मखी ।४।

सृष्टि न जाणु हु तो रान भयंकर ।

नजरे न आवे प्यारी प्रेमशु पथ मखी ।५।

हुं तो दामी प्यारा पार्श्व जिनन्दनी ।

सेजे सलुणो मारो कोडिलो रुथ सखी ।६।

हिमालु लोक ज्या त्यां शोर करे छे ।

आलम अजगर केरो भारे छे त्राम सखी ॥७॥

कृ हु व कवीलो मांचा शियाल वाघ घेरी ।

रहा छे मुजने आवी चौपाम सखी ॥८॥

अन्तरना वेली मुजने म्यारे उगारशो ।

व्हालु लागे छे व्हाला आपनु धाम सखी ।९।

करुणाना वेली मने क्यारे उगारशो ।

हैयामा हवे मने नयी कई हाम मखी ॥१०॥

ममेत गिपुर वासी व्हाला पार्श्व जिणदजी ।

गामा माताना रुडा लाडीला नद मखी ॥११॥

अमिरस भरती मूर्ति प्यारी जागे छे ।

कुमुद ने व्हालो जेम शरदनो चढ मखी ।१२।

नटडीनी दोर उपर दृष्टि छे जेवी ।

एवी बनी छे प्रभुनी प्रीत सखी ।१३।

अजित सागर सूरि प्रीते बोले छे ।

प्रभुने संभालवानी रुडी छे रीत सखी ।१४।



## चिन्तामणि पार्श्वनाथ का स्तवन

श्री चिन्तामणि पार्श्वजी दादा वात सुणो एक मोरी रे ।

म्हारा मनना मनोरथ पुरशो हुं तो भक्ति न छोडुं तोरी रे ।१।

माहरी खिजमतमां खामी नहीं, ताहरे खोट न कांइ खजाने रे ।

हवे देवानी शी ढील छे ? कहेवुं ते कहीअे छाने रे ॥२॥

सैं उरण सवि पृथवीकरी, धन वरसी वरसी—दाने रे ।

माहरी बेला शुं एहवा दीअो वांछित वानो वाने रे ॥३॥

हुं तो केड न छोडुं ताहरी, आप्या विण शिवसुख स्वामी रे ।

मूरख ते ओछो मानसे चिन्तामणि करयल पामी रे ॥४॥

मत कहेश्यो तुज कर्म नथी कर्म छे तो तुं पाम्यो रे ।

मुज सरीखा कीधा मोटका, कहो तेणे कांइ तुज धाम्योरे ।५।

काल स्वभाव भवितव्यता ते मधला तारा दासो रे ।

मुख्य हेतु तुं मोचनो, ए मुजने सबल विश्वासो रे ॥६॥

अमे भक्ते मुक्तिने खेचसुं, जिम लांहने चमक पापाणो रे ।  
 तुमे हेजे हमीने देखशो, कहेगो सेवरु छे मपडाणो रे ॥७॥  
 भक्ति आराध्या फल दीये श्री चितामणी पापाणो रे ।  
 उली अधिक काड कहाणशो ए भद्रक भक्ति ते जाणो रे ॥८॥  
 गलक ते जिम तिम बोलतो करे लाड तातनी आगे रे ।  
 ते तेहशुं वाछित पूरवे वनी आवे सधलुं रागे रे ॥९॥  
 मारे वननारु ते बन्युं ज छे हुतो लोफने वात शीखावु रे ।  
 वाचक जम रुहे माहिमा ए गीने तुम गुण गावुं रे ॥१०॥



### सुविधि नाथ का स्तवन

सुविधि जिनेश्वर साहिव सेवो, आपे शिवपुर मेगो ।  
 मदा घट अन्तरजामी प्रेम लायीने प्रभु पाय पडुं छु ॥  
 दुखडा मारा रडुं छु, सदा घट ॥१॥  
 अष्ट प्रकारी हु तो पुजा रचावुं भावे भावना भावुं ।  
 बोलो प्रभु जरा प्रेम करीने, दयानी दृष्टि करीने ॥२॥  
 गाने माटे मने तारो ना प्यामी, कहेगो जो गुणनी छे सामी ।  
 प्रेम धरीने ते गुणो ने आपो, जेथी जाय बलापो, मदा ॥३॥  
 कहेगो जो योग्यता नथी तारामां, आपो योग्यता मारा मा ।  
 कहेगो समये तुज योग्यता आवे, आपो समय ते भावे ॥४॥

कहेशो के दील नथी मुक्तिनुं साचुं, ते पण भावथी याचुं ।  
 कहेशो जो ज्ञान नथी तुज मारुं, तेथी हुं केम करी तारुं ॥५॥  
 ते पण ज्ञान घडीमां आपो शाने माटे तमे नापो ।  
 कहेशो के श्रद्धा नथी तुज साची, श्रद्धा तेवी में याची ॥६॥  
 मोडा वहला शिव तमे पमाडो, शीदने वार लगाडो ।  
 श्वासो श्वास भक्ति जो जागे, वोल्या प्रभु गुण रागे ॥७॥  
 अन्तरजामीनी भक्ति तो करशुं तन्मय थइने विचरशुं ।  
 अनुभव नयणे अगम पंथ जोशुं, पोतानी ऋद्धि कमाशुं ॥८॥  
 अजरामर अज जे अविनाशी, सुख अनन्ता विलासी ।  
 नाम रूप नहीं निर्मल ज्ञानी, बुद्धिसागर सेवो जाणी ॥  
 सदा घट अन्तर जामी ॥९॥



### नेम राजुलना बारमासा

सखी तोरण आवी कंत, गया निज मंदिरे ।  
 जे नजर मेलावो कीध, ते मुज सांभरे ॥  
 घर लावी भाली हाथ हूं हेटे उतरी ।  
 पण करी वरघोडो, आत छबीलो छेत्री ॥

मधु पिंडु ममो संमार, मुंभाणा महालतां ।  
 मंमारे सुखी अणगार, जिनेश्वर बोलता ॥१॥  
 मखी शा रे ऋहुं अणटात, वियोगी दुखी तणा ।  
 दुनीया मा दुर्जन लोऊ, हांसी करे घणा ॥  
 मीठी लागे परनी वात, अगन पगना लहे ।  
 केना मोम चूवे केना नेर, ते मुख ना कहे ॥२॥  
 मखी श्रावण छट्टे मेली, महीयरीया तले ।  
 छट्टी वारधि वेल वाली नहीं वले ।  
 काम वरती फरती धरती, भरती वादली ।  
 गयो श्रावण माम निराम, गजूल एकली ॥३॥  
 मयी मादरवे भरवार, पिना केम रीभ्रीए ।  
 पिरधानल उटी जाल, धुंवा पिण ठाजीए ॥  
 फल पास्यां वर्षण, शाल न गाडए गेलीए ।  
 दोत दुग्ना दहाटा वे चार, आया टेली ए ॥४॥  
 केन आगो मासे मंत्र, गु वाली मुंसुटी ।  
 गया दश रे दशोराना दिन, दिवाली दृंफडी ।  
 मयी नापण री ए नाप, मग्म नपि मोडना ।  
 गग नानने नाटक शाल, पिरु रिगा पेयागा ॥५॥

सखि कार्तिके केली करे, नरनारी वागमां ।  
 जेणे मासे टबुके टाढ, कुमारी रागमां ॥  
 जेना वालम गया विदेश, संदेशा मोकले ।  
 मारे गाम घणी घरवट, वसे पियु वेगले ॥६॥  
 सखी मागशीरे मागणना, मनोरथ पूरता ।  
 मने मेली वाले वेश, चतुर गुण चूरता ।  
 सखी कोइ रे संदेशो लेई, आपी जाय मुज कने ।  
 तेने देऊं रे मोतिन को हार, अमूलख भूषणो ॥७॥  
 पोष मासे पोतानी छंडी, शीयाले चालीया ।  
 वालेसर विणा वेरण रात, सूनां महेल मालीया ॥  
 जाय जोवनीयुं भरपूर, अरण्य जेम मालती ।  
 जेना पियु रे गया परदेश, दुखे दिन काढती ॥८॥  
 पियु महा मासे मत जावो रे, हिमालो हालशे ।  
 रयणी एक वरस समान, वियोगी सालशे ।  
 लंकाथी सीता षट मासे, राम घर लावीया ॥  
 एवा वही गया साते मास, प्रीतम् घेर न आवीया ॥९॥  
 हलकारो हसंत वसंत आकाशथी उतर्यो ।  
 मानुं फागण सुर नर राय मलीने नोतर्यो ॥  
 होली खेले गोपी गोविंद, हम घर आवती ।  
 अति केशुआं भंपापात, वियोगे मालती ॥१०॥

सखी चैत रे चित्त थकी, विछोही वालमे ।  
 आवा दुसना दहाडा किम जाय, उगे रति आथमे ।  
 आस मींचाणे मली जाय रे, उवाडे वेगलो ।  
 शमनीयो मिद्ध स्वरूप, सुपनमा आगलो ॥११॥  
 रमे हंम युगल शुक मोर, चकोर सरोवरे ।  
 निज नाथ सहियरने माथ, सुखे रमे वन घरे ।  
 मुस मंजरी आवा डाले, कोयल टटुकती ।  
 मसी वातमा वीत्यो वसत, रोवे राजिमती ॥१२॥  
 मसी वैशाखे वन माहे रे, हींचोला हींचता ।  
 कदली घर फूल गीळाय, खुशीथी नाचता ॥  
 सरोवर जल कमले केल, करता राजनी ।  
 मृज मरीची छत्रीली नार, लग्न लेड लाजनी ॥१३॥  
 जेठ मासे जुलमना ताप, तपती भूतला ।  
 आठ मासुनो मेव नियोग, पले तरु फूतला ॥  
 पशु परी विशामा खाय रे, गीतल छाया तरु ।  
 मारे पियु विना नहीं विमराम, नार्तीने नोतरु ॥१४॥  
 मसी आनीयो माम आपाढ, मरे जल बादली ।  
 गरजाखे टटुके मोर, भट्टुके विजली ॥



वरसादे वसुधा नव पल्लव, हरीआं धरे ।  
 नदी नाले भरीआं नीर, वपैयो पियु पियु करे ॥१५॥  
 चोमासे करी तरुमाला, रमतां पंखीआं ।  
 एम वीत्या वारे मास प्रीतम घेर न आत्रीया ॥  
 श्रावण सुदि छट्टे स्वामी, गया सहस्रावने ।  
 लेइ संयम केवली थाय, दिन पंचावने ॥१६॥  
 नेम मुखयी राजुल नव भव, नेह निहालती ।  
 वैरागे सुधारस लीन, सदा मन वालती ॥  
 कालांतरे नेम दयाल, तिहां देशना दीये ।  
 प्रभु हाथ साहेली साथ, राजुल दीक्षा लीए ॥१७॥  
 लइ केवलकरी परिसाटन बेहु मुगते गया ।  
 बनी प्रीत ते सादि अनंत, भाग्ये भेलां थयां ॥  
 शुभ वीर विजय सुख लील, मगन विशेषता ।  
 लोक नालनी नाटक शाला, समयमां देखता ॥१८॥



